CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment, Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सही मंजिल

सादर भेंट स्वा. विमलानंद सरस्वती जी को
14.7.99
आरा

कहानीकार

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

प्रकाशक

मधु प्रकाशन, नोनार, भोजपुर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सही मंजिल

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

कहानीकार - चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

प्रकाशन - मधु प्रकाशन, नोनार, भोजपुर

मूल्य - बीस रुपये

मुद्रक - कल्पना प्रिंटर्स, जगन्नाथपुर, प० सिंहभूम

संस्करण - पहिला १९९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिक्रिया

बड़प्पन के कहानियन के विभिन्न पत्रिकन में पढ़ले रहीं। बाकिर हुनी के पुस्तकाकार पाके के अउर खुशी भइल। कहानियन में अभिव्यक्त र्थपरक भावना, घटनाचक्र के क्रमबद्धता आ अंत प्रभावकारी बा। र-बार पढ़नी आ खो गइनी-ओहनी में।

डा० रामसेवक विकल
४-९-९१

बड़प्पन पढ़ गइनी। सभ कहानी बहुत सुंदर लागल। एह सभ यथार्थ नजर आइल। जीवन का बहुत निकट के तसवीर एह में उरेहल इल बाटे। पढ़त अइसन बुझात बाटे कि कवनो आँख का सोझा घटल टना ह। एह में तीन कहानी "बड़प्पन" "अब ना होई" आ कैंट मे मंदाकिनी तक एह तीनों में बड़प्पन त दिल के छुए वाला बाटे। "अब ा होई" के कथानक बहुत सटीक बाटे। तीसरकी कहानी में भोजपुरिया र उजागर भइल बाटे। मुहावरादार आ सुगम भाषा एह सभ के एगो लग सुघराई बाटे। अइसन कहानियन लागि बहुत साधुवाद।

पं० गणेश चौबे
५-१०-९१

बड़प्पन कहानी संग्रह सामने बा। खाली बड़प्पन कहानी ंतरतम के छू रहल बीया। ढेर लोग के पढ़वलीं। जेही पढ़ल प्रशंसा इल।

महेश्वराचार्य
२६-४-९३

'लहार' में छपल राउर 'चीख' कहानी हमरा के बहुते प्रभावित इले बा। मुग्ध बानी अइसन उत्कृष्ट कहानी पढ़ि के। परिशिष्टित, मार्जित, परिस्कृत राउर भाषा भोजपुरी के मानक भाषा के वस्तुत: एगो ांत बा। बहुत मार्मिक कहानी बा, जुल्म के विरोध में आग धधका वे के बारुदी चिनगारी बा आ दिल दिमाग में लहर पैदा कर देत बिया।

ह० उमापति पांडेय
चुरामनपुर, बक्सर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रमांक	कहानी	पृष्ठ संख्या
१-	नदी के किनारा	१
२-	कटहर	४
३-	धोत्रियापाट	१०
४-	को बड़ छोट	१४
५-	ई का ह	१६
६-	धूर	२४
७-	भइया	२६
८-	बड़े भाई	३२
९-	एक कदम नजदीक	३७
१०-	साधु	४२
११-	किरदार	५०
१२-	छू मंतर	५२
१३-	अउर इहो	५५
१४-	सही खातिर गलत	६५
१५-	देशद्रोही	७३
१६-	सही मंजिल	७६
१७-	चीख	८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदी के किनारा

कुआर के धप धप उजर सारी अइसन, बकुला के पाँख अइसन अँजोरिया फइलल रहे। खेतन में धान के पौधा लहरात रहनस। हवा गते गते कवनो गज गामिनी अस चलत रहे। सिहरावन लागत रहे। नदी के धार मुड़ी गड़ले सरकत चल जात रहे। मछरीन के उछलला-कुदला के आवाज फइलल सान्ति के सारी के रह रह फाड़ देत रहे। कबो कबो जल से ऊपर आके चानी अस चमकत रुप देखा के आँख कौंद कर लेत रहीस।

नन्दा के बुझाइल कि ओकर साइकिल भारी चल रहल बिया। हो सकेला कि हवा निकल गइल होखो। ... इहे सोच के साइकिल से उतर गइल। फुटबॉल के मैच खेल के आवत रहे। थाकल देह रहे असकत बुझाइल। बइठ के टाइर के हवा जाँचे लागल। हवा ठीक रहे। रहतब के वालू साइकिल के ना बढ़े देत रहन स।

पीठ के तरफ आवाज भइल। घुम के देखलस। देखते रह गइल। लइकी खाढ मुसकात रहे। ओकरा देह के गोराई के आगा कुआर पुरनमासी के चान के गोराई फीका लागत रहे। देह के बनावट देख के, कवनो देवी के भरम होत रहे। ऊ बरावर एह राह से आइल गइल बा। इहाँ पर मुरत काहाँ से आई? सोचते रहे कि ऊ बोलिलि "कहाँ जाइब जी?"

जी के उचारन कुछ अइसन रहे कि नन्दा के दिल लोहार के भाथी अस उठे-बइठे लागल। बुझात ना रहे कि कवना जनम के तप के फल पा रहल बा। रहता पर देखलस। साथी बढ़ गइल रहनस, केहू लउकत ना रहे। मन के सान्ति मिलल। मन बहुत बड़ स्वार्थी होला। ओहू पर अइसना समय पर।

नदी के किनारा, कुआर पुरनमासी के अँजोरिया रात, कवनो कवनों परियो से सुघर-सुन्दर लइकी के साथ, केहुओ के पागल कर सकेला। नन्दा ओकरा जी के उच्चारन पर सब बार, हजार-बार मरे खातिर मने मन तइयार हो गइल।

"हम नदी के पार चंदा गाँव में जाइब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कोइलपुर के मनु पांडे के जानत होइब। हमरा उनकरे घरे जाये के बा। औरत के जात। नया उमिर। रात के समय। संग ना साथी। डर लागत बा। कसहूं हिम्मत कर के बढ़त अइनी। अब अउर साहस नइखे होत। का उनका घर तक पहुंचा देब?"

नन्दा पांडे जी के जानत रहे। नन्दा का ज्वार-पथार के सभे उनका के बढ़िया से जानेला। नामी वैद्य, ओझा सलाहकार, कर्मकांडी ब्रहनम पहलवान जइसन देंह। एक बार उगो डाइन पीपर के पेड़ लेके जात रहे। आवाज भइल। पांडे जी उठते बुझ गइलन। अइसन फूंक मरलन कि पेड़ जहाँ के तहाँ रुक गइल। आजो ऊ पीपर के पेड़ कोइलपुर के पुरब में देखल जा सकेला। सायदे केहू होई जेकर कुछ ना कुछ काम ऊ ना कइले होइहें।

आदिमी के मन में संग्रह करे के भावना हमेसा रहेला। जवना चीज खातिर ऊ छछनत रहेला ओकरो के पवला के बाद संजो के राख देला मौका पर काम लेवे खातिर। नन्दा सपनों में ना सोच सकत रहे कि परी के लजावे वाली अइसन लइकी से ओकरा भेंट होई। ओहू में अकेला में। ओकरा दिल में सब सब पटाका के दूटला के थमाका गूंजत रहे। कुछ कहे के हिम्मत ना होत रहे।

"हमरा त ओहगाँव से होइये के जाये के बा। साथ ले जाये में कवनो तरह के हरज के बात उठावले बेकार बा। पांडे जी के के ना जाने? चलीं आई।"

नन्दा हाथ में पकड़ के साइकिल बढ़वलस। सोचलस कि ऊ पीछे-पीछे आई। लइकिया बढ़ल आ साइकिल के हैंडिल पकड़ लेलस।

"काहे पैदल चलत बानी? चढ़ के चलीं। पीछे कैरियर नइखे त का भइल? आगे में छड़ पर बइठ रहब।"

नन्दा के लइकिया के ढीठाई देख के आउर ओकरा मुंह से कैरियर सबद सुन के लागल जइसे ऊ कवनो फिल्म के हीरोइन होखे। बम्बई से भटक के एने चल आइल होखे। चाहे सूटिंग में आइल होई। पांडे जी के पास कवनो मदद-मोसविरा खातिर जात होई। ऊ साइकिल खड़ा कर के, बिना आगे-पीछे सोचले, ओकरा के आगा में बइठा लेलस। अन्धा का चाहे, आँख। ओकरा मन में हजारन दिवाली के प्रकास भर गइल। साइकिल डुगुरा के चढ़ल। गिर गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना के अपनहीं गरिआवे लागल। सरम के मारे बुझात रहे कि धरती में सभा जाईं।... लइकिया का सोचत होई ... अपना मरदूमी के ऊपर बाड़ा लानत बुझलहिस। झट से उठल। बिना कुछ बोलले ओकरा के साइकिल पर चएवलस। साइकिल के डुगुरा के चढ़े लागल। फिर धस से नीचे!

साइकिल हाथ से छूट के फरका फेंका गइलि। लइकिया खाढ़ के खाढ़े रहे। ओकर माथा ठनकल। देखलस। लइकिया के गोड़ पाँछ मुँहे घुमल रहनस। देह मे कैटले खून ना।

ऊ बेहोस हो गइल।

नन्दा के साथी ओकरा के ना आवत देख के, साइकिल के पनछोपा राख के हाथ-मुँह धोवे लगलनस। साँझ के समय वा। फर-फरागित होत होई। .... बइठके गपलड़ावे लगलनस।

नन्दा के आवाज कान में पड़ल। सब के सब दउड़ पड़लनस।

नन्दा बालू में गिरल रहे। साइ-किल अलग रहे। बालू के कन ओकरा मुँह-नाक में नागिन अस सरासर घुसल चल जात रहनस। डर के सब भगलेस।

एगो तनी ढेर उमिर के रहे। ओकरा भागल अनुचित बुझाइल। रूक गइल। सभन के डाँट के रोकलस।

"चक्रोह में फँसल साथी के छेड़ के भागल से अच्छा ओकरे साथ मर मिटल होइ।"

सब बहुले स। नन्ना के उठा के नदी के पनछेपा ले गइले स। फुहेरा कइलन स। ठंडा लागल। नन्दा उठ के बइठ गइल।

सभनो के चेहरा पर पाँख फइला के बइठल उदासी के उल्लू फर दे उड़ गइल।

भोजपुरी कहानियाँ : ६ : ५
मई -१९७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कटहर

जीप के आवाज सुन के ओकरा मन में भय पैदा हो गइल। कटहर तुरल बंद कर देलस

जीप आके कटहर के जरी तर खाड़ हो गइल। ऊ डाढ़ि पर बइठल रहल। अपना के छिपा ना सकल आउर ड्राइवर के इसारा करत देख उतर गइल।

डरते डरते बी० डी० ओ० के पास गइल। झुक के प्रनाम कइलस।

"केकर कटहर ह?"

"हमार।"

"तोर कइसे ह? ई गैरमजरुआ जमीन पर बा।"

"जी! हम जानत बानी। हुजुर के पास गइल रहीं। भेंट ना भइल रहे।"

"बन्दोबस्ती खातिर?"

"जी।"

"कर देव। बोल का देबे?"

"हुजुर। जे कहल जाई।"

"पचास टका देबे?"

"हुजुर। नेग़ाय कइल जाय।"

"तब कतना देबे?"

"हुजुर। जे हुकुम होइ।"

"पचीस रुपया देबे?"

"हुजुर। हम गरीब आदमी...।"

"तब का देबे?"

"हुजुर। जे कहल जाई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" दस रुपया देवे ? "

" हुजुर ! अतना लायक पेड़ नइखे । "

" तब का देवे ? "

" हुजुर । कह दिआय । "

" पाँच रुपया देवे ? "

" हुजुर । मर जाइब । अइसन मत कइल जाय । "

" तब का देवे ? बोल ना । "

" हुजुर । माई-बाप । रउरा से बाहर कइसे जाइब । "

" दू रुपया देवे ? "

" देहियो बेच के ना पाइब । लइकन के मुँह में जाब लाग जाई । अइसन मत कइल जाय । "

" तब बोल का देवे ? दू खिल्ली पान देवे । जो ले आव । "

" एह घरी पइसा नइखे । गरीब के उधार कइलीं ? "

" आफिस अइहे । कर देब । "

" प्रनाम कर के घुमल । चपरासी सब कटहर जीप में भर देले रहे । ओकर मुँह खोले खोले में भर दें जीप खुल गइल । ऊ धूर से तोपा गइल ।

ऊंच निवास नीच करतूती, जात जीप के तरफ मुँह कर के पच दे थूक देउस । गीध के अस लागल रहेलनस । मौका मिले के चाहीं । झपटत देर ना लागी । अपन ही अपना के समझावलस । पेटारही आ हसुँआ उठा के घर के तरफ चल देलस । बन्दोबस्त कइल अतना आसान बा । अमिन, कर्मचारी, किरानी, इन्सपेक्टर, बड़ा बाबू कवना कवना के ना तेल लगावे पड़ी । अउरत अउर चपरसियो आँख देखा वेला । "

संगरु चलल आवत रहन । आवत समय उनकरा पालानी में बइठल रहे । खइनी बना के देले रहन । सोचले रहे कि लवटत समय इनकरो के एगो कटहर दे देब ।

अरे भाई ! का कहीं ? बी० डी० ओ० आइल रहे, ले गइल । ऊपर से मुँह देखल कि बन्दोबस्त कर देब ।

" भाई ! बी० डी० ओ० ह त पेट्ट बाकिर जेकर खाला ओकर काम कर देला । हमहूँ उहँवे जात रहीं । हित लोग आइल बा । एक-आध गो हमहूँ ले अइतीं । "

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव में घुसते फेंकु साह के दोकान रहे। ओकरा के देख के फेंकु साह बुझ गइलन कि आज के यात्रा खराब बा। सोचले रहन, ओकरा के पेटारही आ हसँवा ले के जात देख के कि आज कटहरवा के तूरी। खरीद लेब आ खोसारी से बराबर बेच के दोबरी बना लेब।

"का हो! कटहरवा खे कइल? ओनही केहू के हाथे बेच देल ह का? अरे मरदे! तोहरे आस में बइठल रहनी हाँ।"

"बेच त देनी हँ बाकिर चइत के करारे।"

"नव नगद ना तेरह उधार! हमरे से कहित त ले लितीं। का भावे बेचल ह? घटी ना नू लागी? सोच लिह।" बुझात रहे कि ऊ कहल चाहत होखस - जाके लौटा ले आव कुछ जादहीं दे देब।

जवान बेटा के कमाई खाये के फिकिर में सब केहू रहेला बाकिर ओकरा मर गइला पर छाती पर पत्थर रखहीं के पड़ेला। फरत-फूलात बिरवाई के घड़रोज चर जा लिस त अदिमी का करेला?

"कवनो चोरा ले गइल ह का?"

"उहे भइल रहित तव कवनो बात ना रहे।"

"त का भइल?"

"बी० डी० ओ० ले के चल गइलन।"

"का सब?

"ना! जतना तुरले रहीं।"

फेंकु साह के नजर आवत पंचायत सेवक पर पड़ल। बोलल चाहत रहन बाकिर ना बोललन।

ऊ आगे बढ़ गइल।

"सब कटहरवा बी० डी० ओ० के दे देल ह? सब केहू बड़के के साथी होला। साथे रहिला बाकिर कवो एको लेंढ़ों ना देले होइहें।"

मन में अलहित कि उनकरा के चार थप्पड़ दे देवो बाकिर मन मसोस के रह गइल। "ना दादा! हम काहे के दीं। हमरा से के पूछल? अपन ही सब जीप में रखवा लेलन। "खुशामद के चासनी दे के बोलल - "तोहरा लोग के पेट में जाइत तव त कवनो बाते न रहे।"

सँउसे गाँव में कटहर के बात होत रहे। जे मिले से ही उहें बात करे। अब ओकरा बुझात रहे कि लोग ओकरा के चिढ़ा रहल बाड़न। खिस के लहर नस नस में लहरात रहे बाकिर ऊ बरदास करत गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर के ओठँघावल केवार के ठेल के भीतर घुसल। चारो लइकवा चुँटा-मॉटा अस छाप लेलनस। कटहर! कटहर!! चिल्लात रहनस। छोटकी लइकिया सभन के देखा-हिसकी दउड़ल रहे। गिर के रोवत रहे। सभनी के भोर के हटा देलेन। रोवत लइकियो के तरफ धेयान ना देलस। अँगनी में खाटी पर जा के बइठ रहल।

वरती घर में से निकसल। ओकरा के अरुअइला पीठा अस मुंह लटका के बइठल देखलस। चारो तरफ कटहर के पता ना रहे। ओकर छाती धुक-धुक करे लागल। भात ना बनवले रहे। सोचले रहे कि आज कटहर के कोवा खाइल जाई।

"काहे जी? का भइल?"

"भइल का तोहार कपार?"

"त अइसे खखुआ के काहे बोलत बानी? गइल रहीं हसुँआ लेके कटहर तुरे आ कतहूं कटहरवा देखते नइखीं।"

"तोहरा बाप के किरिया-करम रहे ओनहीं से ओनहीं भेज देनी हाँ।"

"हमार बाप के किरिया करे से रउरा का लाभ होई? हमार कर दितीं तब सलानत हो जइतीं।"

"तोहरा बाते से पेट भर जाई कि कुछ खाहूं के मिली?"

"खाना का बनल बा। हम त जानी कि आज सब केहू कटहर के कोवा खाई। कह के गइल रहीं कि कटहर पाकल बा। ले आवे जात बानी।"

छोटकी लइकिया फुफुती धर के ठुनुकत रहे। वरती उठा के गोदी में ले लेलस। चारो लइकवन के पता ना रहे। बड़का लइकवा के बहरा निकल के बोलवलस। लइकिया के देवे लागत तब ऊ कोरा से उतरवे ना करे। छछन-छछन के रोवे। निछोही धावे दू थप्पड़ देलस आ बड़का के आगा में बईठा के घर में घुस गइल।

ऊ खटिया पर लेट गइल। पतई उड़त आईल ओकरे पर गिरल। कटहर के पतई रहे। देखो त पूरब तरफ कटहर के पेड़ रहे। खाटी पर सुतली पर लउकत रहे। पतई के नोंच-नाच के फेंक देलस। खटिया के अइसना जगह ले गइल जहवाँ से पेड़वा लउकत ना रहे। ऊ कटहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के संबंध में सोचत ना चाहत बाकिर ओकरा दिमाग में कटहर रह रह के आ जात रहे।

घर में जरावन के कमपाई रहें। नया-नया पतइन के बहार के लावत-लरावत रहे। पतई हरियर-पिअर रहि्ं। घर धुंआ से भर गइल रहे। आखिन में लोर छहलात रहे। मन करत रहइस कि किरासन तेल छिरिक के जल जाय कि कुफुत मिट जाय। आज किरासिन तेल ओरा गइल रहे।

छोटकी के रोवाई रुके के नांव ना लेत रहें !

"बहरी ले ना जो। देख-देख के रोवत बिआ।"

"छोटकी के रोवला से ओकरो अनस बरत रहे। डाँट के बोलल "बाहर ले जो। थोड़ें देर में ले अइहे। खाना बना जाई तब।"

बड़का छोटकी के बले कोरा में उठा के बहरा ले जाये लागल। मुसकिल से दू कदम चलल होई कि ऊ तरना गइल। सम्हारे ना भइल। दूनो गिर गइलनस। छोटकी माथा के भरे गिरल। चिचिआ-चिचिआ के रोवे लागल।

धरती घर में से दउड़ल आइल। छोटकी के गोदी में ले के जांत लेलस। बगले में से बाती उठा के बड़का के सटसटावे लागल। बेचारा कुद कुद के रोये लागल। ओकरा से ना देखल गइल। उठ के बाती छिन लेलस। कटहर के पेड़ पर कउवा बोलत रहे। ओकरा लागल कि कटहरवा बोलत बा।

"बुढ़वा मुंडा साहब रहन तब तक एह गाँव में एको साह लोग ना रहे।"

"काहे?"

"साह लोग पहिले-पहिल आइल तब ऊ बोलवलन आ कहलन कि तू लोग जियत कउवा पकड़ के ले आव। एगो साह मुँह बाके सुत रहल। मुंढी छिट दिआइल। कउवा आके खाये लगलनस। मुँह में के मुढ़ी निकालत समय चोंच पकड़ लेलस। मुंडा साहब कहलन कि तू लोग बहुत चालाक बाड़। जे जियत कउवा पकड़ लेल ऊ काना कर सके। हम तू लोग से ना सकब। तू लोग हमार गाँव छोड़ द।"

फेंकु साह के मालूम भइल कि बी० डी० ओ० सब कटहर के गइलन तब ऊ तय कइलन कि कुछ घटा के ऊ बस में कइल जा सकेलन्। पंचायत सेवक के बात सुन के मोंछ पर ताव देलन। ओकरा के बइठा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाय पिया के पान खिअवलन, सिगरेट पियवलन। महिनो दिन ना बितल कि कटहर के पेंड़ आ अँहिजा के बीस डिसमिलगैरमजरुआ जमीन अपना नाँवे करा लेलन।

ओकरा मालूम भइल। साहु से केस मुकदिमा लड़े के ताकत ओकरा पास ना रहे। गाँव-घर के नाता से बात चलवलस।

"तोहरा से का कहीं? जान जइह कि दोकान के काम से आफिस गइल रहीं। बी० डी० ओ० बोला के कहे लगलन कि साहु ले ल। लइका-फइका बाड़सन, कामे आई। ना लेब तब कह-पारस महतो के दे दीं। तूहीं सोच कि पारस महतो के दे दितन तब तोहरा का मिलित? ऊ समय पड़ला पर एगो पत्तो ना तुरे दिते। का बिगड़ल बा? समझ कि तोहरे ह। तूहीं रखाव। तूहीं खा। जे उचित समझिह पहुँचा दिह।"

ऊ सब समझ गइल बाकिर फेंकु के पीठ बोली ओकर बोली बंद कर देलस।

भोजपुरी कहानियाँ
अगस्त, सितम्बर १९७०
बारिस, - ६ अंक ८-९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोबियापाट

छेदी सिंह उत्तर तरफ से आवत रहन जबकि ऊ ओनही ओही गली में जात रहे। छेदी ओकरा फुटलो आँखि ना भावस। पढ़ाई-लिखाई साथे भइल। ओही घड़ी केहू रहे आँख मिलानेवाले - सामना सामनी त छेदिये रहन। कवनो के बगीचा में घुस के आम तूर लिहें. केहू के खेत में से बूंट उखाड़ लिहें आ अन्हार में भागत खा कह दिहें - "चल मोहन!" आ अतना जोर से कि आवत रखवार सुन ले। नतिजा होई दोसरा दिन उनकरा घरे ओरहन पढ़ाई छोड़ला के बाद दूनो आदमी अखाड़ा धइल, बाकिर दूगो। एके गाँव दूगो अखाड़ा भइला से का भइल, एक से दोसरा जगे बात पहुँचे में देर ना लागत रहे। खबर मिली कि मोहन पाँच सौ दंड करत बाड़े तब छेदी सवा पाँच सौ पूरा करके छोड़ि हैं। .... केहू कहि कि छेदी के भइंस दू पसेरी दूध करत बियs तब मोहन ओइसने भइंस खरीदे में सप्ताहो ना लागे दिहें। गाँव में एक से एक रंगबाज लोग बा। हर तरह के लोग बा। धनी आ गरीब। लंगा आ रइस बाकिर एह दूनो जाना के आगा गाँव में दोसरा के चर्चा ना होय। दूनो जाना भिड़ंलन ना, बचावत गइले, बाकिर गाँव जानेला कि छेदी उनइस बाड़न।

लहालह दुपहरिया में मोहन सिंह बैद जी का घरे जात रहन। मतारी के बुखार लागत रहइन। छेदी सिंह के दुआर के आगा से जात रहन तब देखले कि छेदी सिंह एगो बकरी के धइले सार में चलत जात बाड़े।

सांझ के समय रहिमन आपन हाल-चाल कहिके रोले लगलन - "महँगी के समय बा। करीब दू सौ के बकरी रहल हा। अनगुते छउड़ी चरावे खातिर ले गइल रहे। ना जाने, कहवा चल गइल? का भ गइल?"

मोहन के दुपहरिया के बात याद पड़ल। ऊ कहले - "छेदी सिंह एगो बकरी बन्हले बाड़न। जाके देख त तोरे ह?"

ऊ दौड़ गइल। गोड़-हाथ पर के, माफी मांग के, बकरी छोड़ा के ले गइल। आवत खा जे मिले ओकरे से कहें-" मिल गइल। बाबू छेदी सिंह बन्हले रहन।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसरा दिन जे केहू छेदी सिंह के देखो, मुस्काये लागे। ऊ पहिले कारा ना कइले. बाकिर बाद में मुस्की गढ़े लागल. आ मोहन सिंह से बदला लेवे के तय कर लेलन।

मोहन के मन में भाइल कि घुम जास बाकिर घुमले ना आ बढ़त गइले। छेदी से अपना के हर तरह से बीस बुझले बाकिर इहो जानले कि छेदी के ढेर छल-प्रपंच आवेला।

दूनो आदमी एक दोसरा के सामने होखल ना चाहे बाकिर कवनो उपाय ना देख के दूनो आदमी बढ़त रहल। गाँवघर के नाता से मोहन चाचा लगिहें। मोहन आँख बन्द कर के बढ़ल चहले बाकिर छेदी राह रोक के खाढ़ हो गइले। मोहन अचरज भरल नजर से देखले तब छेदी "प्रणाम चाचा" कह के हाथ जोड़ देले।

मोहन आसीरवाद देके, बगलिया के बढ़े लगले तब छेदी फेर बोलले "काहे चाचा? नाराज काहे बाड़?"

"के कहल हा?"

"तब भागत काहे बाड़? का हम कवनो लड़की हईं कि केहू साथे देखली तब नाक कटा जवंब।"

"ना मर्दे! एगो काम के जल्दीबाजी बा।"

"जोरू ना जांता खुदा मियां से नातव। काम के फिकिर तनी कम कर। हंसब ठठाई फूलाइब गाल्, एक साथ दूई होई ना भुआल्। .... सादी बिआह के बाद देखल जाई। कहल बा कि गला में ढोल परी तब बजाबहीं के पड़ी। अबहीं काहे खातिर चिंता? चल। आव लगले लौटब।" कहत हाथ धर के घुमा देले। अब का करीतन? घुम के चल देलन।

छेदी सिंह एगो गरीब बुढ़ मियांइन के घर में घुस गइलन। मोहन जानत रहन कि बुढ़िया का एगो जवान बेटियो बिया। दुआरी पर मोहन के थथमत देख के छेदी घुमले आ उनकरा के धकर के भीतर ले जा के, एगो भिलंगा भइल खाटी पर बइठ रहले। बुढ़िया के छउंड़ी ओही पर सुतल रहे। चिहा के उठल आ अलग खाढ़ हो गइल। मोहन का नीक ना लागल बाकिर चुपे रहलन।

"बुढ़िया चार गो अंड़ा ले आके आगा में धर देलस। छेदी सिंह उठा के, मोहन के तरफ बढ़ावत कहले- "एक अंडा एक पाव दूध के बराबर होला। किंगकांग रोज तीन दर्जन अंडा खात रहे। संसार भर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहलवानन के रगड़ देले रहे। बहरी खइला पर पोंगा-पंथी लोग मगज खराब करे लागी। एहिजे आके खाइला। तू ईं ल ना।"

मोहन सिंह ना खइलन। बुढ़िया के लउंड़ी शबिना के सादगी, सुघराई आ टुकुर-टुकुर खामोशी के साथ ताबड़ उनकरा भीतरे बड़ गइल। छेदी सिंह के साथ आवत-जात अंडा त खाहीं लगले शाबिना से कवनो नतो जोड़ले कि ना ना कह सकी वाकिर छेदी सिंह के चेला लोग नमक तेल लगा के प्रचार कर देलन।

मोहन सिंह ददरो के मेला गइल रहन। छेदी सिंह मियां सब के ललकार के शबिना के घर से निकलवा देलन। ऊ मोहन सिंह के दुआरी पर गइल तब मोहन के भाइ-ट्याद लोग थू थू करे लागल आ ओकरा के दुआरी पर से उफरा परल कुत्ती अस दुर दुरा देल।

गाँव से पश्चिम, सड़क पर, बस पर से मोहन सिंह के उतरत देख के छेदी चलले आ उनकरा साथे उनकरा दुआर पर चढ़ले। मोहन सिंह कोठारी में घुसे लगले तब पीछे से उनकर कमीज पकड़ के खिचले आ ऊ चिहा के घुमले।

"ई गाँव ह, सहर बाजार ना। इहाँ पर रहे के एगो तरीका होला। तू का चाहत बाड़?"

"मतलब"

"हई ल! अब मतलबो बताये के पड़ी। कहीं? कह दीं जी?" छेदी सिंह मोहन के बड़ भाई के तरफ देख के कहले।

"का?" - खटिया पर सुतल रहन। बइठत बइठत पूछले।

"इहे कि शबिना आज एही घर में रहे आइल रहे। रउवा सभे नारहे देनी हाँ आ दुरदुरा देनी हाँ।"

केहू कुछ ना बोलल। सब केहू एक दोसरा के कनखी से देखत रहे। उदासी, चुप्पी कुहरा अस गते चारो से उतर के तह पर तह बइठत जात रहे। सब केहूँ समझत रहे कि आज कुछ अनहोनी हो के रही वाकिर सोच ना पावत रहे।

मोहन सिंह के आइल सुन के शबिनो आ गइल। मोहन के भाई लोग के साथे जुट आइल-कुछ अउरु राजपुत लोग, शबिना के दुआर के आगा के चउतरा पर से धक्का मार के हटा देवे खातिर बढ़ल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"रउवा सभे का करत बानीं ? कुछुओ सोच समझ के करे के चाहीं। अइसन जोमाही ना करे के चाहीं जवना के चलते पाछे पछतावे के पड़। " - छेदी सिंह बोलले।

जहें के तहे लोग रुक गइल।

" ओकरा के बइठे दी सभे। .... रउआ सभेतमासा मत करीं। मइला ना ह कि उठा के फेंक देब आ बात खतम हो जाई। .. होने कोठरी में आईं सभे " छेदी सिंह घर घर के टोल-परोस के बाद घर के दस-बीस आदमी के कोठरी के भीतर ले गइले।

सभ ऊँच-नीच, नरम नरम सोचला के बाद तय भइल। बात दबी ना। गाँवे रहला पर गाँव बसाये लागी। आरा में एगो मकान खरीदल जाय। बाबू मोहन सिंह उहें शबिना के राखस। जब तक मकान नइखे खरीदात शबिना मतारी के साथ रहस। उनकरा हिस्सा के खेतबन के मनी उनकर भाई लोग दी। मोहन सिंह अपना हिस्सा से लजदावा दे देस।

पंच परमेश्वर के बात केहू ना काटल। आरामें बड़ी मठिया के पास मकान खरीदाइल आ मोहन आरा नाके रहेलगलन।

एक दिन अखाड़ा पर एगो चेला- " उस्ताद अइसन धोबियापाट मरलन कि ऊ साफ चीत हो गइलन।"

छेदी सिंह के मुस्की देखते बनत रहे।

उरेह : २ । ३
अगस्त १६७७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को बड़ छोट........

आफिस के बाहर चाय-दुकान पर बइठल रहीं। आफिस के चपरासी सामने घामा में खाढ़ होके नेताजी से कहत रहे- "अब हमनी के का लेब ? आफिसर लोग दूगो अंडो नइखे छोड़त।"

नेताजी के कवनो काम निकाले के होई। ओकरा हाँ में हाँ मिलावत रहन। दू अंडन के कहानी सुने खातिर मन छटपटाये पागल। काम ओने लगा के दोसरा ओर देखे लगनी।

"गिरानी वा।"

"गिरानी का आजे आइल हा ?" चपरासी नेताजी के झटक देलस। "दोसरकी विश्वयुद्ध के समय गिरानी आइल रहे। बाजार से सामान गायब हो गइल रहे। आदमी के आगा में नया-नया दिक्कत आइल रहे। बाकिर कवनो अफिसर नम्बरीं से नीचे उतरल होखस, केहू ना कह सके। आज ऐरे-गैरे, नथू-खैरे लोग अफिसर बन के चल आवता। जानत बानी कि का भइल रहे ?"

"ना।"

पेशकार साहब कतो गइल रहन। ओह दिन ना आइल रलन। हम एगो टूल लेके घामा बइठल रहीं। साहब आफिस में रहीं। एगो देहाती आइल। हमरा से पेशकार साहब के बारे में पूछे लागल। साहब सुन लेलन। घंटी बजवलन। उठ के गइनी।

"केह ?"

"केहू देहात के ह ?"

"का चाहत बा ?"

"पेशकार साहब के खोजत वा ?"

"भेज द त।" कहके साहब बाहर देखे लगलन बाहर निकल के अइनी तब ऊ हमरे तरफ ताकत रहे। इसारा कके बोलवनी। ओकरा के भीतरे भेज के अपने बहरा गइनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"प्रनाम हुजुर।"

"प्रनाम। का नाहीं?"

"आज तारीख बा। पेशकार साहब के खोजत बानी।"

"हाजिरी देवे के बा?"

"जी।"

"लाव द।"

ऊ कागज बढ़ा देलस। सलाम करके लौटे लागल।

"सुन।"

"ऊ पलटल।"

"आ पेशी?"

"हुजुर! साहब ....!"

"डर मत। जे देल से दे द।"

"हुजुर! रुपयापइसा कहाँ बा?"

"पेशकार साहब रहिते तब दित कि ना?"

"दितीं सरकार।"

"का?"

"उहाँ खातिर दूगो अंडा लवले रहीं।"

"लाव उहे द।"

ऊ आपन गठरी ओहिजे, ओही टेबुल पर खोललस। दूगो अंडा निकाल के देलस। साहब लेके ड्रावर में राख देले। पर्दा के छोड़ के हट गइनी। मन करत रहे कि माथा फोड़ लीं। ... अब नौकरी ना हो सकी।

नेताजी आफिस का तरफ देखत रहन। चपरासी उनकर कंधा पकड़ उनकर ध्यान अपना तरफ कइलस। "बाबू लोग अबहीं दोसर काम करत बा। रउवा काहे घबड़ात बानी? हम चल के करवा नू देत बानी।"

"आज हो जाई नू?"

"छोड़ी! ओकर चिंता का कइले बानी। जानत बानी कि ना? पहिले साहब लोग के साथे बाहर जाये में मजा आवत रहे। खुशी होत रहे रुपया मिलऽ। एक-दू बेरि लाके पान खिया द। बाकी पैसा राख ल। हिसाब के माँगे जात बा? अब त अपने पास से खर्चा कर। अपना मन से लोग दिहिना। मँगला पर लोग लाल-पीयर होखे लागी। अइसनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अफिसर रहन कि पइसा ना देत रहन। आदमी इनाम-बकसिस में खर्चा कर देत रहे। अब त लोग ओहू में से हिस्सा लेजेला। अतने तक रहित तवो कवनो बात ना रहे। लोग गलत टी० ए० बनवा के ली। पइसा निकाल के राख ली।

साहब के घंटी बाजल।

"हुजुर, ! बोलत चपरासी दउड़ल।"

"नेताजी खैनी निकाल के बनावे लगले!"

चपरासी आइल। पान वालासे चार पान लगावे के कह के नेताजी के पास चल गइल।

"अब त आदमी मार नइखे खात इहे ढेर बा। पहिले के अफिसरन के बीवीसन के गोड़ देखे खातिर आदमी तरस के रह जात रहे बाकिर अब के अफिसरन के औरतन के रोब साहबो लोग से ज्यादा रहेला। फुरसाइस पर फुरमाइस होत रहेले। ओठ फरफराते रहेला। बुलाके प्रेम से कही लोग कि घर में राशन नइखे। केहू से ले के ला द। कवनो काम कहब त करा देब। सब कुछ ला द। काम करावे खातिर बरिस-बरिस दिन दौड़त रह। हिम्मत खाको भर नइखे। करबो करी लोग त जाये का समय। केहू केहू नाहियें करे। लोग समझेला कि चपरासी खा गइल। कहीं, लोग मारी ना त का पूजी?"

पानवाला के आवाज सुन के चपरासी आइल। पान ले के साहब के कमरा में गइल। नेताजी पर्दा देखत रहन। चपरासी ना निकाल। पर्दा हिलत ना रहे। नेताजी खैनी वाली तरहथी ऊपर उठा के मुँह उठवले तन आकास के देखले। दिन ढल चलल रहे। साहब के कमरा का तरफ कनखी से ताकत आफिस के हाता से बाहर जाये वाली सड़क पर चल देले।

हमरा के नेताजी के जात देखत देख के पान वाला कहलस- "मुकुंद के हवे। ईहे पढ़त रहन। दसवां में फेल हो गइल रहन। गया चल गइल रहन। मैट्रिक पास त ना कर सकल रहन बाकिर सुनत रहीं कि नामी रंगबाज रहन। बाद में डकइतियों में जात रहन। एक बेर पकड़ा गइल रहन। एस० पी० खुदे पकड़ले रहे। एस० पी० पर गोली चला देले रहन। ऊ जरा सा से बच गइल रहे। उनकरा पास से जवन बंदूक पकड़ाइल रहे, उहो चोरिये के रहे। जेल में दस बरिस के सजाय हो गइल रहे। हाले छूट के अइले हा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेज आदमी हवे। डकैतो हवे। डकैती होत रहे कि प्रकाश देखले। प्रकाश एक माइल दूर रहें बाकिर बुझ गइले कि एस० पी० के गाड़ी ह। ईं ओही घड़ी भागल चाहत रहन। ड्राइवर साथ ना देलस। जबरदस्ती ले के आवत रहन। ड्राइवर पकड़वा देलस। बाद में मालूम हो गइल रहे कि शहर के रंगबाज लोग उनकरा के डकैती में भेज के पाछे से एस० पी० के खबर कर देले रहे। ड्राइवरो के चाल मालूम रहे जानत बानी कि ना? ओह दिन गाँधीजी के श्राद्ध सब जगह होत रहे।

अब त नेता बन गइल बाड़े। एह आफिस से लेके सब अफिसन में दलाली करेले। देहाती सबसे रुपया ले लिहें बाकिर केहू के एको पाई ना दिहें।

पान दुकान पर एगो आदमी आइल। बात कट गइल, ढेर देर से बाहर रहीं। उठनी आ आफिस में चल अइनी। कुर्सी पर बइठ के, एगो फाइल निकाल के देखते रहीं कि पानवाला हाथ में पान ले के आ गइल।

"काहे चल अइनी हां? राउर पान त लगा के धइल रहे।"

पान ले के खाये लगनी।

"हमरा बड़ भाई के साथे पढ़त रहन। हम दू क्लास पिछे रहीं। बाकिर मुँह लागल बोल दिला। एक बेरि, एह हाकिम से पहिला हाकिम के सिकायत करत रहन। हमरे दुकान पर रहन। पान देवे के बहाना से पास में गइनी आ पूछ देनी कि रउवा से ज्यादा चोर हवे? तबे से हमरा दुकान पर ना आवस। देखनी हाँ ना कि बाहर खड़ा रहन। हमहूं कहिला कि ठीके भइल। वेस्या रूसी धरम बांची। जब ना तब चल आवत रहन। चाय-पान जरुरे। पइसा के नाँव ना।"

चपरासी आइल। ओकर इसारा समुझ गइनी आ हाथ में के फाइल ले ले साहब के कमरा में चल गइनी। घंटी बाजल। चपरासी आइल।

"दू चाय! पानो ....।"

"छोड़ीं! अबगे चाय पीअली हां।"

"जा! कह द!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

चपरासी चल गइल तब साहब कहे लगले- " एक घंटा से माथा चांटत रहे। बिना मतलब के बात। खाली आपन तारिफ। हम त एकरा से तंग आ गइल बानी। हर समय केहू ना केहू के सिफारिश करत रही। दस-बारह बरिस से एहिजे बा एक आध-बार कलक्टर से कहबो कइनी। कहे लागेले कि बरें के छता में अंगुली मत द। चुपचाप काम कर। तीन साल पूरे तब चल द। ओकरा जात के लोग के इलाका बा। कतना बेर चेन बनल। मंत्री लोग कटवा देल। बेकार बेइज्जती होले। शोख अतना ह कि एक गिलास पानी माँग तब चाय-वाला से भेजवा दी। खुद ना ला सके। चाय के प्यासा टेबुल पर पड़ल रहीं! माँछी भिनभिनात रही बाकिर उठा के नीचे तक ना राख सके। जानत बानी कि अवरू का कहत रहे?"

" कि हमारा आवे के पहिले एहिजा के क्वाटरन में रोज चोरी होत रहे जब से आइल बानी बंद बा। आज हट जाई तब काल्ह से शुरू हो जाय।"

चायवाला चाय राख गइल तब साहब चाय के चुस्की लेवे लगले। फाइलो देखत रहन।

साहब के कमरा में चा-पान आवेला, साहबे मंगावेले बाकिर पइसा ना देस। सामने बइठल आदमी दे देला। बाहरी बड़ आफिसर या नेता लोग रही तब नाजिर बाबू दिहें। हम सोचत रहीं कि पहिले मालूम रहित तब कुछे देर पहिले पचीस पइसा के खून नानू करतीं ?

भोजपुरी कथा कहानी.
अप्रैल १९७८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ई का ह

बिना पाया के छोट दरवाजा। दिन के आठ बजत होई। खाटी पर गंजी आ लुंगी पहीर के बइठल आदमी लिखत रहे। खाटी के पुरुब आ उत्तर दिवार रहे। पुरुब के दिवार में जगला रहे। खाटी के दक्खिन, आवे-जावे खातिर खाटीआ दिवार के बीच जगह रहे वाकिर ओहिजो दू आदमी बइठऽ रहन। खाटी के पश्चिम बरामदा पर तीन-चार आदमी बइठल रहन। एगो चारखाना के पुरान लुंगी पहिरले आ गमछा में खाली कटोरा बान्ह के गर्दन पर डलले रहे। एगो आदमी धोती के फाटल टुकड़ा पहिरले रहे आ खैनी बनावत रहे। उधारे रहे एही से खैनी मलत रहे त बाँहे ना गर्दनों के नस तना जात रहीस। दक्खिन तरफ बइठल दुनो आदमी गोर-गोर रहन आ धोती-कुर्त्ता पहिरले रहनँ। एगो आदमी गमछा के माथा पर मुरेठा अस बन्हले आ दोसरका अपना हाथ के लाठी के देखत रहे।

आधा धोती, पुरान मइल हाफ कुर्त्ता पहिरले, एक हाथ में लाठी आ दोसरा हाथ में झोरा लेले एगो आदमी के ओहीजा बढ़त देखनीं।

"डिब्बा खाली बा कि भरल?" देख के बाकिर मुड़ी गाड़ के खाटी पर के आदमी बोलऽ : सरकारी नौकर ह। ब्लाक में काम करेला।

"भरले रहित त एह आफिस से ओह आफिस में मारल चलतीं ?

नजर से टोवला पर अवगे जवन आदमी आइल हा ओकरा झोरा में एगो डिब्बा पटे पड़ल रहे।

"मारल चलत बानी कि भर जाव ?"

"बुझले बानी त बोलीं कि कवनो उपाय बा ?"

"ढेर बा। बा काहे ना बाकिर सुखले संख बाजेला कि पानी डाले पड़ेला आ बजावे पड़ेला ?"

दरवाजा के आगा में एगो खाली कुर्सी रहे। ओह कुर्सिया के तरफ ताकत फिर बोलल, "बइठीं। काहे नइखीं बइठत ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
"हं जी। बइठीं।" उहां बइठल चारो आदमी बोलल।

ऊ लाठी-झोरा धर के कुर्सी पर बइठल त बुझात रहे कि घोड़ा पर बइठल बा।

"सबसे ज्यादा, एह साल के बाढ़ में, मकई के बर्बादी भइल हा। ना?"

"मकई कहां रहे?"

ऊ बोलल त खाटीवाला कुर्सी के दक्खिन तरफ देखे लागल। उहो देखे लागल। सब केहू देखे लागल।

"का ह?"

"खूँटी"

"डूबल रहे कि ना?"

"रखले रहीं। उखाडब मत, हाकिम लोग आई तब देखा देब।"

"आई के? देखेवाला लोग एहिजे रहेला। ना जानी का?"

"ऊपर के लोग आई तब?"

"सीढ़ी पर चढ़े खातिर नीचे के खेंढ़ी पर पहिले पैर राखल जाता।"

"बिल्कुल ठीक कहनी हाकिम!" चारो आदमी बोलल।

खैनी ठोक के तैयार भइल त खाटीवाला अपने लेलस आ कुर्सी पर बइठल आदमी के दिलवा देलस। जवन आदमी खैनी बनवले रहे ऊ हाथ झार के उदास हो गइल। "खइब? खाये के मन ह त कह निकाल दीं। निकालीं?" खैनी बनावे वाला सोचलस कि चार बार खैनी बनवनी। जब तैयार होखत बा केहू-ना-केहू आ जात बा। खैनी बँटा जात बा। ऊ बेखइले रह जात बा। खाटीवाला एक नम्बर के काँइयाँ ह। खैनी के बटुआ भरके रखेला बाकिर ओकर मुहँ ना खोले। बोली बोल-बोल के दोसरा के खैनी खात रही। एक्कों बार केहू के दे दी त चारो तरफ कहत चली। .... ओकर ना लेब। पास में बा ना। .... ऊ चुप्पे रहल। मुड़ी झुका के तलहथी मलत रहे। दरवाजा के सामने सड़क उत्तर-दक्खिने बिया। एगो आदमी चप्पल, लुंगी आ सैंडो गंजी पहिरले पान खात उत्तर से दक्खिन जात रहे। उहो एही ब्लाक में काम करेला। ब्लाके के क्वाटर में रहेला। ओकर क्वाटर मुश्किल से पचास गज होई। ऊ रूक के दरवाजा के तरफ देखत बोलल "देवास उठी कि ना?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"उम्मीद नइखे बुझात।" ऊ खाटी पर से उतरत आ ओकरा तरफ बढ़त बोलल अइंठ के, देह तुरत्स,

"इहे नू चाहत रहू ?"

"ना ! हम ना चाहत रहीं बाकिर अब बराबर मनाइला। जानत बानीं कि काहे ?"

"मजा मिल गइल। अउर काहे।"

ठीक कहत बानी बाकिर खाली उतने भर ना। हम खेती-बारी के काम सीख के आइल रहीं। केहू हमरा दुआरियों पर झाँके ना आइल। खुदे उठ के लोग के खेत-खरिहान तक गइनीं। तबो लोग के कान पर जूँ ना रेंगल। सब केहू जान छोड़वे खातिर छटपटाते लउकल। साहब लोग गरियावत रहे भीतर तक हाथ डाल के आँत के गंदगी साफ करे खातिर आ लोग रहे कि हमरा छाया से भागल चलत रहे। चारो तरफ ताक-ताक के थाक चलल रहीं कि बाढ़ आइल। सहायता कार्य करे के आदेश मिलल। काम करे खातिर मन तैयार ना भइल बाकिर एह काम में ढिलाई करे वाला के नोकरी चल जाले, सुन के तैयार हो गइनीं। सामान ले लेंनी। रुपयो मिलल खर्चा के खातिर। गांव के तरफ जाये में पड़ वाली नदी के धारा के पास बइल के सोचत रहीं कि सब-के सब धारा में बहवा दीं। साल भर घुमत बानी बाकिर केहू कबो पानियों तक के ना पूछल आ हमरा भीतर सब लोग खातिर घृणा भरल रहल। धार में बहवा देवे खातिर तय कर चुकल रहीं कि हमरे इलाका के एगो साहु आ गइल। सामान के तरफ गौर अस ताकत बोलल —

"का ह हाकिम ?"

"सहायता के सामान।"

"का का बा ?"

"कुछुओ ना आंटा ह। आदमी के खाये लायक नइखे।"

"कइसे ले अइनी हाँ ?"

"मजदूर मैदान ह'खे गइल बा।"

"सुनी।" धीरे से बोलल, "हई बीस रुपया लिहीं। मजदूर आयत बात हमरा साथे कर देब। रउआ जाईं। हम काल्ह बोरा पहुँच देब। ओकरा के पैसा दे देले बानी ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ना।"

"तब हम दे देब।"

"बांटे के बा।"

"बँटा जाई।"

"हस्ताक्षर लेवे के बा।"

"हो जाई। फिकिर मत करीं, बाकिर एकर ना।"

"काहे?"

"जाके कह देब कि नदी में बह गइल। दोसर सामान मिल जाई आ ओकरा खातिर बनवा देब-केहू माँगी तब।"

"मुखिया के सामने बँटाये के चाहीं।"

"उहाँ के लिख देब कि हमरा सोझा बँटाइल हा। अपने आदमी हईं।"

इल्का के लोग हमरा से हँसियों के बोलल रहीत त शायद हमार मन तैयार ना होइत बाकिर ओह लोग के उदासीनता आ आदमी के पुछाये के स्वाभाविक भूख, हमरा के तैयार करा देलस।

"तब से कवनो बिभाग के कवनो तरह के कुछ बाँटे के काम मिलेला तब हम सब केहू से पहिले तैयार हो जाइला। रउए कहीं कि लोग केकरो के पूछेला अपना लोभे से कि ना? जब कबो ओकरा के कुछ ना देब त झूठो काहे खातिर पूछी।

एही साल जहिया बाढ़ आइल रहे ओकरा दोसरा दिन सहायता के बिस्कुट, चुड़ा ले के एगो गाँव में गइनीं त ओहिजा नउआ, जवन हमनी के काम करेला, के देखनी। बेचारा परिवार के साथ एगो बाबू साहब के दुआर पर रहत रहे, काहे से कि ओकर घर दह-बह गइल रहे। ओकरा हाथ में सहायता के सामान थम्हा देनी आ ऊ वाजिब बँटवारा कर देलस। हमरा सामनहीं लोग ओकरा के खा जाये वाली नजर से देखत रहे। लोगन के बर्बादी के थाह ओकरे नजर से कर के चल अइनीं त लोग ठेन बेसाह के ओकरा के मारल आ अपना दुआर पर से बरसत रात में भगा देल। कहत रहे लोग कि ढेर कानूनी हो गइल बा, एही त दुअरखो दखल कर ली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज सब गाँव में अइसन लोग वा जे हमनी तक मजदूरन के नइखे पहुँचे देत। हमनी के आ ओहनी के बीच में खाड़ हो जात वा। ओकनी के बले नेता बन जात वा। ओकर ना आपन उल्लू सीधा करत वा। जवन अफसर मन लायक नइखन करत उनकरा के चौक पर, भरल दुपहरिया में लंगटिया देत वा। इज्जत बाँच जाय आ ऊपरो से कुछ मिल जाय तब अउर का चाही ?"

"पीड़ित लोग के लिस्ट बना देनी ?"

"उहे नू बनावत बानी .... जानत बानी हमरा हल्का में एगो नेताजी बाड़न। भेंटइहें नू त देरी ना करिहें समझावे में कि इमानदारी बँठात रहे त पहिले-पहल ऊहे पहुँचल रहन आ चले भर उठा के ले आइल रहन। जानत बानी का भइल हा ?"

"ना।" मुँह में के पीक फेंकत बोलल्न।

"बड़वा के दोसरा दिने के बात ह। हेलिकाप्टर मन भर पावरोटी, बिस्कुट आ सतुआ उनका छत पर गिरवले रहे। सब के सब अपनहीं खा गइल लोग। बैलो-गाय के खिअवल्स लोग बाकिर गाँव भर में केहू के ना देल। एक दिन भेंटइलन त पूछनीं, "लोग कहत वा, बात ठीक ह ?" सुनते भड़क उठलन। बुझाइल कि माथा नोंचे आ देह के कपड़ा फाड़े लगिहें। कहे लगलन "बात मत चलाईं। एकरा चलते भाई से अलगा हो जाईं ?"

हम काहे के कहे जाईं। बाकिर बोली, "ई का ह ? का हो रहल बा, चारो तरफ ? इहे वसुधैव कुटुम्बकम के भावना ह ?"

"सुनत बानीं कि बाढ़ सब गंदगी के बहा ले गइल"

"गंदगी फैलावेवाला लोग त बड़ले वा।"

ऊ हंसत चल गइले त फिर खाटी पर बइठ गइल। खैनी बनावे के इसारा करके लिखे लागल।

उरेह : ४ । २ अप्रैल १९७९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूर

गाँव में दक्खिन पच्छिम के कोना पर एगो विशाल कोठीनुमा मकान बा। ओह पर लिखल त बा-श्री राम भवन बाकिर दरुई भवन के नाम से विख्यात बा। मकान मालिक के पुरखन में केहू दरुई भइल होई।

प्रखण्ड के जीप दरुई भवन के सामने लागल। भरभरा के लोग उतरल। बिडियो के साथ पाँच पुलिस, एक हवलदार, जनसेवक, सुपरवाइजर, कर्मचारी अउर ना जाने कवन-कवन दो लोग। कुर्सी, चउकी, बेन्च पर लोग पसर गइल। नास्ता-चाय चलल। गाँव घर के लइका-सयान ललचाइल देखत रहलन चौकिदारो आ गइल रहे। लइकन के चाय पर के माछी अस भगावे बाकिर फिर फिर के सब छोंपलस।

"चौकिदार! गोड़ाइत के लेलिह। सब लोनी लोग के बोला के ले आव।" बिडियो के इसारा पर सुपरवाइजर कहले।

"ढेर लोग थोड़े-थोड़े कर के दे रहल बा। दू चार आदमी बा जे रास्ता पर नइखे आवत। सुपरवाइजर साहब जानत बानी।" सहकारिता पर्यवेक्षक तरफ देखत मन्त्री कहलन।

बिडियो सहकारिता पर्यवेक्षक के तरफ देखे लगलन तब ऊ बोलले, "जी हमहूँ चल जात बानी।"

"ठीक बा, जाईं अच्छा रही।" बोल के बिडियो मन्त्री के बढ़ावल तश्तरी में से उठा के पान खाये लगले।

गोड़ाइत के साथे आवत आदमी के धक्का दे दिआइत त गिर के मर जाइत। ओकरा कपड़ा के छू दिआवत तब ऊ फाट जाइत। बुझात रहे कि जनमें से जुत्ता ना पहिरले रहे। गोड़ के पाँचों अँगुरी पाँच दिशा में ताकत रहीस। गोड़ में के बेवाय चलत खा कांट अस गड़त रहीस। माथ के बार जटा जूटं भइल रहे। ठोकचा वइठल झुरियन से भरल चेहरा; बराबर पाकुर-पाकुर करत रहे। विहटी पहिरले रहे आ कांह पर एगो फाटल-पुरान धोती के टुकड़ा धइले रहे। भीतर वाहर लपलपात जीभ से भींगल ओठ के ओही टुकड़ा से पोंछ देत रहे। हाथ के लाठी अलगे धर कें, दाहा अस दोल्हत बिडियो के प्रनाम करे चलल तब बिडियो से इसारा पाके गोड़ाइत अलगे रोक देलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"का बात ह जी ?" बिडियो के बगल में बइठल सुपरवाइजर पूछले ।

"सरकार ई पाँच सौ समिति के कर्जा लेले बाड़न । मंगला पर कहत बाड़न कि ना देब ।" मन्त्री बतलवले ।

"सरकार हम झूठ नानू कहब । हम गरीब जरूर हईं बाकिर बेइमान ना हईं । हम झूठ कहीं तब हमार देह कांम लायक मत रह जाय । हमार दसो नोह गल जाय ।" .... गिड़गिड़ा के कहे लागल तब बिडियो डंट देलन ।

"नाटक मत कर । हम ओहार डायलग सुने नइखीं आइल । रुपया द नात होने बइठ. जेल जाये पड़ी ।" हवल्दार के देखत, "बइठाव जी ।"

"जी अच्छा ।" हवल्दार ओकरा तरफ बढ़त कहले ।

"जेऊ कवना बात के ? हम कवनो चोरी कईले बानी कि जेल जाइब । जे लेले होखे ओकरा से माँगी । हम लेलहीं नइखीं तब देब कहाँ से ।"

"नइख लेले ?"

"ना सरकार, रउआ माई-बाप हईं । न्याय करीं । गऊ ना हते के ।"

"ढेर फटर-फटर मत कर । जे पूछात बा से कह ।"

"पूछीं ।"

"तू रुपया ना लेले रह ?"

"ना सरकार । कबो ना ।"

"सबूत ?"

"हम कबो मेमरो नइखीं बनल । कर्जा मेमरें के दिआला कि दोसरो के ?" सब लइका हंस देत बाड़न स । मेहरारु मुँह पर लुगा धर लेत बाड़ी स । सयान लोग हंस के लज्जा जात बा ।

"जा कोपरेटिभ सुपरवाइजर के बोला लावत ।"

ऊ लाठी उठा के, लेके, चल जात बा । फेर लौट आवत बा । ओकरा साथे जबन सुपरवाइजर गोड़ाइत के साथे गइऊ रहन तवन आवत बाड़न ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ई मेमर बाड़न कि ना ?"

"बाड़न।"

"तू बनवले रह ?"

"हमरा पहिले से बाड़न।"

"कब के कर्जा ह !"

"तीन साल पहिले के।"

"तोहरे देल ह नू ?"

"जी।"

"कर्जा त पहचान बनवा के देल जाला ?"

"जी।"

"कागज ले आवत, देखीं।"

सुपरवाइजर के बगल से आके मन्त्री वहो देखावत बाड़न। चिढ़ियो उलाट पालट के देखत बाड़न। खाढ़ कांपत बुढ़वो के तरफ बीच-बीच में देखत बाड़न। बुढ़वा झूठ नइखे कहत, उनकरो भीतर से आवाज आवत बा बाकिर भीतरे भीतर अइंठ के रह जात बाड़न। कुछ कह नइखन पावत।

"इनकर, हई पहचान के बनवले बा ?"

बेन्च पर बइठल एगो आदमी के तरफ इसारा करत सुपरवाइजर कहले; "मास्टर साहब" मास्टर साहब एही दुआर पर रहेलन। पर भर के लइकन के चरावेलन। बदला में दूनो बेरा चाय-नास्ता आ खाना पर हाथ फेरेलन।

"के, मास्टर साहब ?"

"जी।"

"हँ जी ?"

"जी।"

"तब काहे कहत बाड़न कि नइखीं लेले ?"

"सरकार! कहात बा कि जमाना बदल गइल। जमाना नइखे बदलल। आदमी बदल गइल बा। आदमी खरहो के बात खातिर झूठ बोले खातिर तइयार हो जात बा, साफ उलट जात बा। एही से देखलीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि केहू के हाईं नोटो पर रूपया नइखे मिलत। बिना ब्रथ के दसो पाँच नइखे मिलत। एही से बुझीं कि राउर रूपया मिले में ई हाल हो रहल बा तब हमा सुमां के कइसे मिली?"

"मास्टर साहब सांच कहत बानीं, हम रूपया ले ले रहीं?"

"हमरा तीन बरस पहिले के बात इयाद नइखे, बाकिर तू ना लेले रहित तब तोहारे नांव काहे रहित?" मास्टर जानत रहन कि ऊ पहचान नइखन बनवले। तीन बरस पहिले के बात ह। एक दिन मन्त्री कहत, रहन "तोहरे से पहचान करा देले बानी। बिना पहचान के ना देवे के रहे, केकरा के खोजे जइती।"

"जाँच होई तब?"

"के करीं? का जानत बानी कि एगो हमहीं बानी। सगरो इहे हाल बा। सरकार कतना जज बहाल करी बिडियो-सुपरवाइजर के त देखते बानी, हमरा से बाहर जइहें?"

मंन्त्री ठठा के राक्षसी हंसी हंसल रहन आ मास्टर चुप हो गइल रहन। बाद में कई बार एह पर सोचले रहन आ तय कइले रहन कि चुपे रहला में इज्जत बा।

"देखीं, मास्टर साहब! भगवानों से डरे के चाहीं। राम जी रउवो के वंस देले बाड़न। गरीब के हाय .... ।"

मास्टर के पैर के नीचे से निर्णय के जमीन दरकत बुझाइल। उनकरा अन्दर के आदमी उनकरा के आदमी के बगल में खाड़ा होखे खातिर पंखुरिआवे लागल। ऊ कुछ बोले बोले कइले तबले बिडियो गरजले, "हवलदार इनकरा के गाड़ी में बइठावल जाय। ढेर नाटक भइल। लाल घर के मच्छर काटी तब सब याद पड़े लागी। लात के देवता बात से ना बुझस।"

मास्टर कांपे लगलन बाकिर हवलदार के बुढ़वा के तरफ बढ़त देखलन तब उनकरा जान में जान आइल।

"जरा सा हमरा के पूछ लेवे दीं।" कहत मंन्त्री बुढ़वा के तरफ बढ़ले। ओकरा के कुछ दूर ले जाके कहले, "अपना लइका के काल्ह से स्कूल छोड़वा के हमरा घरे भेज दीह। बिडियो के एगो नौकर चाहीं। ओकरे के रखवा देब। ठीक से रही तब बाद में सरकारी नौकरी हो जाई। पढ़ लिख के जज ना होई। जा ढेर भइल।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
" वाकिर ... . । "

" अब आकिर-वाकिर छोड़। चल। मन्त्री भइया ठीक कहत बाड़न। खाली अपने जिद्द ना करे के। " एगो दूगो आदमी जूट आइल आ बुढ़वा के बोल्हूं ना देल ओकरा के हटा के ले गइल।

" चलीं। कहत बाड़ें, अब दे देव। कहत नू रहीं कि रउवा एक दिन खातिर चलीं। वाकिर हम ठीक कर लेब। "

लोग जीप में बइठल। जइसे धूर उड़ावत जीप आइल रहे चल गइल। बगल में जात बुढ़वा नूर से तोपा गइल-आँख नाक, आ मुँह सब गई .... ।

डेग : अंक ०३ : जनवरी १९८०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइया

भइया हाथ के लोटा में पानी ले के, गाँव के पूरब तरफ मैदान होखे गइल रहन। परीछन साह से भेंट हो गइल। ऊ उनकरा लइकाईं के साथी हवन। दूनो जना साथ ही पढ़त रहन। केंहूके आम तुरे में, बुट उखाड़े में त केहू के साथ मार-पीट करे में दूनो जना साथ ही रहत रहन।

पह फाटे में देर रहे बाक्किर अंजोर हो गइल रहे। आदमी बाहर भीतर आवे-जावे लागल रहे।

भइया के सादी हमरा गाँव से दस कोस दूर भइल बा। भइया के सास ससुर नइखन। खाली एगो बुढ़ सास बाड़ी। उनकर सास आपन सब जमीन उनकरे नांवे लिख देले बाड़ी। भइयो उहें रहेलन। ओह साल ढेर दिन पर आइल रहन। लइकाई के साथी से भेंट भइला पर ढेर एने-कोने कें बात होखे लागल। धरीछन साह माथ पर खांची में घुर लेले खेत में छिटें जात रहन। बतकही करत भइयो ओनहीं चल गइलन।

आपन- आपन काम निपटा करके लोग लवटे लागल तब एगो ऊंट पर नजर पड़ि गइल। ऊ ओही लोग के तरफ चलल आवत रहे। लोग रुक गइलन। ऊंटवा नाथल रहे। नाथ में बांहल रस्सी घसिटात चलल आवत रहे।

भइया के ललकरला पर ऊंट के रस्सी धरीछन साह ध लेहन। ऊंट खड़ा हो गइल।

धरीछन साह लदनियो के काम करेलन। ऊ बर-बाजार बराबर जात रहेलन। हमनी देने त अब कवनों व्यापारी के पास ऊंट नइखे बाकी हेंठार (गंगा के किनारा के इलाका) के कुछ बायापारी अबहियों ऊंट रखले बाड़े स। धरीछन साह बोलले तब ऊंटवा बइठ गइल। दूनों जना एक दूसरा के देखलन आ ओकरा पर चढ़ गइलन।

धरीछन साह फिर बोललन तब ऊंटवा लहरा के उठ गइल। दूनों जना के प्रान नरेटी में आ गइल। दूनो के एक एक हाथ लोटा आ खांची के चलते बाझल रहे। खैरियत कहीं कि ऊंटवा पर पोखनी कसल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनों जन आपन पूरा साहस मुठी में करके पोखनी के धइले रहन।

ऊंट के लचकत चाल दिल में भय भर देलस। ऊ लोग के उतरे के चिंता होखे लागल। अब लोग "बइठ" बइठ "बल" "बल" का का ना कहल बाकिर ऊंट बइठल ना। ऊ लोग के पोर-पोर भय से कांपे लागल। धरीछन के हाथ से खांची छूट गइल। खांची हवा से उड़ के ऊंट के पाछा चल गइल। ऊंटवा अतना जोर से लात मरलस कि खांची राकेट अस दूर फेंका गइल। जतना देवी-देवता के जानत रहन जा सब लोग के ऊ लोग गोहरावल। बाकिर केहू मदद में आवत ना लउकल। हजार तरह से मने मन कान धइल लोग, कसम खाइल लोग कि आगे से कवनो गलत काम ना करब जा। झूठ ना बोलब ना देखब जा। केकरो समान चोरी ना करब जा। केहू के बहिन-बेटी के तरफ खराब नजर उठा के ना देखब जा। केरा के पात अस कांपे लागल ऊ लोग। कहीं हाथ छूट गइल आ ऊंट लात मार देलस तब का हाल होइ? सोच सोच के ऊ लोग के हालत खराब होखे लागल। चढ़त खा ऊ लोग जल्दी बाजी में रस्सी नीचहीं छोड़ देले रहन। ओकरा के ऊपर उठावे के कवनों उपाय ना रहे। तलवार के धार पर चलत रहे लोग।

आम के पेड़ सामने रहे। ऊंटवा ओकरे तरफ बढ़ल चलल जात रहे। ऊ लोग दइब-दइब गोहरावे लागल कि ओकरे नीचे से गुजरे, कवनों दोसर राह मत धर लेवे। ऊंट आम के पेड़ के नीचे से निकले लागल। तब धरीछन साहु एगो डाढ़ि धर लेलन। भइया के हाथ में लोटा रहे। ऊ ना धर सकलन आ ऊंट आम के नीचे से निकल गइल।

धरीछन साहु दिन भर घर पर बइठल दुकान चलावत रहन। खिचड़ी फरोस के दुकान रहे। एक दू बिघा खेत रेहन पर लेले रहन। सुद पर रुपया चलावत रहन। खाये पीये के कवनो कमी ना रहे आ दिन दिन भर बइठल रहे से देह के अउरी कवनो अंग के अपेक्षा पेटवा बड़ हो गइल रहे। धरीछन साहु के पेड़ पर चढ़े उतरे के रेयाज ना रहे। देहियो हलुक ना रहे। लगले हाथ भर गइल। ऊ धाप-धाप चिल्लात रहले। भइया भइया गोहरावत रहले बाकिर केहू कामे ना आइल। ऊ पकला आम अस टप देना नीचे चू गइले। जेठ असाढ़ के दिन रहे घाव लागल बाकिर अंग भंग ना भइल। लदा के घरे गइले, गांव में लइकन के कहला पर; ढेर देर के बाद।

गांव में लइकन के गंध मिलल। फिर का पूछे के रहे ऊंट के पास गोल पहुँच गइल। लइकन के हल्ला-गुल्ला से ऊंट बिदक बिदक के भागे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागल। भइया के लागे कि अब गिरलन कि तब। ऊ कुछ बोलस तब लइकन तक पहुँचे ना। एक हाथ से पोखनी थइले रहन आ एक हाथ में लोटा रहे। ऊ हाथो जोड़स त कइसे।

हम भइया के छोट भइयो लइकन के दल में रहीं। बाकिर मदद ना कर पावत रहीं। ओह घरी त हमरा बुझात रहे कि भइया खूब मजा लूट रहल बाड़न। हम खूब चिल्ला-चिल्ला के कहत रहीं कि भइया हमरो के चढ़ा ल बाकिर ऊ ना चढ़ावत रहन। अतना भिरी से बोलत बानी। उनकरा सुनात ना होई जान बूझ के मंहटि आवत बाड़न। अब बुझात बा कि उनकरा कष्ट के बढ़ावत रहीं - ऊंट के रस्सी धरे के चक्कर में ओकरा के इउरा - दउरा के। भइया के लोटा गिरल। हम उठा लेनी। बाद में मालूम भइल रहे कि ऊ फेंक के मरले रहन; लइकन के भगावे खातीर।

भागा भागी में ऊंट एगो बंसवारी के बगल से गुजरल। भइया एगो बांस ध लेलन। बंसवा लच गइल आ ऊ नीचे आ गइलन। बांस लचकत खा ऊंट के पाछा ना गइल। ना ऊंट के लतारे लागल बाकिर उनकरा बंवारी आंख में धंस गइल। आ उनकरा खाती दुनिया अन्हरिया के चादर तर लुका गइल।

खोदाइल आँख से लोर ना खून चले लागल। कतनो पोंछल जाय बाकिर बंद होखे के नावे ना लेत रहे। बादो में आरा; पटना आ बनारस जा जाके दवाई करावल गइल बाकिर आँख ठीक ना भइल।

लाल कपड़ा देखके भइंस भड़केले कि ना? ना कह सकीं। बाकिर ऊंट के नांव सुन के भइया के खिस अतना जोर मारेले कि ओकर नांप सम्भव ना रह जाय।

जोखिम : २।३
सितम्बर १९८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े भाई

"ट्रक के जाँच हो गइल ?" बिहार के वित्त मंन्त्री पूछलन "लउकत बहुले कि पत्थर-कोयला से भइल बा।" ई बड़े भाई रहन। चेक पोस्ट पर उनकरे ड्यिुटी रहे। "हो सकेला कि डाल्डा वगैरह कोयला के अन्दर छिपा के रखले होखे।"

"होय तब निकाल के दिखा दीं।"

मन्त्री महोदय बिगड़ के चल गइलन।

जानत बानी कि ना ? ऊ सब केहू से कहत रहन। "वित्त मन्त्री सूर्यभान सिंह अपने आदमी हवन। पढ़ल त इलाहाबाद से ना हवन बाकिर जिला-जवार के होखे के नाते उनकरा से खूब पटेला। जे चाहीं करा सकिला।"

"बड़े भाई" हमहीं ना सब केहू उनकरा के बड़े भाई कहेला। उ बहुत सिनियर आदमी हवन। "सुननी हाँ कि आज बाबू सूर्यभान सिंह आइल रहन।"

"का कहत बानी जी ? हम त बुझत रहीं कि ग्रोवर साहब। कलक्टर।"

मने मन सोचनी कि ई बात बड़े भाई के छोड़ के दोसर ना सोच सके। ग्रोवर साहब पंजाबी सिख, सूर्यभान सिंह छपरहिया। खादी के कुर्त्ता धोती-टोपी पहन के ग्रोवर साहब नांहिये चलस।

एकरा बाद के बात ह। बिहार में दू दिन हो गइल रहे-राष्ट्रपति सासन लागू भइला। बड़े भाई चेक पोस्ट के कुर्सी के बगल के कुर्सी पर पैर फैलाके आँख मुंदले रहन। मुंदस ना त का करस ? इहाँ पर चार आफिसर बाड़न बाकिर केहू ना रहे। बड़े भाई कह के लोग फूला दी आ हप्ता भर गायब रही। बड़े भाई चौबिसों घंटा ड्यिुटी करत रहिहें।

आगा में आके एगो कार रुकल तब बड़े भाई के आँखि के पट खुल गइल। मने मन जम्हाई लेत खाड़ हो गइलन। प्रनाम करत, आपन कुर्सी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देत बगल के कुर्सी ठीक कर देलन। चारो तरफ सांति फैल के बइठल रहे। पहरा पर सिपाही सावधान के मुद्रा में रहे किरानी लोग के कसरा से हंसी मजाक लहरात ना रहे।

चेक पोस्ट के सामने से एगो कार चल गइल ना रुकल ना रोकल गइल।

"ऊ कार पार हो गइल। जाँच ना भइल।"

"कवनो अफसर के गाड़ी रहे।"

"नाहियो हो सके, केहूं देखल हा ?"

"कवनो व्यापारी के होई तब कहाँ जाई, अपने आई। पार्टी के चन्दा दे दी।"

ऊ जा के कार में बइठ गइलन। कार के दरवाजा फटाक दे बन्द कइलन। तब मालूम भइल कि नाराज होके ना रहल बाड़न।

"जानत रहीं कि के रहे ?" एगो किरानी बोलल।

"जानते नइखीं। उमापति सिंह रहन। राज्य मन्त्री बाड़न।"

"ना ! सर ! ई कमिश्नर साहब रहन।"

"पक्का बेवकूफ बुझात बाड़। कमिश्नर साहब रहन तब पहिले ना कहे के रहे। छुट्टी लेके पटना जाय पड़ी - ई० बी० करावे के बा।" इहवें कह दितीं।"

"बड़े भाई सब केहू के एके नजर से देखेलन। नेता होखे भा अफसर। सब गाड़िन से एक लेखा व्यवहार करेलन-चोरी के माल ढोवे चाहे परमिट के। झुक के प्रनाम करके, पान खिला के ढेर ड्राइवर चोरी के माल पार कर देलेलन बाकिर अकड़ के आगा से चल जाय अइसन कवनो ड्राइवर नइखे। अउर ना त दू दू दिन ट्रक लागल रही। कागजे ना देखिहें। "रुक देखत बानी।" कहत रहिहें।

सांझ के समय। घुमे जात रहीं। बड़े भाई आवत लउक गइलन। रूमाल में कुछ बन्हले रहन।

"का ह जी ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गुलर।"

"इहंवा बाजार में मिलेला हम त जानते ना रहीं। बड़ी फायदा के चीज ह।"

"अच्छा तब रउवा जानत बानी। एही से बता देत बानी नात सब केहू से ना कहतीं। जान जाइब। भागलपुर में नौकरी करत रहीं तब लोग के बता देनी कि कागजी निबू फाइदा के चीज ह। अब जान जाईं कि कागजी निबू महंगा गइल। सब लोग खरीदे लागल। मिलल मुस्किल हो गइल।

"वर्मा साहब के जानत होखब पहिले बिहारे में रहन। आजकल अमेरिका चल गइल बाड़न।"

"कहीं ना।"

"परीक्षा देवे गइल रहन। तैयारी पूरा ना भइल रहे। कुछ चैप्टर बाकी रह गइल रहे। परीक्षा के दुआरी पर बड़े भाई के देखके बोलल्न, "तैयारी भइल बा नू? हमरो के मदद करब।"

"चल चल साथे बइठ रह।"

दूनो आदमीं आगे-पीछे बइठलन। हिन्दी परीक्षा रहे। बड़े भाई के एगो कॉपी खतम हो गइल मुंड़ी धुमा के वर्मा से पूछलन-"का हो बुझात ना होई।"

"ना बड़े भाई मदद करीं।"

"हई ल।" आपन कॉपी दे देलन। "देख देख के लिख ल।"

अपना दूसरकी कॉपी में लिखे लगलन। कुछ देर के बाद उनकर नजर वर्मा साहब पर पड़ल। वर्मा साहब चुपचाप बइठल रहन।

"काहे हो? काहे बइठल बाड़? लिखत नइख?"

"का लिखीं? कुछ पढ़ात बा!"

"देखीं।" कह के आपन कापी ले लेलन। पलट पलट के देखलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हूं ! हो हमरो नइखे बुझात कि का लिखऽ वा।" कह के सव लिखऽ काट देलन आ कॉपी छोड़ के कमरा से वाहर चल देलन। ओह दिन उठ के अइलन तव फिर कवो परीक्षा देवे ना गइलन। आज तक खाली एके देतनवृद्धि मिलल हइन।

बड़े भाई कोर्ट से गवाही दे के आवत रहन। ढेर दिन के वाद अपना कार में यात्रा करत रहन। पीछे से एगो कार आइल। ड्राइवर वगल होखे लागल तव डाँट देलन। कतनो पीछे से "पों ! पों !" होत रहल। वगल ना होखे देलन। वड़े भाई के सव से वड़ कमजोरी पान ह। पान दे के केहू जान लेऽी तवो ना वोलिहें।

"हुजुर ! पान खा लेऽ जाय।" ड्राइवर पीछे वाली पुलिस कार के वगल देल चाहत रहे।

"गाड़ी वगल कर।"

"आगा जाके पीछे आइल आ पीछलकी कार वीच सड़क पर वड़े भाई के कार के वगल में लाग गइल।

वड़े भाई के ड्राइवर पान के दुकान तरफ जात रहे। पिछलकी कार के ड्राइवर ओकरा से वोलल- "ए ! साहव, वोलावत वाड़न।"

"काहे खातिर ? का वात ह ? हमरा से कहस।" वड़े भाई के आवाज रहे।

आस पास के लोगन के नजर दूनों कारन पर रहे।

"वगल काहे ना करत रहे ?"

"वले लेवे के रहे तव ले काहे ना लेऽस ! जव आपन घात दे वीत तव दीत।"

"वल्हू लेवे आवेला।"

"बुझात वा कि अवहीं तक तोहारा केहू से भेंटे नइखे भइल। चुपचाप चल जा। जमिंदारी चल गइल तोहार वाकिये वा। अव रोव दाव कइसन ? कवनो अफसर होख तव ले आवत वा चुपचाप पान खा आ रास्ताधर।"

"हम एस० पी० हई। होस से वात कर।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े भाई सुन के डेरा गइले। मने मन तैयार हो गइलन। आपन इलाका रहे। लोग का कहीं! ऊ लोग कइसे बुझी कि हमार साहब एस० पी से कम नइखे। कार के फाटक फटाक से खोललन आ जाके एस० पी० के कालर पकड़ लेलन।

"कहत बाड़न कि होस से बात कर। मारत मारत होस खराब कर देब।

एस० पियो के ताव आ गइल आ बड़े भाई के धकिआबत कार से बहरा आइल। फिर होखे लागल सड़क के धूर पर पटका-पटकी।

लोग खाढ़ होखे देखत रहें बाकिर झगड़ा तब रुकल जब एगो लइका जाके मुखिया जी के बोला के ले आइल।

अइसन करीं कि रउआ जहाँ जात रहीं जाईं। हमरो कुछ लिखे बा। दोसरा बार फेर आइब तब उनकरा बारे में अउरी कहब। एकदम विचित्र आदमी हवन। उनकरा पोर पोर में विचित्रता भरल बा।

तरई
१ : ३
दीपावली
२०३८ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक कदम नजदीक

बस स्टैंड पर बस धरे खातीर बइठल रहीं। बगल में दूगो २४-२५ वर्ष के युवक बइठल रहनस। ओहनी के लुंगी-कुर्ता पहिरले आ हाथ में लाठी ले ले रहनस। केहू के बेसबरी के साथ इन्तजारी करत रहनस।

पूछला पर मालूम भइल कि बैल खरीदे खातिर मेला जाये के बा। एक आदमी कहले रहे खरीदवा देवे खातिर साथे चले खातिर। एगारह बजत रहे आ अब तक ना आइल रहे। ओहनी के ओकरे इन्तजारी करत रहनस।

"सावन चल रहल बा। चारो तरफ रोपनी होत बिया। मेला में ना जाके गाँव में जा लोग। हर-हेंगा में चलत देख के ले लीहू जा। हर बइठा के मेला में,के ले जाई जेकर गरह बैल होई, उहे ले जाई।"

हम कहनी तब एकवा जवन लाल कुर्ता पहिरले रहे बोलल, "हम गाँव में ना जाइब। हमरा दामी बैल बा। ओकर जोड़ी ना मिली। गाँव में एह घरी बड़ी ताव धरेला लोग। मेला में दूनो के गरज रहे ला।"

बात उल्टा हो गइल तब फिर हम बोलनी, "मेला में ठग रहेलनस। छव दाँत के बैल छवधर कह के दे देलनस।"

"छवधर खराब ना ह काहे से कहल बा कि-छवधर कहे अ इब-जाइब, सतधर कहे बइठल खाइब। हं, ई ठीक कहनी हां कि मेला में ठग रहेलनस। बाकिर ओहनी जाना हमनो से सटे ना आवस। हँ कवो-कवो जर-जवार के फेरहा फेर में डाल देलनस।"

"कवो परल रह का फेरा में?"

"एक साल के बात ह। ठीक इहे चढ़ते सावन के महीना रहे। सरकारी डाक्टर के देखावे खातिर रुपया के प्रबंध करे में लागले रहीं कि दूइए दिन के बेमारी में बैला मर गइल रहे। बैल खरीदे खातिर रुपया दू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुपया सैकड़ा सूद पर कढ़ले रहीं, काहे से कि जेठ में बहिनिया के सादी कइले रहीं कवना में घर के सब गेहूँ-चाउर बिका गइल रहे। मिर्जापुर तरफ के हार वाला रहे। ओकरे में एगो बाछा देखनी। छ छ अँगुर के सिंध वाला रहे। हमरा पसंद पड़ गइल। दाम पूछनी तब हार वाला एक हजार चार सौ कहलस। हम एक हजार दो सौ कहनी। ऊ बैल ना देलस।

ओकरा के छोड़ के हट गइनी। मेला में घूमे लगनी बाकिर ओकरा आगा हमरा दोसर बैल पसने ना पड़े।' गाँव-जवार के कइक आदमी से पूछनी। सब आदमी ओकरा के पसंद कइल। लोग के कह नाम रहे कि एक हजार तीन सौ तक बैल महंग ना होई।

तब तक उनकरा पर नजर पड़ल। मेला के बगले के गाँव के हवन। हमरा मुहल्ले में ससुरार हइन। मुहल्ला के नाता से हमार फुफा लगिहें। मेला में बैल-गरु के फेरहई करेलन। हालांकि हम बड़ी बढ़िया से जानत रहीं कि ऊ दस-बीस रुपया के लोभ में ठगवाइयो देलन बाकिर हमार मन कहत रहे कि हमरा साथे अइसन ना करिहें।

हम उनकरा नजदीक गइनी आ प्रनाम कर के कहनी, ए फुफा हमरा बैल खरीदे के बा। मिल गइल तब ठीक भइल। कवनो बढ़िया बैल देख के खरीदवा द त।"

"चलले आवत बाड़ कि देर भइल ?" ऊ हाथ में के खैनी मुँह में फेंक हाथन के झारत पूँछलन।

"अइला त देर भइल।"

"कवनो बैल देखले बाड़ ?"

"हं देखले बानी, एगो हार में।"

"चल हमरा के देखाव त।"

"ऊ कहले तब हम उनकरा के हार वाला से दूरे खड़ा कर के ओह बैला के देखा के, कहनी, ऊ एक हजार चार सौ मंगले बा, हम एक हजार दू सौ देत बानी, नइखे देत।"

"एक हजार तीन सौ पचास में दी। कह त चल के दिअवा दीं।"

लोगन के राइयो से पचास रुपया ज़ादे रहे बाकिर हर बइठल रहे, रोपनी बंद रहे, देख के कहनी, "बैल त ओतनो पर ले लेब बाकिर पूरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection: Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुपया नइखे । " रुपया काहे ना रही सबका त रहले रहे । सोचनी कि ले जाके, चला के देख लीं कि कइसन निकलत बा ।

"चल दिखा देव ।"

"तू कहवो कइल आ ऊ ना देलस तब ।"

"तब उनकर एह मेला में आइल खतम हो जाई । हम अकेले नइखीं नू । गाँव-जवार के ढेर आदमी बा । हमनियो के एही सेवे से लिये के ठहरल । इहवें रात दिन रहे के बा । सब केहू रास कर ली । गहंकी त पलामू से ना अइहें । मान ल कि अइयो करिहें तब एकाधे गो न । अउर सब त बरे-जवार के रहिहें । हमनी के छिद्र निकाल-निकाल के कहे लागब आ सब हार के पास केहू थूकहूं खातिर जाई ?"

"ना ।" हम उनकरा हं में हं मिलावे खातिर तुरते बोलनी ।

"तब चल आव । कहत चाड़ कि अइलो देर भइल । खरीदे के फेरा में पनियो नइख पीअले । मुँह झुराइल बा । चल कुछ हो जाय । बैल त खरीदइबे करी ।" कहत हमार हाथ धइले एगो झोपड़ी में घुस गइले ।

बाहर से झोपड़िया उजाड़ अस लागत रहे बाकिर मिठाई-नमकीन से भरल बढ़िया दुकान रहे ।

हमनी के ढुकत कहीं कि पहिले से बइठ के गप्प करत कुछ लोग उठ के चल गइल आ हमनी के जगह मिल गइल-बइठे के ।

दुकानदार फुफा के सामने गिलास में पानी ले आके धइलस तब ऊ ओकरा के देखा के हमनी पर अंगुरी फेर देलन आ ऊ दू-दूगो मिठाई ले आके हमनी के आगा में धर देलस । फिर चाट । फिर चाय ।

चलत खा फुफा अपना जेबी में हाथ डाल के हमरा तरफ देखत रहन । हमरा उनकरा जरिये बैल खरीदे के रहे । हम सोचनी कि उनकरा से पइसा दिलवावल ठीक ना होई । उनकरा "ना" "ना" कहला के बादो पइसा दे देनी ।

फिर हार के पास गइनी सं । उहें आगा बढ़ के बैलवाला से दाम पूछलन । ऊ फिर ओतने मंगलस । फुफा हमरा से पूछवो ना कइलन आ कहलन, एक हजार तीन सौ पैंसठ में देब !"

उनकरा के अपना कहलो दाम से पंद्रह रुपया ज्यादा कहत सुन के सकदल भइल । गांवे से साथे गइल साथी के तरफ देखनी । ऊ भाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चले के इसारा कइलस बाकिर मुहल्ला के दमाद के खिसिआवल ठीक ना सोच के चाहे कहीं कि हमरा कंठमुरकी लाग गइल रहे। हम कुछ ना कहनी।

दूनो आदमी में कुछ देर "ना" "हं" होत रहल बाकिर अंत में एक हजार तीन सौ पैंसठें में तय भइल।

रुपया गिना गइल। लेखनियो आ गइल। ओह घड़ी लिखाई बाइस रुपया लागत रहे; आठ रुपया खरीददार के आ चौदह रुपया बैलवाला के। देवे के भइल तब हार बाला कहे लागल।

"हम लिखाई ना देब। कतना बैल बेच देनी हम कबो नइखीं देले। बैल बिचाय भा मत, हम लिखाई ना देब। हम एक हजार चार सौ से एको कानी कौड़ी कम ना करतीं ईत इहां के बात रखनी ह।"

हम फुफा के तरफ तकनी, ऊ चुप लगा गइलन।

सांप कतनो सांत सुभाव के होखे बाकिर जब केहू ओकरा के कचटे लागी तब ऊ बिना कटले ना मानी। इहो ना हमरा पूरा विश्वास बा कि बिच्छी के केहू ठोकर मारी तब ऊ जरुर डंक मारी। चल्हांक से चल्हांक आदमी कबो कबो जान बूझ के ठगात रहेला बाकिर जब ऊ जान जाला कि ओकरा के बेवकूफ बनावल जा रहल बा तब ऊ बर्दास्त ना करे आ घावा हिल बाघिन अस खुंखार बन जाला। फिर केहू के मनवलो पर ना माने। हमरो ताव आ गइल। आ कहनी, "रउआ ना देब त हमहूं रउवा बदला के लिखाई ना देब। चलीं लाईं हमार रुपया। हमरा राउर बैल नइखे खरीदे के।"

फुफा रुपया गिन देले रहन-हार वाला के आगा में बाकिर ऊ उठवले ना रहे। हम लोग के कुछुओ सोचे-सोचे में आपन रुपया उठवनी आ उठ के चल देनी।

फिर त हारवाला त हार वाला फुफो के बात पर ध्यान ना देनी आ मेट छोड़ के हट गइनी। "कहीं भला। रावे से लोग तमाशा कइले बा। हमरा त कहला के कइल भ गइल रहे। लाज बस कुछ कहत ना रहीं। लइकाइए से मेला आवत-जात बानी, का हम जानत ना रहीं कि मेला में का का होला?" राह काट के फुफा आगा में आ गइले तब हम अपना के रोक ना पवनी आ कह देनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" बिल्कुल ठीक कहइल हा। हमार हाल त सांप छूछून्दर के हो गइल रहे। निगलीं त आन्हर होईं आ उगलीं त भूखे मरीं। हम त ना तोहरे तरफ से बोल सकत रहीं ना उनकरे तरफ से। छोड़ जवन भइल तवन भइल। चल दोसर ओर देख। मेला बा त बैले ना मिली" कहत फुफा आगे-आगे चले खातिर तैयार हो गइले बाकिर हमार मन भिन्ना गइल रहे-उनकरा कहनी से आ उनकर साथे जाये खातिर गच्छत ना रहे। दोसरा तरफ उनकर व्यवहार कुशल बोली हमार बोली बन्द कर देले रहे।

साथी से राय कइनी आ घर के राह धइनी, "कहियो दोसरा दिन आइब। आज कुबेर भइल आ गाँवे लौटल जरुरी बा।" कहके।

झमा झम पानी आ गइल। जेकरा जेने जगह लउकल भागल। हमहूं मुस्लिम के दोकान में जाके छिप गइनीं। पानी से बांचे खातिर तीन चार आदमी अउर आ गइल रहे। एगो औरतो रहे। हमार ओहनी से पहिले के कवनो परिचय ना रहे। मने मन सोचे लगनी।........ केहू केहू के हीत नइखे रह गइल। आदमी सामने वाला के मजबूरी से परिचित रहला के बादो ओकरा प्रति सहानुभूति ना देखा के ओकरा के खाई में धसोर देवे खातिर तैयार हो जात बा।

एकरा खातिर के दोसी बा ? .... आदमी ? .... ना। ऊ अकेला पैदा होला। अपना खातिर अकेला रहेला। अकेला आदमी समूह से ना टकराये जाई। समूह ? .... ना ऊ त आदमियने के मिलला से बनेला। सब दू सब नीमन आम बोड़ा में धर दियाव तब ओह बोड़ा से सड़ाइन गंध ना नू आई। .... तब ? .... ऊ व्यवस्था ह समाज के कुछ पढ़ल-लिखल-ताकतवर आ चल्हांक आदमी आपन फयदा खातिर चला रहल बा। तब एकरा विरोध में हर इमानदार आदमी के आवाज उठावे के चाहीं। ई जरुरी नइखे कि आवाज के असर तुरते लउके लागी बाकिर ई निश्चित बा कि मंजिले मकसूद एक कदम नजदीक हो जाई।

साखी
जनवरी १९८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधु

वस खड़ा भइल तव इंतजार करत भीड़ वस पर टूट पड़ल। सव केहू चढ़े खातिर आफत जोत देल। उतरे-चढ़ेवाला में धक्का-धुक्की होखे लागल कसहूं हमहूं भीतर गइनी। एक-दू वेंच का वाद वाला वेंच पर एगो वुढ़ आ एगो लइका के बइठल देखनी। वस में वड़ी धक्का रहे वाकिर दवत-दवावत लइका के वगल में पहूंच गइनी।

लइकवा के तरफ ताकत पूछनी, "कहवा तक?" "-पियरो तक।" हम वगल में खड़ा हो गइनी-ओकरा पीठ के पाछा वेंच पर हाथ ध के। वुढ़वा लइकवा से कहलस, "तू हमरा जांघ पर आ जा। इहां के वइठे द।"

लइकवा हमरा तरफ ताके लागल। वुझाइल जे ऊ पूछत होखे कि हम उठ जाईं? रउवा वइठव? हम वुढ़वा से कहनी," छोड़ दीं। पियरो कवनो ढेर दूर नइखे। खुलला के देरी वा। कोस-डेढ़ कोस पहूंचत कतना देरी लागी। हमरा आरा तक जाये के वा।" आपन झोरा लइकवा के हाथ में धरावत कहनी, "अपने पास रख। तू-उतरिह तव हम वइठव।"

"अच्छा।" वुढ़वा वोलल।

"रउवा कहंवा तक जाइव?"

हमहूं आरा तक चलव। राउर घर कहवा ह?"

"इहवे, नोनारे"

"अपने?"

मन झुंझलाइल वाकिर आपन जात वता देनी।

"प्रनाम। हम .... हई।"

"प्रनाम उमिर में हमरा से वड़ वानी। हमरा वावा के उमिर के होखव। रउवा नानू, प्रनाम करे के चाहीं। आसीरवाद दिहतीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" हमनी के निबाहे दीं। रउआ सभे के जवन मन करी, नया सरह चलाईंव।" तनी सा ठहर के हमरा से पूछलस, " रउए सभे नू झगड़ा कइले वानी ?"

हमरा इयाद ना पड़त रहे कि कब केकरा से झगड़ा कइले रहीं? पूछ देनी, " हम झगड़ा कइले रहीं ? कब ? केकरा से ?"

" हमार गांव नाथडीह ह। हमरा गांव के जमीन अमरपुरो में पड़ेला। अमरपुर के रौय जी लोग झगड़ा नइखन कइले ?"

हम ओह गांव के झगड़ा के बारे में सुनले रहीं। कवनो करहा के लेके झगड़ा भइल रहे। हम कहनी, " झगड़ा भाई-भाई में हो जाला। वाकिर उहां के झगड़ा में रउवा हमार नांव ना साने के काम रहे।"

उहां के हमार बात फेर पसन्द ना पड़ल। बोललीं, " छोड़ीं, जाये दीं, आईं, बइठीं। पियरो आ गइल।"

बस पियरो बाजार में चल आइल रहे। लइकवा सीट पर झोरा रख के खड़ा हो गइल तब हम बइठ रहनी।

समय ना रहे। तुरते बस खुल गइल। बुढ़उ खैनी निकाल के बनावे लगलन आ बात के बढ़ावत बोललन, " रउआ गांवे एगो रघुनी पांडे रहन। उनकर ममहर अमरपुर ह। उनकरा मामा से हमरा ढेर घराव रहे। अवो बा।" तनी रुक के हमरा तरफ देखत- " रउआं खाइब ?"

" ना।"

" अब बाड़ कि ना ?"

हम कुछ बोलनी ना आ सोचे लगनी।

" उनकरा बाप के नांव-माधो पांडे रहे। एगो चाचा रहहीन। नांव रहे रामगति पांडे। ओह घड़ी अलग हो गइल रहन जा। दूनो भाई के सादी एके घर में रहे।"

" हँ" बाड़न। हमरा भीरिए घर बा।"

" जान जाइब कि हमार एगो बैल फुट पड़ गइल रहे। जियत रहे। मस्त रहे। एक दिन रघुनी के मामा कहले, " का हो बैला के जोड़ी ना लगइब ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कांहे ना लगाइब ? कवनो नजर में होखे त कह।"

"कौनव ?"

"इ हो। देखत बाड़ कि दंवरी माथे पर बा।"
"नोनार, हमरा भगनिवा के पास एगो अइसने बैल बा। चल ले आइल जाव।"

"जान जाइब कि हम ओही दिन उनकरा के लेले-देले रउआं गाँवे गइनी। बैल पसंन पड़गइल। दाम पूछाइल तब माधो पांडे कहलन, - "रायजी जवन कहिहे मान जाइब।" "ना। रउआ पहिले कहीं।" रायजी कहलन।

"इहां के राउर दोस्ते ठहरनी। हम राउर हिते हईं। रउआ दूनो आदमी खातिर बरोबर बानी। रउवे दाम कहदीं। दूनो आदमी मान जाईं। का जी ?"

"इ; ठीक बा। हमरा मंजूर बा।" इमहूं कहले रहीं झूठ ना कहब।

राय जी हमरा से तीन सौ पांच रुपया ले के, रघुनी के अपना पास बोला के रुपया धरा देलन। माधो पांडे पूछलन, "कतना बा ?"

"तीन सौ पांच।" रघुनी गिन के कहलन।

"बैल ना देब। हमरा ज्यादा मिलत बा। ढेर दिन के ना अबहीं परसवें के बात ह।

रघुनी कहलन। "तू मामा पर छोड़ देले रह। अब इनकर बात मान। ई तीन सौ पांच देलन हां, दुइयो सब दिहितन तब बैल देवे पड़ीत।" ओह घड़ी रघुनी के उमिर मोंछ उठान के रहे। लइका के बात लाख टाका के रहे। से सुन के हंसी छुटल। सब केहूं रघुनी के तरफ ताकत रहे। बेचारा मुंडी नेहुरा लेलस। ना नेहुरवले रहित तब बाप कें बरत लाल अंगार भइल आंख जरुर देख लीत। तब हो सकत रहे कि डेरा के भाग जाइत।

माधो पांडे कुछ ना बोललन आ दंवरी हांकत रह गइलन-हमनी के उपस्थिति के नकार के। हमरा ठीक ना बुझाइल बाकिर ऊ बैल हमरा बैला के नीक जोड़ी रहे। पसंद त रहले रहे, अब किन लेवे खातिर मन में जिद्दो हो गइल। हम पूछनी "रउआ कतना मिलत रहे ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तीन सौ दस।"

"तब बोलीं। हम कतना वेसी दीं।

"रउआ तीन सौ पनरह दे दीं। हम बैल खोल देब।"

"तीन सौ पांच देलहीं रहीं अउर दस रुपया निकाल के दे देनी।"

अब माधो पांडे कहे लगलन, "आठ दिन के दंवरी बा। बैला आठ दिन रहे दीं।"

हम कहनी, राय जी के बोले के पहिले हालांकि उहां के राय जी से कहले रहीं, "रउवा राय जी के बात पर बैल दे देले रहितीं तब रउवा बोले के हक रहे। अब हम बैल ना छोड़ब। अब एक डेग ऊ रउआ दंवरी पर उठावत बा तब हमरा खातिर ऊ तरिना दिन होत बा।"

किरिन झुलफुलात रहे। बैल खोल के हकवा देनी। रामगति पांडे तब तक आ गइल रहन। ऊ कहे लगलन, "इनकरा घरे ना रहब तब मत रहीं। चलीं हमरा घरे रहीं।"

हम ना रुकनी। घर पर आके दम लेनी। आरे कवनो ढेर दूर बा। दू कोस होई अउर का। ओह घड़ी आज अस किरिन डूलते राह नानू बन्द हो जात रहे।"

× × × ×

तीन चार महिना बाद के बात ह। धान के रोपनी चलत रहे। किसान लोग खाद-कर्ज खातिर प्रखण्ड में भीड़ कइले रहत रहन। प्रखण्ड से पइसा ना परमिट मिलत रहे। हमरा परमिट पर किसान के दस्तखत अभिप्रमाणित करे पड़त रहे।

हम अपना कार्यालय में रहीं। किसान लोग के भीड़ घेर लेले रहे। जवन आदमी आपन परमिट बढ़ा के हमरा सामने आइल ऊ किसान अस ना लागत रहे। पढ़लो-लिखल बुझइलन। पहिरवो नीमन रहे। हम इसारा कइनी तब ऊ हमरा बगल में कुर्सी पर बइठ रहलें। हमार अनुमान ठीक रहे। ऊ आरा में प्रोफेसर रहन। घर पर खेती भाई करावेलन। घर पर काम के भीड़ रहे। इनकेरा छुट्टियो रहे, एही से चल आइल रहन। उनकर काम क देनी तब ऊ हमरा से पूछलन, "राउर घर कहवां ह?"

हम बता देनी तब ऊ कहे लगलन, "रउवा गांव के नांवे सुन के हमार माथा झुक जाला।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
"काहे ? का भइल रहे ?" केहू भीड़ में से पूछ देल।

"उहां एक बार गइल रहीं। बहिन के सादी रहे आ कतो समियाना ना मिलत रहे। जेह दिन बारात आवे के रहे ओही दिन उहां गइल रहीं। समियाना मिल गइल तब सवाल उठल कि जाई कइसे ? पांच कोस के दूरी, दिन भर के समय आ कवनो गाड़ीवान खाली ना रहनस।

"लौटल आवत रहीं तब बीच गाँव में एगो पांडे जी मिलल्न। अपना दुआर के पास रहन।" तनी रुक के कुछ याद क के, "ह याद पड़ल। रघुनी कि कादो अइसने नांव रहे।"

हमरा तरफ देखत, "अब बानी कि ना ? पंद्रह बरिस हो गइल होई।"

उहां के पूछनी, "कहां घर ह ? काहे उदास बानी ?" हम सब बात कह देनी। उहां के कहनीं, "रउआ जाईं। घर पर अउर काम देखीं। हमरा बैलगाड़ी बा। सांझ तक राउर समियाना पहुँच जाई।"

"का लागी ?"

"ओकर फिकिर छोड़ीं।"

"कुछ कह दिहतीं तब ठीक रहित। घर पर कह दितीं। हो सके कि ....।"

"हमार गाड़ी भाड़ा पर ना चले। लगन के दिन बा, आदमियो गाँब पर नइखन स। हो सकेला कि हमरा खूदे जाये पड़े। जइसन राउर बहिन तइसने हमार बहिन। इज्जत के बात बा नात ....।"

बिश्वास त ना होत रहे। पहिले जमाना में ई सब होत रहे। हमहूं सुनले रहीं बाकिर आज काल्ह ओहू पर अपना आँख-कान के कइसे भूठला दिहितीं। लौटे के त रहले रहे लौट अइनी-आपन नाँव आ अपना घर के लोकेशन समझा के।

उहां के सांचो सांझ होत होत समियाना भेजवा देनी आ गाड़ी के भड़ो ना लागल।"

× × × ×

"ई बाइस रुपया में मिलल हा।" देखीं त गली में रघुनी पांडे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवत लउकलन। वैशाख के महिना, दिन के नव-दस बजत होई। दुआर बहारत रहीं आ हाथ में घड़ी ना रहे।

धोती-गंजी पहिरले, फिचल नया धोती के झारत, झटकावत आ निहारत चउतरा पर चढ़त रघुनी पांडे के देखियो के हम अपना काम में लागल रह गइनी वाकिर धेयान उनकरे तरफ रहे।

नाथडीह के बुढ़ऊ, कार्यालय में मिलल प्रोफेसर से उनकर चर्चा सुन-सुन के हमार मन उनकरा तरफ खिंचा गइल रहे।

"कोटा के कपड़ा सस्ता मिलत रहे। टिकतो रहे वाकिर अब हमरा से संहार ना होखे। कोटवा के धोतिया ढेर भारी होले। दू फराक के पहिरल पर ठीक ना लागे। बाहर-भीतर जाये के ठहरल। अतना पइसा कहां वा कि बाहर-भीतर खातिर दू सेट राखल जाय। आजे पियरी से ले अइनी हां। सभ से ना होई त धोती में कंजूसी कइला से कतना बांची? रघुनी पांडे बोलत आ दुआर के सामने बांहल रस्सी पर धोती पसारत रहन।

आके चउकी पर बइठ रहलन। हमरा धोतिया के तरफ देखत देख के कहे लगलन, "का देखत बानी। बढ़िया धोती में पचास से कम ना लागी। लोग कहत रहन कि अंग्रेज चल जाई तब सब चीज सस्ता हो जाई। हमरा त बुझात वा कि ओही समय सब चीज सस्ता रहे।"

"शुरु शुरु कोटवा भइल रहे तब धोती-साड़ी मिल जात रहे। अब त मिलतो नइखे। ऊपरे ऊपर ना जाने कहां दो चल जात वा।" फिर तनी रुक के कहलन तब हम पूछनी, "सत्तर बरिस के होखल होइब कि ना?"

"ना जी। अबहीं सतर ना भइल होइ। रउआ भाई से नव-दस बरिस बड़ होइब।"

"सोच के देखनी साठ बरिस के उमिर भइल। साठ के हिसाब से देह बड़ी कड़ेर बुझाइल। केस पाक गइल बा बाकिर दांत नइखे टूटल। इनकरा देह के ठीक रहला के कारन बुझाइल, अबहियो कसरत कइल। पहिले लड़त रहन। अउर पहलवान अस अखाड़ा पर गइल एक ब एक बंद ना कइले रहन।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जानत बानी, काहे याद बा ? राउर भाई हमरा भगवान के जोड़ीं रहन। हम नव-दस बरिस के हो गइल रहीं। ओह घड़ी अपना गाँव में एगो साधु जी आइल रहन। हम उहां भिरी परिक गइल रहीं।" उहां के खूब टहल करत रहीं।

एक दिन उहां के खुश होके पूछनी, "बबुआ। तोरा का चाहीं ?" के सोचे लगनी कि का मांगी ? हम सुन कुछ देर सोचलो पर ना बुझाइल आ उहां के पूछल ना छोड़नी तब हम कहनी, माई से पूछ के काल्ह कहब।"

दोसरा दिन गइनी तब साधु जी पूछनी, "माई से पूछल हा ? कह का चाहीं।" झुठ ना कहब। माई से पूछे के याद ना पड़ल रहे बाकिर हम चाहत रहीं कि हमरा एगो भाई रहित। कवो कवनो दू लइकन के साथे निकलत, खेलत, लड़त-झगड़त देखत रहीं तब हमरा बुझात रहे कि हमरो एगो भाई रहित। झट से कहनी, "हमरा एगो भाई चाहीं।"

उहां के कहनी, "जो तोरा भाई होई। हो जाय तब ओकर नांव भगवान के नांव पर धरिहें।"

बात आइल गइल हो गइल। हमरा केहू से कहे से का फायदा रहे कि कहितीं ? का जानत रहीं कि साधु जी के बात सांच हो जाई बाकिर बाद में जब छोटका भइयवा भइल तब साधु जी के बात याद पड़ल आ हम ओकरा के भगवान कहे लगनी। अउरो लोग गते गते कहे लागल तब ओकर नांव भगवान हो गइल।"

गरवी के चलते आज दस बरिस के लइका के गाल पचक जात बिया. ठठरी गिनाये लागत बा, हाथ-गोड़ सिरकी पेट नदकोला कहाये लागत बा, बाकिर अवहीं ले रघुनी पांडे के देह थउसल नइखे। समय के चांटा पर चांटा सहत चल जात बिया। पहिले के खाइल-पिआल ह ना त कबे भर भरा गइल रहित। मनो से बुढ़ाइल नइखन। बरथराय के शुरु नइखन कइले बाकिर सोझिया हवन। मन-नइखन के बात बिना लाग लपट के साफ साफ कह देलन। जवन लोग के पसंद ना पड़े। एह बात के जानकारी हइन तबे त कहेलन।" हमरा छिपावे ना आवे ना त हमरो के लोग साधु समझित। रघुनी पांडे पढ़ल रहितन तब उनकरा मालूम रहित कि हमनी के महाजनी सभ्यता में जी रहल बानी जा, जवना से खराब कवनो सभ्यता ना होखे। एह में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे जतने नजदिकी होला ऊ ओतने बड़ दुस्मन होला। हम उनकरा से कुछ ना कहनी बाकिर हमरा विश्वास बा कि ई बात उनकरा तक कबो ना कबो जरुर से जरुर पहूंच जाई आ ऊ जान जइहें कि नाथडीह के बुढ़वा, कार्यालय में मिलल प्रोफेसर अस लोग बा जे उनकरा साधु के समझेला।

अप्रैल

जोखिम : ३ २ : १९८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" किरदार "

नाइट डियुटि से लौटत रहीं त ऊ मिल गइल रहे। एगो मोड़ पर खाढ़ रहे आ जीप देख के भागे लागल रहे। हमरा शंका भइल रहे आ ओकरा के धरवा लेले रहीं।

पूछला पर कहले रहे, " मैदान होखे आइल रहीं। खेत से आके सड़क पर चढ़त रहीं त एक-ब-एक जीप सामने आ गइल रहे आ हड़बड़ा के पाछे हट गइल रहीं। अंहार रहें। सड़क साफ लउकत ना रहें। बरसात के समय हो सकेला कि कतो पानी होखे आ छिटा पड़ जाय। अउर कवनो बात ना रहे। "

ओकरा बात से हमरा पूरा पूरी संतोष ना भइल रहे आ ओकरा के थाना तक ले आइल रहीं। करीब करीब चार बजत रहे। रात-भर के जागल पलक पहाड़ अस भारी लागत रहीस।

ओकरा के संतरी के पास बइठा के " तनी इनका पर नजर रखिह। भोरे पूछ-ताछ करब। " कहत हम अपना क्वाटर में चल गइल रहीं आ वर्दी खोल के सुत गइल रहीं।

भोरे उठ के थाना पर गइनी तब का देखत बानी कि दारोगाजी ओकरा के हेरी बेरी पहिरा के बेंत से मार मार के बेदम कर देले बाड़े। " हं ! हं ! ई का करत बानी ? इनका के धर के हम ले आइल रहीं। हमरा से कुछ पूछबो ना कइनी आ मार-मार के एकर देह खराब कर देनी। " कहत दउड़ल गइनी आ ओकरा के छाप लेनी।

" थाना में अइनी हां त देखनी हां। हम त बुझनी हां कि कवनो चोर-बदमाश होई। एह में पूछे के का रहे ? " कहत दारोगाजी हमरा के डपट देले।

" नाइट डियुटि में मिलल रहन। पूछताछ कइले रहीं। मन ना भरल रहे। दिन में अउर पूछे खातिर बैठा देले रहीं। हम त ढेर पुलिस अफिसर के अइसे करत देखले बानी। पूछताछ से गड़बड़ ना बुझाय त छोड़ देल जाला नात आगे के कारवाई होले। "

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तब कर। के ढंकले बा ?"

"अब का करी ? भारत भारत देह के थाम विधुनी बान कर देनी। बेचारा के सांस लेल मुश्किल भइल बा। जबाब का दी।"

पानी मंगवा के ओकरा के पीअवनी, हाथ-मुंह साफ करववनी आ रिक्सा बोलवा के भेजवा देनी।

"रउवा अजीब आदमी बानी। तनिको आग-पाछ ना सोची। मर जाइत तब ?"

"मुठभेड़ बनवां ज़िती। अउर का।"

"अबहीं त ढेर सुभ्भत बा बाकिर जाके केस कर दी तब बुझाई।"

"त जाना। जाके करवाइए द।"

"हम काहे के करावे जाईं। कवनो हमार सार-ससुर इवनका ?"

"देख तोहरा से हम कई बार कह चुकल बानी कि इहां के प्रभारी पदाधिकारी हम हईं, हम जे चाहब से ही इहां पर होई। तोहरा हमार बात पसंद नइखे पड़त तब आथन इहां से बदली करा ल।"

"ओकरा बाद ढेर बात बढ़ गइल रहे। हम उहां पर जमादार रहीं आ ऊ दारोगा रहन। उनकर मिजाज तरीका अंग्रेजन के समय के रहे। हम उनका से बराबर कहत्र, "आपन तरीका बदलीं," आ उनका खराब लागत रहे। हम कहब, सब काम कानून से ना होखे।" ऊ अबहीं नया-नया नौकरी में आइल रहन आ किताब पढ़-पढ़ के काम करत रहन।

ओह दिन स्टाफ के मुंशी सिपाही लोग के बीच-बीचाव कइला से बात खतम हो गइल रहे आ कवनो दुर्घटना होखे से बांच गइल रहे बाकिर हम बराबर सोचिला कि अइसे कब तक चली। पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालिस के दिन देश आजाद भइल। बेयालीस साल से ज्यादा हो गइल बाकिर अंग्रेजने के बनावल आइन कानून आज तक लागू बा। का हमरा नेता लोग के नइखे बुझात कि कल्याणकारी राज्य के पुलिस के किरदार का होखे के चाहीं ?

कोइल

अक्टूबर। नवम्बर १९९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"छु मंतर"

किरिन लुपलुपातो ना रहे बाकिर साफ हो गइल रहे। आरि पर ओठंघल धान पर के सीत से बचत हम नयकहरा पर पहुंचनी। नयकहरा के पींड़ पर कच्चा सड़क बन गइल बिया। अब सीत के डर ना रह गइल रहे। माथा सोझ करत, लुंगी ठीक करत, देह झार के चले चहनी तब सामने से आवत मनबोध सिंह पर नजर पड़ल। हमरा गांव से सटले उत्तर वाला गांव पर घर हइन।

"आदाब बाबु साहब!" सामने से पाड़ी के पगहा धइले आवत मनबोध सिंह के हांथ उठावत कहनी।

"बनल रह। भइसवा लउकल हा?"

"नाजी! आज त नजर ना पड़ल हा। पूर्वारी भ पोखरा पर जाईं। अधिकत्तर उहंवे रहेला। पाड़ी त नीक बनल बिया।" पाड़ी के देखे लगनी।

"मत कह। हम त बुझत रहीं कि मेहनत रंग लाई। दुख-दालिद्दर भाग जाई। घर पर छपले कुहा के सूरज अस फाड़ दी बाकिर मानते नईखे।"

हम का चाहत रहीं आ का हो गइल। हमरो मन भारी हो गइल। बकारे ना फुटत रहे।

"समय के फेर ह।" कह के हम चल देनी बाकिर दसो-बारह डेग ना गइल रहीं कि बाबु साहब के आवाज मिलल आ रुक के सुने लगनी।

उहां के कहत रहीं, "नंहकु सिंह के खोजत रह नू? आइल बाड़न। सांझे लउकल रहन।

हम फिर से हाथ उठा के आदाब कइनी आ पलट के चल देनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चार साल पहिले के बात ह । नंहकु सिंह अपना लड़का के बिआह में हमार समियाना ले गइल रहन। आज तक ओकर कुछना मिलल। उहां के बाहर कतो रहिला । सरकारी अफसर बानी। गांव पर बहुत कम आइला। अइलो पर ठहरीं ना चल जाइला। अइला के खबर कतना दफा मिलल, हम गइनी बाकिर भेंट ना भइल। हमरा जाये के पहिल हीं चल गइनी। दू-चार दफा भेंटों कइल बाकिर, "मिल जाई" सुने छोड़ के कुछ मिलल नइखे।

ना मिली। ई विश्वास ना रहे बाकिर घर-खर्चा बढ़ गइल रहे। मिल जाइत तब भादो-भदवारी में बहुत बड़ मदद होई।

गांव में घुसनी। झपटल बढ़ल जात रहीं कि दरवाजा पर खाढ़ बाबु तपेसर सिंह पर नजर पड़ल। आदाब कर के बढ़ल चाहनी। उहां के बैलन के सानी-पानी करत नौकर के तरफ से नजर हटा के हमरा पर टिकावत कहनी, "आव, मौलवी ! भोरे भारे केने चलल जात बाड़ ?"

दु डेग के फासला होई, अउर का ? रुकके उहां के सामने गइनी तब, "का बात बा हो ? आज तोहरा के बहुत उदास देखत बानी, सभे ठीक बा नू ?" उहां के पूछनी।

उहां के हमार खंदानी मददगार हईं। ददे के समय से हमरा परिवार पर बराबर नेह राखिला। पूछ पूछ के मदद करीला।

हमार एगो आदत ह कि इहां के बात उहां ना कहल चाहीं। कहे से कवनो फायदा त होई ना। सुनेवाला का दोसरा के बदला कुछ दे दी ? ना दी। अउरी कहीं कुछ जोड़-जाड़ के कह दी तब लेवे के देवे पड़जाई कि ना ?

आजो कुछ कहे खातिर ना रुकल रहीं बाकिर उहां के खूदे पूछ देनी, उहे सोचत जातो रहीं त अपना परिवार के सबसे बड़ मददगार के सामने हम बात छिपा ना सकनी आ कह देनी, "नंहकु बाबु के पास जात रहीं। चार साल हो गइल समियाना खड़ा कइला ?"

"आज तक कुछ मिलल ना ! आवत-जात थाक गइलें।" कहत उहां के जोरदार ठहाका लगा देनी।

"लखलखवा ! अरे लखलखवा !" सानी-पानी करत नौकर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तरफ ताकत कहनी, "भीतरे जो। चाह बन गइल होई। जलदी दू कप ले आव त।" हमरा के सामने के चौकी पर बइठे के इशारा करत अपने कुर्सी पर बइठ रहनी।

"सरकार! रउआ से हमार का छिपल बा। हमरा का दोसर कवनो टोपरा बा।"

"देख! हमरा एगारह पेड़ आम के बा। कवनो कवनो दू-चार साल ना फरस। तब का हमरा चाहीं की ओहनी के कटवा दीं?" हमरा के भइंसिन के तरफ तकावत, "तीन गो भईंस बाड़ीस। देखत बाड़ नू? एके लागेले। दू गो मानतो नइखीस। तब का दूनो के भाठ दीं?" लवछवा के चाह लेके आवत देख के, "ल चाह पीअ। नइखे देले तब कबो दी नू।"

धक्का अस लागल। आंख खुल गइल। हम सोच के चलल रहीं कि आज नंहकु सिंह से जय भा छय कर लेब। मंहगी के समय। बड़ परिवार के बोझ। मन उब गइल रहे। बुझाइल जइसे केहू हाहास बन्हले आवत दइंत के मुठी में बंद कर लेल। चारो ओर फैलल कुच कुच अंहरिया में हजारन बलबन के एक-ब-एक जला देल आ अंहरिया छू मंतर हो गइल।

ईंगुर
जन: मार्च १९६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अउर इहो

गर्मी के दिन। थकान से भरल गोड़ आ पसीना से लथपथ देह ले ले हम घर में घुसनी। कटला रुंख अस गिर जाये के मन करत रहे। बनावटी कपड़ा पसीना मा सोखे। चिपचिपाह आ भारी भ गइल रहे। मोह ना रहित, रोज एगो नया खरीद लेवे के साइंफ लउकित तब हम कपड़ा उतार तीना फाड़ के फेंक दितीं।

बइठते बइठत मालूम भइल, "बुढ़वा पंडित जी खोजत रहीं। दू-तीन दिन अइलीं।"

"जो। बुढ़वा पंडित जी घरे होइहें तब साथही लिअवले अइहे।" कहनी तब बगल में खाढ़ नौकर उहाँ से चल गइल आ हम कपड़ा बदले में लाग गइनी।

"पीरो जाये के तइयारी कर चुकल रहीं बाकिर आवत बानी! कागज-पतर धरे घरे चल गइनी हाँ।" आके नौकर कहलस तब जाके दालान खोल के, बरामदा में बइठ रहनी।

पंडित जी अइबी तब दालान में चल गइनी। उहाँ के ओही में अइनी।

दूनों आदमी पलंग पर बइठ रहल आ हमरा नजर के सवाल उहाँ के सामने खाढ़ भइल तब उहाँ के कहनी,। "नतिनियाँ के शादी ठीक कइले बानी। सब तीलक के पहिलहीं भेज देवे के रहे। सब चल गइल बाकिर थोड़ा सा बाकी रह गइल बा। दू चारे दिन में भेजे के बा। एगो नातियो के ठीक कइले बानी। ऊ कह के अवले कुछ पहुंचवलेस ना। भेजिहेंस तब ठीक बा नात तीलक के दिन त जरूरे मिल जाई।"

"तब।"

"इहे कि रउवा चार हजार हथफेर दीं। हम सब १०-१५ दिन के अंदर लौटा देब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ोसी के बात इयाद आइल। ऊ कहत रहन; "भइया ! लोग कहेला तबने पर तू काहे विश्वास कर लेल ? ऊ कहेला कि दस दिन में देब तब तू कइसे मान लेल कि ऊ दे दी ?"

"ऊ कहलस कि दस दिन में देब तब हमरा कवन अधार बा-समझे के कि ना दी ? ऊ कहलस तब न सुननी आ मननी ओकरा भीतर के हम का जानत बानी।"

"ठीक बा कहलस बाकिर ओकरा से प्रबंध ना भइल तब कहाँ से देव ?"

"हम कहाँ कहत बानी कि ऊ आपन मांस काटि के देव। ओकरा आ के कह देवे के चाहीं कि हई दिकत भइल। इहे ना ओकरा बादो लोग मांगे आवेला। हम कहिला कि आज पइसा नइखे। दस दिन बाद देव। ऊ ना देला तब हम उल्हा हो जाइला। हमार बादा फेल करेले। हमरा भस आमदनी के अंतहीन श्रोत नइखे। सिमित बा। ओही से आपन आ दोसरो के काम करे पड़ेला। ना नू हो पावे। सब गड़बड़ा जाला।

"तब देबे मत कर।"

उहे ना अउरो ढेर लोग इहे बात कहेला बाकिर हम ना चाहीं कि हमरो के देख के लोग कहें-अस्सी कोस के पोखरा चउरासी कोस के घाट, बजर पड़े ऊ पोखरा कि पंडुक प्यासल जाय। पंडित जी के नतिनिया हमरा लइकी के साथी ह। पुरान साथी ह। ओकरा विआह में मदद कइल हमार फर्ज बनत बा। ओकरा के खुश देख के हमार लइकियो खुश होई। इहे सोचत कइनी, "हमरा से चार हजार ना सपरी। लइकी के शादी हजार, दू हजार दे सकत बानी बाकिर जल्दिए मिल जाई तब।"

"बेशी ना होई ?"

"ना।"

"तनिको ना ?"

"ना जी। हमरो काम चले आ रउरो, इहे हम सोचत बानी नात हमार रउरा से छिपल बा।"

"दीं। देत बानी ? देर ना करब, विश्वास करीं।"

"आज ना काल्ह। अपने काल्ह चल आइब-बैंक खुली तब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित जी चल गइल रहन। दोसरा दिन सवेरही उना उनकर लइका आइल रहन तब हम, "एग्यारह बजे के करीव अइह" कहत उनका के लौटा देले रहीं।

उना आइल रहन तब कुछ देर देख के अपना नौकर के भेजले रहीं। पंडित जी के दोसरका लइका आइल रहल आ हम दू हजार के चेक उनका के थम्हा देले रहीं। ऊ उठ के गइलन ना आ चेक उलट-पुलट के देखे लागल रहन तब पूछे के मन कइलस बाकिर हमरा पूछे के पहिलही ऊ पूछ देले, "हमरा के काहे खातिर देत बानी?"

हम पंडित जी से भइल बात सुना देनी तब ऊ "आछे। ई बात बा। हम जानू जानत रहीं।" कहत चल देले।

दस-बीस दिन के के कहो महिना भर बीत गइल, उनका नातिन के तिलको ना बिआहो हो गइल बाकिर हमरा रुपया ना मिलल तबो हम पंडित जी से तगादा ना कइनी।

आज पंडित जी के दुआर पर गइल रहलीं लगन के बारे में बात करे के रहे। ऊ हमरा से साल भर के तय करके, पुरा रुपया पेशगी ले लेले रहन बाकिर हमार काम ठीक से ना करत रहन। तगादा कइला पर घरे बइठ रहल रहन। हमहीं ना, ढेर लोग समभाके हार गइल रहे। शायद पंडित-पुरोहित के रहे से ऊ सान जास। पंडित जी से भेंट ना भइल रहे। हम लौटल आवत रहीं रास्ता में टूकर से भेंट भइल। तब पूछनी, काहो गाँवे ना रहका?"

"काहें हसत करहूं ना गइल रहीं।"

"काल्ह दू दू आदमी से खबर भेजले रहीं बाकिर ना आइल रह। तु हूं नाराज बाड़ का?"

"हमरा केहू से भेंट ना ह। राती खा घरवा पतोहिया कहत रहीस कि रउरा खोजत रहीं। लगन गरुवारी जइखन करता दिने में सुनले रहीं। हमार छोटका लइकवा आवत रहे तब बिभोर करत बाड़न सुन के रास्ते से लौट गइल रहे। हम रात में रतौंधी के चलते ना आइल रहीं। लोहसारी में जात रहीं। लौटती बेर रउरे किहाँ जइतीं।"

"आवत बाढ़?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"लीं। आइब ना; चलीं। आवते वानी।"

ऊ अइलन तब कहे लगलन, "भोरे दखिन भ गइल रही। शिवाधर कहत रहन कि इहेंनू लगनो बाड़न। इनके से पूछलजा कि हमारा घरे ई का खात रहन। ऊ खाना इनका कतहूं मिली? हम उनका के कहत वानी कि राख लेब। हमरो घरे रात दिन रहे पड़ी आ हरो-कुदाल करे पड़ी। उहंवे अभइयो के माई रहे। उहो कहत रहे। "हमरा लड़का के पेट ना भरत रहे।" हम कइनी कि ओकरा के देखत बाड़ू? दसे दिन में ओकरा चेहरा पर के पानी उतर गइल। उदास लागत बा। खाइलो नेहाइल छिपेला?"

"लगन का कहत रहे।"

"उहंवा ना। हम ओकरा घरहूं गइल रहीं। ऊ ना रही। सभे समझवत रहे। ऊ केहू के बात नइखे सुनत। एके बात कि हम ना रहब। जाये दीं। ना रही तब मत रहो। रुपया खोज रहल बा। देखीं त के रुपया देत बा, केहू वइठा के दी?"

मूलचन के कमरा में आवत देख के टूकुर चूप हो गइले आ खंइनी चे भोरीबगली में से निकाल के ओकर मुह खोले लगले। मूलचन बेंच पर वइठ के कहले, । "आवत खा भूतनाथ से पूछनी हाँ।"

"का?"

"तोहारा खंडिया में एगो भइस देखनी हाँ। लेल हा का?"

"ना। लगन के पाड़ी देले रहीं। उहे ह।"

"दाम कर के ले अइल हा?"

"एगो भइयो के देले बाड़। उनको दिक्कत वा उहो भेजवा दीं?"

"जानत नइख? हाकिम लगन से कहले रहीं कि खोलवा लेब।"

"हाकिम के रुपया ले ले वा। काम ना करी, पइसो ना दी तब खोलवइहें ना?"

"डर गइल वा।"

"हमरे के सिखावत बाड़ कि डर गइल रहे। अब ले कुछ न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे बाकिर ऊ चाहत बा कि कुछ होखे। तोहरा इना चाहत रहे। तोहरा का विश्वास बा कि हाकिम भइंस खोले जात रहीं। डखावत रहीं। उहां काम खातिर नू। अगर ऊ तोहार हर बात मानित तब तू समझा दित।"

"हमहीं ना हमार मेहरारुवो उनका के मना कइले रहे बाकिर ना मानल रहे तब का करिति?"

भूतनाथ हमरा साथे लगन के धरहूं गइल रहल हमरा सामने ओकरा के बहुत समझवले रहन बाकिर राघे नइखे मानत।"

"का कहत बा?"

"इहे कि हमार इज्जत चल गइल। अउ उहां के काम ना करब।"

"काल्ह एही मुहें राघे भइलिया के ले जात रहे। ओही घड़ी बाजार से आके हम साइकिल खड़ा कइले रहीं। पूछनी तब कहलस। हम मनो कइले रहीं कि भूतनाथ के घरे मत ले जो। अपना घरे बांह, काम करस। हम हाकिम सांच कहत बानी। हमरा अइसन बोइसन काम ठीक ना लागे, ना पसंद पड़े।" साझवाँ तरकारी खरीदे गइल रहीं दुकानदार तरकारी तउलत आ कहत रहे। ऊ बात में फंसा के खराब आ कम मत तउल दे. हम एही फिराक में सचेत रहीं। हम बोलल चाहत रहीं बाकिर बात बढ़ जाई तब बे मतलब के देर होई सोच के चुपे रहनी।

हम ओकरा मुँह तरफ ताके में, तरकारी चढ़ावे में लगल रहीं कि ऊ फेर कहलस, "ऊ दु दिन बंगला में रहके का अइले हा, उनका दिमाग में गर्मी सभा गइल बिया। हम इहो जानत बानी कि रउरा से ना सपरी नात इनकर बाई त तुरते सांत हो जाइत।"

"सभके से सभ ना नू होखे?"

"बाकिर सेर के सवा सेर से भेंट होइएनू जाला।"

"रउवा एकरा के गलती कहीं आ शरारत बाकिर जवन भइल तवना खातिर केहू उनका के ठीक नइखे कहत।" देखी तब दुकान के चउतरा पर बइठल लगने टोला के एगो मजदूर बोलत रहे।" एकर फल ऊ पइहें। रउवा देख लेब। उपर मुँह करके थुकला पर अपने पर पडेला कि ना।

"पड़बे ना करे जरूर पडेला बाकिर आदमी के बुझाला बाद में नू।" कहत दुकान में से निकल गइनी। अपना चारों तरफ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहानुभुतिभन के मोल चुकावे पडेला से विना लेले लौटावे वाला कर्ज जतने कम रहे, ठीक होई।

दुपहरिया में हमरा दुवार पर आके, खाटी पर चिताने सुतके, गमछा के तकिया के माथा तर धरत बड़का भाई कहले, " राघो के बोलवले रहीं। काम करिहेस। हमरा समभवला पर कुछ कहले त ना रहे बाकिर उम्मीद बा कि अइहेंस। "

भोरे घर से निकल के देखले रहीं। बड़का भाई अपना दुआर के सामने दिवाल से ओठंघ के पत्थर पर बइठल रहन। हम उनका पास जाके लगन के साथ भइल सब बात सुनवले रहीं। गाँव के जेठ रइयत हउवन। इनका बात के गाँव भर में कीमत बा। उनकर नात छत पर से गिर गइल रहे। लोग ओकरा के आरा ले गइल बा। ओही दुख से दुखी रहन। अबहीं कुछ बोलल ना रहन कि अपना घर तरफ बिभोरके जात देखनी। मदद करके गाय-बाछी के खिअवावे के सोच के उठ के चल आइल रहीं।

हम बुझ गइनी। उनकर बात भोरे के हमरा बात के जबाब रहे।

गली में जात राघो के बोलवलन। ऊ आके माथ झुका के खाड़ हो गइल। बड़का भाई कतनो कुछुवो कहले बाकिर ऊ " अब हम का कहीं ? ऊ लोग नाराज बा, ओही लोग के करे के बा। हम त बिमार बानी। आइल बानी तवे से दू रोटी खाइला। " छोड़ के कुछ दोसर बात ना कहहस।

चल गइल तबो उनका विश्वास ना भइल कि ऊ काम ना करी। ऊ इहे कहत रहन, " चुपचाप रह। एक दू दिन में सब ठीक हो जाई। काम ना करी-लोग तब खाई कहाँ से ? घर में कुछ बा कि फुटानी होई। "

" कहत बा लोग कि पइसे ले ल। "

" पइसा चहब त पइसा त देइए दी फेरेवाला के कमी नइखे। पइसा मारे के कहाँ कुवत बा। पइसा ले लेब तब आदमी कहाँ मिली ? "

" आदमी तब मिली बाकिर .... ।

" बे। हमनी के लोग के बले राख छिहिलाजा, तब का लोग जानवरन के जहर देला। "

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ई सब ना होखे। मन त रहेवे करला। झुठो के नाना करेक्शनस देखावे खातिर दवाइ दे देल जाला। बात रहेना रहेके नइखे नू। गलत राहनू लाग जाई।"

आपन बात कहीं एगो अजीब तरह के भरमावे वाली बात हो रहल बिया। एक बात सुन के असिम सागर में किनारा पावे खातिर छछनत मन स्थिर हो जात बा त एक बात सुन के फिर चकोह में पड़ जात बा।

भइया से राय मंगनी तब ऊ कहले; "आरे दे देवे तब चुपचाप ले ल, देखत नइख, कइसन समय बा कवनों का कहीं सब पाछा में ओकरे बात में बात मिलावत बाड़े स। दस दिन काम करा के देख नू ले ल कि कइसन काम करेला। रोज चखचख होत रहे। सालो भर इहे नू होइता खिसपीत के ना जानल ह कि कब का होई।"

मन स्वार्थी ह, अविश्वासी ह, संकाल ह। ऊ सोचे लागल कि भइया से हमार बढ़ती इनखे देखल जात। ऊ नइखन चाहत्त कि हम नौकर राखीं। सोचत बाड़न कि नौकर ना रही तब ई परेशान होइहें।

अपना मन के बात एक दिन हम मनोहर से कइनी। ऊ हमरा परिवार के पुरान खरखाह हवन। ऊ हमरा मन के बात से सहमत ना भइलन आ भइया के बात के सवा सोरहो आना सही बतवलन।

हमरा उनकरो बात पसंद ना पडऊ। हमरा मन हमरा भीतरहीं खानाबदोस अस इहाँ से उहाँ मांकत रहल। एक जगह रुकल तब हम उनका से पूछ्ंमीं "हम रउवा सभ के बात मान ली, रूपया ले ली तब एह घड़ी हमरा आदमी कहाँ मिली? नामिलि तब काम कइसे चली?"

"मिली तब ठीके बा ना मिली तब कवनो उपाय होई बाकिर जान बुझ के हम ना कहब कि रउवा आग में कुद जाईं। गाँव त चाहत बा कि रउवा कुदीं आ हम तमाशा देखीं।"

मेन नमक छुअइला चारा अस झट से सिकुड़ गइल। चारो तरफ तकऊो पर कवनो उपाय ना लउकल तब हम पुछनी, "राउर बात सही मान लेत बानी। रउवा जे कहब हम उहे करब बाकिर रउवा अपने से जाईं, समझाके देखीं कि का कहत बा?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ठीक बा। हम जानत बानी एह में कवनो भार पड़े के बा। सिमा के अन्दर रह के कोशिश करे में कवनों हरज नइखे।" कहत उठ के लगन के घर तरफ चल देले।

हमरा मेहरारू के लइका भिरी गइला महिना दिन हो गइल रहे। घर में अव्यवस्था चारों ओर झलकत रहे। सुस-सुरुरी कई एक चीज के काटियो देले रहीस। दुवार तरफ से जोर जोर से बोलला के आवाज आइल।

दुआर पर गइनी तब देखनी कि दू चार घर के बाद गली में हल्ला होत रहे हम ओनहीं चल देनी तब दुवार पर से केहू बोलल, "तू मत कुछ बोलिह।"

"तोहरा बदला में त लोग उहाँ बोलते बा।"

सामने से आवत आदमी बात पूरा करत चल गइल।

उन्हाँ भीड़ लागल रहे।

गली में लगन बो, राधे, मूलचन आ अउर कई एक आदमी बइठल-खाड़ रहे। मनोहर, रतन, चमुवा दिवाल के सहारा लेले ओह लोग के सामने गली के पार खड़ा रहन। उहाँ बढ़ई काम करत रहनस।

सब केहू इहो कहत रहे, "काम कर लोग। उहाँ के कुछ करलहूं बानी त लइका के; लगन के आ उनका मेहरारु के नानू। उहाँ के का कइले बानी? इहाँ त का ना हो जात बा। भूला गइलू ओह साल के बात। अभी ढेर दिन त ना भइल तिवारी मारके लगन के पार देले रहन। एही कामे खातिर नू। पइसा लेल गइल कामे करे खातिर नू? उहाँ के त दोसर कुछ कहत नइखीं। कामे करे के नू कहत बानी। के बाजे रुपया-पइसा ली आ काम करे के ना कही।"

लगन बो के कहनाम रहे, "हम ना जानत रहीं कि कहवाँ से कइसे रुपया आवत बा। हम त एह साल शादी के पछ में रहले ना रहीं। हमार बात मनले रहतीं तब का कहे के रहे।"

मन में आइल कि कहीं, "तोहरो के बोलबा के आ बात करके तब पक्का कइले रहीं, बाकिर आवत खा सुनल बात बात के ओठ से आगे ना बढ़े देलस।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"खेल बतियावत बाड़ू। तू ना जानत रहू कि रुपया कहवाँ से आ रहल बा ? तीन बे घरे आ तीन बे उहाँ घरे गइल रहन। आ बले तोहरा के चउका पर बनठा देल गइल रहे, ना बइठतीं। कतो चल जइतीं।"

"हमनी के इज्जत ना ह ?" राधे बोलल तब मूलचन कहले, "बड़ी इज्जत वाला भइल बाड़ आ तोहार इज्जत लूटा गइल। तोहरा बुझात नइखे कि हाकिम के चलते तोहार इज्जत बढ़ल कि घटल। तोहार उहाँ के कतना इज्जत कइनी कि जब जतना खोजल लोग बेभिझक दे देनी। जाके काम कर लोग। तोहरा बहिन-मातरी के कुछ कहले रहितीं तब तू कहित त नीको लागित।"

जे सामने रहे ऊ अनपेक्षित ना रहे। एक हद तक निराशाजनको ना रहे आ छाड़ा मरला अस। पाकल घाव अस। टस-टस टीस-टीस रह रह के करत रहे। जहाँ तक संभव रहे हम हालात के सामने घुटना टेकले बिना सामने फैलल धूँध के हटावे में लागल रहीं। ओ घड़ी हम धूँध मुठी में पकड़े में मदद करे वालन के नांव अपना भीतर तहिया के रखत अपना दुआर पर चल आइल रहीं।

भूतनाथ के दूकान पर सौदा खातिर गइल रहीं। ऊ कहे लगले, "लगन के ना चाहत रहे। हम त उनका घर हूं जाके समझवले रहीं। रउरा किहाँ वाला आराम उनका कहाँ मिली !"

"भइंसिया ना राखत रहींजा। बले बांह गइल रहन।" भूतनाथ के औरत किवाड के अलोत में रही।

"अइसे साफ सुथर, परिस्कृत, कागजी फूलन के गुलदस्ता बरिसन तक चमकीला आ खूबसूरत लउकला के बादो अंत में असली फूलन से हार जाला, ओसही झूठ के सांच के सामने माथा झुकावही के पड़ेला, उनको बुझाई, अबहीं कहला में बाड़न।"

"लगन त काम पर जाइत बाकिर राधे नइखे जाये देत।"

भूतनाथ के तरफ देखनी तब उनका पाछा टांगल कलेंडर पर पड़ल। सेर सवार, आठ भूजी दूर्गा के प्रभामंडल देखत मने मन कहनी, "माँ। हम तोहरा से पूछत बानी कि तू हमरा चारों तरफ किड़ा अस गरिबवन से काहे नाराज बाड़ू ? ओहनी के जानवरों से गइल गुजरल जिंदगी जीये खातिर बाध्य कर देले बाड़ू ! जिंदगी में मोड़ ले आवे वाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिंदगी में रंग ले आवे वाली रोशनियों के लोग नइखे देख पावत। ओह लोग में दोस्त-दुश्मन के पहचान करेके शक्ति नइखे रह गइल। तू शक्ति हऊ तब हमरा के शक्ति द ताकि हम ओह लोग के अंहार से अंजोर में ले आ सकीं।

लौटत खा, "आरे प्रणाम जी।" कान में आवाज पड़ल तब बगल में देखनी। शिवाधर के बाप रहन। कइ एक बेटा-बेटीन के बाप भइला के बादो अगर पेंशन के सहारा ना रहित तब जाने कि ....। रिटायर भइला के बादो गैर-सरकारी संस्था में काम करत रहन कि एक दिन हवा ठेक गइल। बहुत दवा करइले, अबो करावेलन बाकिर हवा ना हटल से दुवार-दलान पर बइठल रहेलन। आवत-जात आदमी से बड़ी नेह से बात करेलन।

हम उनका पास जाके बइठ रहनी तब ऊ कहे लगले, "लगन हमरा पास आइल रहन बाकिर हम ना रखनी हाँ।"

"शिवाधार राखत रहन। उहे ना रहल हाँ।" मन में आइल कि कहीं बाकिर लोकाचार के ख्याल करके ना कहनी। हमरा मन के दर्पन पर क्रोध के मइल मत बइठे, आपन चेहरा ऊ पहिलहीं अस देखत रहस, हमरा चुप्पी से उनकर भरम बनल रहे, हमरा का घटी रहे।

"बुझात नइखे कि आदमी का करे? लोगन के कतनो सुविधा देल जाय? लोग काम करे के नावे नइखे लेत। देर से आइल, देह चोरई कइल आ बात बेबात के बहाना बना के काम से नागा कइल आम बात हो गइल बा। एकरा चलते देश रसातल में जा रहल बा। एगो भयानक विस्फोट होई। केहू के एकर फिकिर बा? केहू काम करेवाला नइखे रह गइल। जे बड़लो बा ऊ झटपट लखपति बन गइल चाहता।"

ई बात हमरा से केहू बहस करे खातिर कहले रहित तब कहतीं, "लोग जागरूक हो गइल बा। दोसरा खातिर नइखे कमाइल चाहत। जब जान जाइत कि फल में हमरो हिस्सा मिली तब मन लगा के गांछ के सेवा करीत।" अउर इहो; "गीता में श्री कृष्ण के कहल कि तू फलाफल के विचार छोड़ के काम करत रह। ओकरा भूठ बुझात बा। आदमी के सामने एगो लक्ष्य त जरूर रहे के चाहीं। हर काम लक्ष्य के ध्यान में रख के करे के चाहीं। ठेसो लगला पर, संहर के उठ के बिना तनिको समय गंववले काम में लाग जाये के चाहीं।"

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, अक्टुबर १९९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सही खातिर गलत

रात के समय। ३-४ बजत होई। अमजद उठ के पलंग पर बइठ रहल आ चिल्ला - चिल्ला के अपना औरत के जगवलस।

"का ह जी, काहे अइसे करत बानी ?"

"दरवाज़ा खोल।"

"काहे खातिर ?"

"हम एहिजा ना रहब। ऊ इहंवे कतो छिपल बा। हमरा गर्दन के तरफ हाथ बढ़ावत रहे। झुक गइल रहे। हम देख लेनी हाँ आ उठ के बइठ रहनी हाँ तब कहत रहे कि तू एहिजा से भाग जा नात तोर जान मार देल जाई।"

ओकर औरत उठ के चिराग जलवलस आ चारों तरफ पलंग के नीचे कोना-भाड़ी में झांक झांक के देख के कहलस, "रउवा बेकार डर गइल बानी। इहंवा केहू नइखे। दरवाजा बंद बा, केहू आई त कइसे ?"

"हम कहत बानी त तोहरा हमरा पर विश्वास नइखे ? हमार आँख धोखा ना देसके। हमार कान धोखा ना दे सके। हमरा के जिंदा देखल चाहत होख तब दरवाजा खोल द आ हम भाग जाईं।"

ओकर औरत ओकरा से तंदुरुस्त रहे। मोट रहे। बरियार रहे। ऊ बिलकुल पिल पिली साहब रहे, गोर भभुका, लम्बा छरहर, मोम के पुतला अस।

ऊ रोवे लागल तब ओकर औरतिया दरवाजा खोल के, आवाज दे के अपना सास के बोलवलस आ सब बात कहलस।

ओकर मतारी समझावत कहलक, "दिया जरत बा। हमनी के इहंवे बइठल बानी जा। किवाड बंद रहे, ऊ कइसे आइल ? मान लेनी कि लुका गइल तब अब सामने कइसे आई, आइयो जाई तब हमनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सामने कइसे आई, आइयो जाई तब हमनी के सामने तोहरा तरफ ताके के हिम्मत करी, ताकि तब ओकर आँख निकाल लेब जा, मार के टुकड़ा-टुकड़ा कर देब जा-उनका के, तू कवना फेरा में बाड़।"

ऊ ना मानल। ओह घरी रोवत-धोवत, चिहा-चिहा के तीन... उहंवे रह गइल बाकी मौका मिलल तब उहंवा से भाग गइल।

ऊ भाग के जाके बधारी में रहे लागल। खेत पर से घरे ना आवे, उहंवे खाना मंगवा के खाय आ रात में केहू के दुआर दालान पर सुत रहें।

नौकर चाकर छाया अस ओकरा पाछा लागल रहत रहनस बाकिर एक दिन सब के आँख में धुर झोंक के हमरा घरे भाग आइल।

ऊ हमार भगिना रहे। स्नान से घरे अइला पर देखले रहीं। एक दम टीप-टाप से रहे वाला आदमी के मइल कुचइल पहिरले, दाड़ी-मुंछ बढ़वले देख के कुछ विचित्र लागल। दुवा बंदगी के बाद घर के भीतर चल गइनी तब हमार औरत चाय पानी दे के कहे लगली, "अमजद से भेंट भइल हाँ ?"

"हाँ दुवारे पर बइठल बा।"

"गौर से देखनी हाँ ? पूछनी हाँ कि काहे अइसन हालत बनवले बाड़न ? हम त ना पूछले रहीं चाहियो के कि आवते जिरह कइल कहाइत बाकी कवो अइसे ना आवत रहन। दुवारे पर बइठल बाड़न. बाकिर सुतले हाँ ना। चिहाइल रहत बाड़न।"

"हाँ जी। ना जानें का बात बा। कुछ खराब समाचार रहित तब अबले जरुर कह दीत। कुछ बात जरुर बा। चाय पिअवल हा।"

"ना।"

"तब बोलाव। चाय पिली।"

ओहिजे से आवाज देनी। नौकर कुट्टी काटत रेहे तहंवे से हुंकारी भरलस तब कहनी, "बाहर अमजद बाडून। उनका के बोला दे।"

ऊ कुट्टी काटल छोड़ के गइल आ अमजद के बोला के ले आइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमजद आके खाढ़ भइल तब ओकरा के बइठे के इशारा कइनी आ ऊ हमरा सामने कुर्सी पर बइठ रहल।

हमार औरत ओकरा सामने में टुल रख के, चाय-नास्ता परो... देली।

" कवनो खराब सामाचार नइखे नू ? "

"जी ना। "

" घर के लोग जानत बा कि तू इहंवा आइल बाड़ ? "

" जी। "

" तब काहे अइसन रुप बनवले बाड़ ? "

अमजद लज्जा गइल, कुछ बोलल ना। हमरा बुझाइल कि ऊ कुछ कहल चाहत बा बाकिर तय नइखे कर पावत कि कहीं कि ना कहीं ?

ऊ सिर झुका के नास्ता करे लागल। हम कुछ पुछल चाहीं तब बुझाय कि ऊ खुदे कहे के सोच रहल बा। कइ एक बार त हम मुँह खोलत खोलत रह गइनी बाकिर ऊ ना बोलल। गते गते नास्ता करत रहल।

पहिला वाला अमजद हमरा सामने ना रहे। मन में इहो संदेह उठल कि ई अमजद ह कि ना ? हमार अमजद नास्ता चाहे खाना पर टूट पड़त रहे। हं हं करे करे में साफाचट कर देत रहे। ओकरा पोर पोर से फुर्ती टपकत रहे। सामने वाला आदमी ठंढा मांस के लोथ अस लागत रहें। सुस्त। बेजान। हमरा मन में आइल कि कह दीं, " तू अमजद ना हव। हम तोहार मामा ना हईं। तू हमरा घर से निकल जा। " बाकिर एक-ब-एक साहस ना भइल। दोसरे सही। देखीं का होखत बा। सोच के चुप्प रह गइनी।

हम नौकर के भेज के बाजार से नाऊ बोलवावनी। अमजद के दाढ़ी-मुँछ बनववनी। ओकरा के स्नान करा के कपड़ा बदलववनी।

ओह दिन कवनो खास बात ना भइल। नौकर के समझा देनी कि रात में एकरा बगल में चौकी पर सुतिहे आ रात में कतहुँ जाये मत दिहे। फाटक के ताला अपना समान ही बंद करवा देले रहीं।

दोसरा, दिन अबही जाके स्पताल में बइठले रहीं कि एगो आदमी घबड़ाइल, चिहाइल आ कुछ खोजत आइल। आके प्रणाम कइलस आ पुछ नू देलस, " अमजद आइल बाड़न ? "

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ह। का बात ह ?"

"घर से कह के नइखन आइल। चारो तरफ खोज ही रहल बा। अउर एह से कि उनकर तवियत ठीक नइखे रहत।"

अमजद कहले रहे कि घर के लोग जानत बा। ई कहत ना कि घर के लोग नइखे जानत आ तवियतो ठीक नइखे।

"तू घर पर चल। हम फोन कर के आवत बानी।"

ऊ आदमी हमरा घर के रास्ता ना जानत रहे एह से ओकरा के साथे ले के स्पताल बंद कर के घरे चल देनी।

वारघर रास्ते में पड़त रहे। उहाँ पी० सी० ओ० बा। गइनी। एगो काल लगा के खड़ा रहीं। फिर उहंवे काम करे वाला एक आदमी के सब बात बता के; सीतल के जानेल नू ? हमनी के साथे पढ़त रहे। ओकरे भाई रहन। आ समझा के कि ओने से आवाज आई त कह दिह कि अमजद इहंवे बा। अपना मामा के घर पर। घबड़ाये के कवनो बात नइखे।

घर के नजदीक अइनी। दरवाजा पर बइठल अमजद साफ लउकत रहे। उहो हमनी के देखते रहे। हम रुक गइनी आ ओह आदमी से कहनी, "तू अब लौट। घरे जा। लोग के समझा दिह कि घबड़ाई मत।"

स्पताल से उहाँ तक आवे में आदमी अमजद के बारे में सब बतवले रहें। ओकर कहनाम रहें, "अमजद के दिमाग खराब हो गइल बा। केहू के मारस भा गरियावस ना खाली चुपचाप बइठल रहेलन। घरे ना जास। घर जाये के नाँव पर जान देवे लागेलन।"

दुआर पर गइनी तब अमजद नेहा धोया के बइठल रहे। साफ-सुथरा लागत रहे बाकिर चेहरा पर से खामोसी के बादल हटल ना रहे। आँख के पपनी भारी भारी आ पुतरी उदास लागत रहीस। बुझात रहे कि अपना चारो तरफ के वातावरण पर गौर से पहरा दे रहल बा।

"अमजद ?"

"जी।"

"तोहरा हांथ के बनावल मांस के शोरबा खइला ढेर दिन भइल। स्पताल में रह रह के याद आवत रहे आ मन ना लागल हा तब अइनी हाँ। चल, बनाव। हमहूं उहवे रहब। देखीं, तोहरा बनावे में का खासियत बा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"चलीं। एह में कवन बड़ बात बा।"

अमजद जाके चुल्हा के पास बइठ रहल। तब हमहूं कुर्सी पहंवे खिंच लेनी।

"अमज़द।"

"जी।"

"एगो बात पुछीं झूठ ना नू बोलब ?"

"झूठ काहे खातिर बोलब ? पूछीं।"

"देख। तू जानत बाड़ कि हम डाक्टर हईं। डाक्टर अउर वकिल से कुछ छिपा के ना राखल जाला।"

"तोहरा का भइल बा ? तू काहे घर से भगल ? तू काहे बधार में खात आ दोसरा के दुवार पर सुतत रह ? रातदिन, डेराइल-चिहाइल काहे रहत बाड़ ? बताव, तोहरा का भ गइल बा ?"

"हमरा कुछ नइखे भइल। कुछ दुखात नइखे। पेटो ठीक बा, हम ठीक बानीं।"

"ना तू ठीक नइख। हम डाक्टर हईं। आदमी के देख के रोग के अनुमान लगा लेवे के दिमाग राखिला। हम तोहरो रोग के अनुमान कर चुकल बानी बाकिर तू अपने से आपन सब बात साफ-साफ कह देबआ तब हमरा काम में आसानी होई। इलाज सटीक होई।

अमजद रोवे लागल। हमार औरत आ गइली। अकरा के इशारा कइनी हट जाये के तब ऊ उहाँ से चल गइली।

"हम घर में सुतल रहीं तब ऊ आइल। हमार गर्दन दबा देवे खातिर बढ़ल तब हम जाग के बइठ रहनी। ऊ गर्दन ना दबा सकल। औरत आ मतारी के रहलो पर रह रह के सामने आ जाय आ कहे कि इहंवा से भाग ना त जान मार देब। हम उहंवा से भाग गइनी। कत हूं रहिला ऊ सामने आ जाला आ कहेला कि घर जइबे तब तोर जान मार देब। अतने बात बा, अउर का कहीं ?

"तब ठीक बा। हम सब बुझ गइनी। बाकी ई बताव कि ओकर का नांव ह, जानत बाड़ ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ना।"

"घर गइला पर ज्ञान मारे के कहत रहे, ऊ ब गाँव छोड़ के काहे भगल ?"

गाँव से भागे के ना कहत रहे आ हम गाँव पर रहतो रहीं बाकिर माई ना रहे देलस तब हम का करीं।"

"कइसे ?"

माई से हम लाख कहनी कि हमरा कुछ नइखे भइल ऊ ना मानल। कबो तावीज, कबो पूजा, कबो ओझाई करावत रहल। दारु-शराब गंजा-भाग सामने देख से नाक फाटे लागत रहे।"

ओझा लोग के पिटाई बर्दास्त से बाहर हो गइल तब हम गाँव से भगनी। ना भगतीं तब ऊ जान से मार देवे के कहत रहनस। अबो याद कर के देह सिहर जात बिया।" ओकर आँख भर अइलिस। गलाभर गइल रहे।

वातावरण भारी भ गइल। ऊ मांस बनावे में लाग गइल। हम सोचत रहीं कि लोग सही खातिर गलत काम काहे करेला ? जाये के बा आरा से हावड़ा आ रास्ता धर लेल जाय बनारस के त आदमी पहुँची ? पोष्टकार्ड के डाकघर के पत्रपेटी में ना गिरा के जिलाधीश के कमरा में गिरा देवे से ऊ पता पर पहुँची ? पचीस पइसा के स्टाम्प टिकट के जगह पर एको रुपया के रेभेन्यू टिकट सटला पर लिफाफा, जेकरा पास लिखल गइल होखे, ओकरा पास जा सकी ? पता में एको अक्षर भा शब्द के गलती रही तब चिट्ठी ठीक जगह पर पहुँची ? ना गांधियो जी कहले बाड़न कि नीक काम खातिर साधन भा तरीका खराब ना अपनावे के चाहीं।

"ऊ इहंवो आइल रहें ?"

"ना। अबगे रउवा साथे के रहे ?"

हम बातावहीं जात रहीं कि एगो बिजली चमदे चमकल आ हम तनी अउर रुक के सोच लेनी।

"ठीक कहल। उहे रहे। तोहरा के खोजत आवत रहे। आज उनका के डांट के भगा देनी हाँ बाकिर अब अइहें तब उनकर हाड़-गोड़ तोड़ के भेजब। तोहरो लउकस तब हमरा के आवाज दीह।"

फिर ओह दिन अस्पताल ना गइनी आ दिन भर ओकरे बारे में सोचत गइनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात खा फाटक के ताला लगवा के, नौकर के भीतर ले जाके समझा देनी, "रात में नींद टूटी तब एने ओने डंटा पटक के, चिल्ला-चिल्ला के अमजद के सुना-सुना के कह दिहे। आव। आवत काहे नइख? का भगइल? आवत रहले हा अमजद के खोजे। अमजद सामनही त वाड़न। आव। चलल काहे जात वाड़? अबकी अइब त हाथ-गोड़ ना तोड़ देनी तब हमरा नाँव पर कुकुर पोसिह।"

रात में फाटक पर आवाज भइल। पहिले त महंटिअवले रहीं वाकिर जब साफ बुझा गइल कि हमरे फाटक पर लोग बा तब घड़ी देखनी। एक वजत रहे। उठ के बरमदा में आके टार्च जला के देखनी। पुछनी। देहात के लोग रोगी ले के आइल रहे पूछ-ताछ के, इतमिनान कर के नीचे उतरनी।

अमजद जागल रहे वाकिर चादर से बहरी मुँह ना निकलले रहे। रोगी के बगल के कोठरी में ले गइनी। ठेहुना पर घाव पाक गइल रहे। आह उहं करत रहे बाकिर रीम निकाल के, पट्टी बांह के, खाटी पर सुता के ओकरा के फाटक से बहरी कर देनी। ऊ लोग कुछे दुर चल गइल तब अमजद के सुना के कहनी, "ले जा लोग। नदी में फेंक दिह जा। वार बार कहत रहीं तब ना मानत रहन। बुझत रहन कि अमजद अकेले बाड़न। उनकरा के मदद करे वाला केहू नइखे।"

"के रहल हा, मामा?"

अमजद पुछलस तब ओकरा पास जाके कहनी, "उहे रहन। तोहरे खातिर आइल रहन। फाटक पर उनकरा के घेरवा के, ले आके कोठरी में उनकर पेट फाड़ के; हाथ-गोड़ तोड़ के मुआ के खढ़िया पर लदवा के, फेंके खातिर भेजवा देनी।"

"तब त ऊ हमरा पास अब ना आई? हमरा के तंग ना करी।"

"ना, हो ना। अब के आई? तोहरा के तंग करे खातिर?"

अमजद एगो लम्बा सांस खिंच के छोड़लस, जम्हाई लेलस आ भीतर ओकरा घर कर के बइठल भय के पंखेरु पाँख फड़ फड़ा के उड़ल आ अनंत आकास के अंदर खो गइल जइसे दूर पूरब में भोर के पहिली किरण के मुस्काते उरुवा ओरियानी तर से निकल के कतो भाग जाला।

आरा से बस में आवत रहीं तब निजाम से भेंट भइल रहे। लड़काई में ऊ हमरे साथे पढ़त रहे बाकिर अब पिरो में डाक्टरी करेला। बात चित के सिलसिला में ऊ एह कहानी के सुनवले रहे-साबित करे खातिर कि ज्यादातर रोगी आवेलन जेकरा कवनो रोग ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर उनकर बात साफ-साफ सुन लेल जाय आ सहानुभुति पूर्वक सोच समझ के व्यवहार कइल जाय तब बिना कवनो दवा-दारु के ढेर कामयाबी मिल जाय। इहे ना ढेर रोग गरहूआ जाला देहात में ओझाई के चलते।

अबो सोचत बानी तब निजाम के बात ठीक बुझात बिया। बबुर के पेंड़ लगा के आम के आशा करेवाला के लोग बेवुफ ना कहीं त का कहीं? सही खातिर गलत काम ना करे के चाहीं।

दियरो, बिहिया,
भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देशद्रोही

"दरोगा जी कायदा-कानून पर विश्वास ना करीं। काहिला कि कचहरी में पइसा आ पैरवी के वल पर कवनो अपराधी छुट्ट जाला। एही से हम भेजे के पहिले ही मार-मार के उनकर कचुमर निकाल दिला। हमरा हाथ से पूजइला के वाद लोग दूवारा अपराध करे लाएक ना रह जाय।"

अरे भाई! जिद्दी ह। ससपेंड होत रहल। खराव-से-खराव जगह पर वदलत रहल वाकिर आपन आदत ना छाड़लस। देखत नइख कि एह बुढ़ापा में दरोगा के दरोगे वा।

फर ना फूल सुखल दाढ़ि। वाल वच्चा केहू नईखे वाकिर दू-दू पइसा खातिर नीच-से-नीच काम करे खातिर तइयार रहेला।

जानत वानी? एगो वड़ी गुण वा एकरा में। वड़ आदमी के इज्जत खातिर जान देला।

वेवकुफ ह। तारीफ कर देला पर, शान पर चढ़ा देला पर कुछुओ कर सकेला।"

थाना के गेट में घुसे के पहिले मुखिया के सार उनका से कहले। दरोगा इहां आवे के पहिले उनका थाना पर रहन।

मुखिया एने थाना पर ना गइल रहन। नया दरोगा उनका घरे चौकिदर से सपटा भेजववले रहन वाकिर अवहीं ले भूसा ना आइल रहे। अगर मुखिया के सार ना आइल रहितन तव ऊ आजो थाना पर ना जइतन।

प्रणाम-पाती भइल आ परिचय जान लेला के वाद दरोगा कहलन, "का जी! अव हमनी के भूसो-घास खरीदे पड़ी?"

"काहे?"

"महिना दिन भगइल रउवा किहां सपटा भेजला, आउर पुछत वानी काहे?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ट्रैक्टर आवे के रहता नइखे। पानी-पनचहल से बंद बा। बैलगाड़ी कहिये टूट गइल। आदमी जन के रउआ सभे कुछ कहवे ना करव। हमनी के जमींदारी रहल ना कि दाब मानी।"

जानत बानी ? जमींदारी गइला के बादो हमार आदमी बहुत सीधा आज्ञाकारी रहनस। बाकिर अब .... ? कुछ मत पुछीं। ओहनी से बोलला के माने बा बेइज्जत भइल। जब मन करे सरकारी जमीन पर के पेंड़ काट ल, तलाब से मछली मार ल, फसल लूट ल, का मजाल जे केहू बोल दी। रउओ अइला कुछ दिन भइए गइल। सुनलहीं होइब की रउआ पहिले के दरोगा के का भइल रहे ? मानत बानी कि हमनिए के तरफ से गइल रहन, दू-चार गो फुहर-पातर बोलियो देले रहना तबो एकर का माने ? शासन खाली कानूने से चलेला ? अगर पुलिस-दरोगा के आतंके उठ जाई तब केहू के इज्जत बाँची ?

कहेलनस, "आजाद मुल्क के हर आदमी बराबर होला केहू-केहू के बेगारी ना करें।"

"अइसन ?"

"अउर का कहीं ? जब से अवधा गाँवे आइल बा; हमनी के इज्जत बचावल मुश्किल हो गइल बा।"

"ई अवधा के ह ?"

"हमरे गाँव के एगो मुसहर ह। पटना में ननिहाल हइस। उहें रह के पढ़ल बा। मुसहरन के साँप मारे-खाये से मना करेला। राड़न के दारू-ताड़ी पिये से रोकेला। सफाई से रहे के कहेला। ओहनिए के ना गाँव भर के अउरो दोसरो राड़न के मिला के नक्सलाइट बना देले बा।

कतना बेर ओकरा बिरोध में ऊपर तक खबर कइल-गइल बाकिर हमनी के छाती पर मुसरचंद बनल बइठल के बइठल बा।

"ओकरा से हाकिमो लोग डरेला। ऊ दरोगा-पुलिस के कुछ ना समझे।"

"छोड़ीं जी। ओइसने दरोगी लोग के चलते त सब चौपट हो रहल बा। कुल ना खंदान देखे के बा। सुनले बानी की ना कि पहिले दरोगा के बहाली में कतना पता लगावल जात रहे। खैर, छोड़ीं अब रउरो थाना के दरोगा से भेंट हो गइल बा। अब देखब तब कहब।" मुखिया के सार अतना जोर से बोलत रहन की हड़बड़ा के थाना के भीतर से मुंशी बाहर आ गइले। एक दूगो सिपाहियों लोग आ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरोगा इशारा से मुंशी के बोला के कान में कुछ कइले आ मुँशी एगो फाइल ले आ के दे देलन तबऊ ओकरा के ऊलट-पलट के देखे लगलन।

× × × ×

दुपहरिये से बुंदा-बुंदी होत रहे। आठ बजत होई। सुनसान हो गइल रहे। दरोगा, जमादार; हवलदार, सिपाही, चौकिदार आ मुखिया फे लठैतन के साथे जाके अवध के घर घेर लेले। घर का रहे माटी के दिवाल पर ऊख के पतई के पलानी। ओह घड़ी ऊ बड़-बुढ़, अनपढ़ लोगन के पढ़ावत रहे। खबर रहे कि ऊ खतरनाक नक्सलाइट ह बाकिर अतना आसानी से पकड़ा गइल कि दरोगा के बहुत अचरज भइल।

अवध के हेड़ी-बेड़ी से जकड़ के सिपाहियन के पहरा बइठा के तलासी लेला पर ओकरा घर में माटी अल्मुनियम के बर्तन आ एगो पैजामा, कुर्त्ता, गमछा, ताड़ के चटाई, टीन के ढिबरी आ कुछ साक्षर बनावे वोली किताब मिललिस। ओकरा पास से पेन, डायरी आ एक-डेढ़ रुपया के रोजगारी मिलल।

दरोगा सोचत रहन कि एकरा के कवना आधार पर खतरनाक कहल जाला? डायरी उलट-पलट के देखलन तब एगो पुरान ब्लेड गिरल। कुछ अइसन बात ना लिखल रहे जवन ओकरा के नक्सलाइट साबित करीत।

इहाँ पढ़े आइल लोगन के तलाशी लेला पर काम के कुछ ना भेंटाइल।

"कुछुओ होखे, ई कानून के अपना हाथ में लेवे वाला के हवन?" दरोगा के भीतर केहू बोलल आऊ अवध के जीप में फेंकवा के थाना पर ले आके पटकवा देले।

× × × ×

रात पर अवध के दाना-पानी से भेंट त नाहिए भइल भर पेट सुतहूँ के ना मिलल। भूख त बूंछ का आ नीन त खरहर का? मच्छड़न के नोचलो पर सुत जइतन काहे से कि पिछलो रात मुर्दघटिया में जाये पड़ल रहे-पड़ोसी के बाप के लास जरावे खातिर आ ऊ रात भर जागल रहन। सिपाही लोग उनका के रात भर सुते ना देल। जब सुतल चाहस तब कउनो ना कउनो जाना आके जरत सिगरेट आ बीड़ी से दाग देल। ऊ लोछिया के आँख खोले तब "असके ठेक गइल हा।" कह के चल जास जा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात भोर आ भोर.दुपहरिया हो गइल बाकिर केहू अवध के खोज-खबर ना लेल। बेचारा थाना के बरामदा में पड़ल-पड़ल झंखत रहे। हेड़ी-बेड़ी डाल के पारल अवध के देखनिहार पर देखनिहार लागल रहे।

ऊपरी बेरा दरोगा-जमादार लोग आइल। ऊ लोग कुर्सी पर बइठल आ ओकरा से सवाल पर सवाल करे लागल।

पहिले त ऊ एक-एक सवालन के जवाब देलस बाकिर बाद में बिना सिर पैर के सवालन के अंतहीन काफिला देख के चुप्पी साध लेलस। अब लोग कुछुओ पुछे ऊ बोलबे ना करे।

ढेर देर तक पुछ-पुछ के लोग थाक गइल आ ऊ " हां " " ना " कुछ ना बोलल तब दरोगा खिसिया गइले आ कड़क के पुछले, " तब तू कबुल करत बाड़ कि तु अपना दोस्तन के साथे मिलके लोगन के संघर्ष करे खातिर तइयार करत रह ? "

" लोगन के न्याय, सत्य आ खुशियाली के रास्ता बतावल कवनो अपराध ह का ? " सवाल के जवाब में सवाल सुनके अफसर लोग एक दोसरा के मुंह ताके लगले।

" कानून से बनल सरकार के विरोध कइल देशद्रोह ह ढेर भइल। ई सब छोड़। तू आपन खैर चाहत होख तब पुलिस के गवाह बन जा आ देशद्रोहियन के नांव बता द। "

" रउआ त आई० पी० सी० पढ़ले बानी ? "

" मतलब ? "

" देश आ सरकार में कवनो अंतर ना होखे ? "

अवध के जवाब से निरोत्तर हो गइले दरोगा तब खिसिया के बगल में खोंसल पिस्तौल हाथ में ले लेले आ ओकरा तरफ तान देले।

अवध आपन मुंह फेर लेलस।

" तब एही से तू लोग हिंसा मतलब खूनी क्रांति के बात करेल ? जमादार बात के फिर अपना तरफ फेरलन।

" रउआ सभे में कुवत नइखे शेर, बाघ, गीदड़ के हिंसक कहे के त कहिला खरहा; चुहा या हरिन के। महाजन, सूदखोर आ जोतदार लोग केकरा बल पर राज कर रहल बा ? आजादी के ४५ बरिस के बादो लोग थाना-पुलिस के नांवे सुन के काहे कांपे लागेला ? "

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरोगा के सवाल करेके आदत रहे जवाब देवे के ना। ऊ आक्रमण करेके जानत रहन। ऊ बेचारा बन गइले तब अपना पद-प्रतिष्ठा के बचावे खातिर बढले आ लगले अवध के अंधाधूंध पीटे, पीटवावे।

"ई बहुत मुश्किल से पकड़ में आइल बा। एकरा के खतम करे से काम ना सधी। अबहीं एकरा के हाजत में बन्द कर दीं। बहुत काइयां बुझात बा। पक्का गुरुघंटाल।" जमादार कहले तब ओह घड़ी अवध के जान बांचल आ ऊ हाजत में डाल देल गइल।

× × × ×

मुखिया जी दूगो आदमी के माथा पर भूसा से भरल सपटा लिअवा के थाना पर गइले। दरोगा उनका के हाजत तक ले गइले।

"सरकार ई त हमरा गाँव के ह।"

"त का बुझत बानी की काबुल में गदहा ना होखे? ई भुला गइल रहन कि कानून के हाथ कतना लम्हर होला। ओकरा से बाँचल मुश्किल ह। अब बोलस ना। कहवां चल गइल आजादी? हमरे के आई० पी० सी० पढ़ावे चलन रहन।"

"कतो नांव हइस?"

"भल पुछे चलल बानी। एक-दू जगह होखे त गिनाईं। हमनी के चुंटी काटे में विश्वास ना करीं। एक-दू बार महंटिया गइला पर लोग बुझेला कि दरोगा जानते नइखन। रउवो सभे के चलते कबो-कबो चुप रहे के पड़ जाला।"

"अब कवनो उपाय बा कि ना? एकदम हमार आपन आदमी ह। महाराज! एकरा अतना पढ़ल एने कवनो मुसहर नइखे। खबर त भोरहीं भईल रहे बाकिर रउवे काम के चलते देर हो गइल ह। बिना भेजले आवे के हिम्मत ना भइल हा।"

"एके उपाय बा।"

"का?"

"हम जब तक बानी ई गाँव छोड़ देस।"

"रउवा चलीं थाना में बइठीं। हम आवते बानी।"

दरोगा के चल गइला पर मुखिया हाजत से सटके अवध के समझावे लगले, "अबहीं हं कह दे। कुछ दिन के बाद अइहे। का ई इहंवा जिनगी भर रहे खातिर आइल बाड़न? जान देला से कुछ ना मिली।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के लोगन के अपना दुश्मन के पहचान ना रहे। लोग लुटात रहे तवो लुटेरन के चरन धोके चरनामृत लेत रहे। अपना जीवन में खुशीहाली ले आवे खातिर। अवध ओह लोग के बीच अवहीं बाके बइठे-उठे के शुरुए कइले रहे। अपना खातिर ना बाकिर ओह लोग खातिर ओकर गाँव में रहल जरुरी रहे बाकिर .... ।

"रउवा बड़ले बानी। हम का कहीं?"

मुखिया के जमानत पर अवध छोड़ देल गइल।

भोजपुरी वार्त्ता।
१ : २ । फरवरी ६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सही मंजिल

दरवाजा के बाहर पैरन के आहट "फुस-फास" के आवाज अलसाइल आँख मुंद के पड़ल पियरिया के आँख खोल देलस। गली में जात-आवत आदमी जानवर के पैर के आवाज समझ के कुछ देर चुपचाप छप्पर निहारत रहल बाकिर जब साफ हो गइल कि आवाज ओकरे दरवाजा पर खाढ़ लोगन के ह तब ऊ खटिया से उठल, आ जाके क्विाड़ के फांफर से झाँक के बाहर देखे लागल।

घाम के अगरम जनावे खातिर बेचैन भागत आइल उजास में तीन-चार आदमी बुझाइल। ऊ लोग ओकरे दरवाजा के अगल-बगल आ सामने खाढ़ रहे। रात ही आइल दोसरा गाँव के नया-नोहर औरत ऊ केहू के ना चिह्न सकऊ।

"बाबूधन के आवाज द जा।" सामने खाढ़ आदमी बगलगीर लोगन के सुनाये भर आवाज में बोलल तब ऊ स्थिति के अहसास कइलस, आ जाके बाबूधन के सुनाये भर आवाज में बोलल, "उठी! उठी ना।"

बाबूधन पर असर ना होत देख के ऊ बाबूधन के छू के जगावे लागल।

देह पर जनानी हाथ के स्पर्श पाके बाबूधन अचरज में पड़ गइल बाकिर तुरंते मन पड़ल कि काल्ह शादी कर के घरे औरत ले आइल बा।

रोजो भिनसहरे जाग के मालिक के दुवरा पर जात रहे। जानवरन के गोशाला में से निकाल के बाहर बांह देत रहे। कुट्टी डाल के तालाब तरफ जात रहे।

रोज जागे के आदत रहे तबो ना जाने काहे जगबलो पर जागे के मन ना करत रहे। आँख मुंदले रहे तबो कान में पड़ल चिरइन के आवाज से ओकरा बुझाइल कि भोर हो चलल। दरवाजा पर के "फुस-फास" के भनक ओकरा कान में पड़ल।

बाबूधन के सवालिया नजर पियरिया पर पड़लिस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"इहे त कहत बानी। बाहर कुछ लोग के भनक मिलल हा तब किवाड़ के भीतरे से देखनी थहनी ह। एक आदमी रउवे के जगावे के कहत बाड़न।" पियरिया के कहत देरी ना लागल।

बाबूधन कबो, केहू के बिगड़ले ना रहे। केहू के मतारी बहिन के खराब नजर से तकलहूं ना रहे। निर्भय होके ऊ उठल आ जाके दरवाजा खोल देलस।

छोटका मालिक के साथ दू-चार आदमी के खाढ़ देख के ओकरा कुछुवो ना समझ में आइल। छोटका मालिक रहितन तब समझ लित कि देर हो गइल आ ऊ बोलावे आइल बाड़न बाकिर इ साथ के लोग? एगो अनजान भय ओकरा भीतर घुस गइल!

"काह छोटका मालिक? का भइल? रउवा दउड़ाइल काहे बानी? कवनो खराब समाचार बा का? हम त खबर भेजवा देले रहीं कि एक-दू दिन काम पर ना जाइब।" बाबूधन गमछा से आँख-मुँह पोछत बोलल।

"राते हमरा दुवार पर पंचायत भइल रहे-तोहरे शादी पर बिचार करे खातिर। पंच लोगन के बात तोहरा तक पहुँचावे खातिर आइल बानी। तू हमरा घरे काम करेल आ हम तोहरा से उल्टा-सीधा ना कुछ कह दीं, यही खातिर साथे दू-चार आदमी आइल बाड़न।"

"पंच लोग के छोड़ी। रउवा का कहत बानी; से कहीं।" बाबूधन जानत रहे गाँव के पंच लोगन के। आंही आगा बेना के बतास।

"हमरा कुछ नइखे कहे के। हमार बात रहित तब तोहरा के गाँव छोड़के के कहित? तू का हमरा से पूछ के शादी कइल हा?"

"पंच लोग हमरा के गाँव छोड़े के कहल हा?"

"अगर अपना औरत के भगा द तब तू रह सकेल।"

"कवनो दोसरो राह बिया कि ना?"

"कुछ दिन खातिर तू हट जा। हम पंच लोगन के समझा-बुझा लेब तब तोहरा के खबर देब आ तू आ जइह। तोहरा औरत के भार हम लेत बानी।"

"मालिक के बात। आखिर मालिक नू हुईं। पंच लोग के का लागल? सुना देल कि गाँव छोड़ द। ठीके कहल बा कि बड़कां मारेला त दुलरबो करेला।" छोटकू के बगल में खाढ़ एगो चमचा बोलल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबूधन के बुझाइल जइसे पिघलल लोहा ओकरा कान में केहू डाल देल। ओकर माथा चक्कर काटे लागल। बात जोर से कहल गइल रहे आ दरवाजा के बगल में ठाढ़ पियरिया सुन लेले होई। ओकरा बहुत बुरा लागल। इहे बात ओकरा के अलग ले जाके गते से कहल गइल रहित तब शायद ओकरा अतना बुरा ना लागित। पियरिया का सोचत होई? ऊ कुछ तय ना कर पावत रहे।

एह बात के आशंका रहे बाकिर अतना जल्दी आ एह रुप में सामने आई ओकरा ना मालूम रहे। एकरा पहिलहुँ ओकरा जीवन में ग्लानी छोभ, पिड़ा बहुत आइल रहे बाकिर एक ब एक सामने आइल समस्या के अहँरिया तह पर तह ओकरा पर चादर अस डालत गइल रहे। ओकर सांस फूले लागल रहे आ ऊ चक्कर काट के गिर जाइत अगर समय पर निकल के पियरिया ओकरा के थाम्ह ना ले ले रहित।

पियरिया बाबूधन के अपना पीठपर उठा लेलस। "अब रउवा सभे जाई। रहे या जाये के निर्णय हमनी के करब जा। आदमी कवनो जानवर ना ह कि केहू हांक दी, भगा दी।" कहत ऊ घर के भीतर जाके दरवाजा खटाक से बन्द कर लेलस।

जइसे कवनो तारा टूटे आ भक दे अंजोर हो जाय, जइसे आवत-जात लोगन से भरल गली में चरत, मुर्गी के बच्चा के कवनो चिल्ह भपटा मार के लेके उड़ जाय, पियरिया बाबूधन के छोटकू के दल में से निकाल के घर के भीतर कर लेलस।

छोटकू के एह में आपन अपमान बुझाइल। "आज रात में ना भगब जा तब काल्ह बुझाई।" कहत फुफंकारत ऊ घर के तरफ मुँह कर के थूक देलन।

"काल्ह करे से आज कर आज करे से अब।" छोटकू के बगलगीर बोलल। छोटकू अपना अगल-बगल देखे लगले।

"ठीक कहल बा कि शुभ काम में देरी ना करेके।"

"मुर्दा के घर में राखल ठीक ना होखे।"

"अबहीं त अकेले बाड़नस बाद में कवनो दुशमन के छत्र छाया मिल जाई तब?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गाँव में कवनो छायादार पेड़ त नइखे बाँच गइल आ ठूंठ दिन भर में छायादार ना बने।" छोटकू बात के लतर के दरूरे ना देल चाहत रहन। ऊ जानत रहन कि एहनी के त आग लगा के हाथ सेंकल चाहेलेस। जानली चिलम जिनका पर अंगोरा बोझाला। अगर धमकिए प भाग जइहेंस तब. हरे लागी ना फिटकिरी आ रंग चोखः हो जाई।

पियरिया बाबूधन के खाट पर सुता देलस। बाबूधन के आँख खुलल रहिस। चुपचाप ताकत रहे। पियरिया जाके बगल के घइला में से ले आके कटोरा के पानी बढ़वलस तब बाबूधन उठ के बइठ गइल आ गट-गट एके सुर में कटोरा खाली कर देलस।

पियरिया बाबूधन के बगल में एगो लम्बा सांस छोड़त बइठ गइल। ऊ रात ही इहंवा आइल रहे बाकिर जे सोच के आइल रहे ऊ पूरा होत ना लउकत रहे। ओकरा ई बात मालूम रहे कि गाँव के लोग पंसद ना करी आ एगो तूफान खड़ा कर दी। तबो ऊ एह बिश्वास पर आइल रहे कि आदमी के विश्वास समयानुसार बदलत रहेला हो सकेला कि गाँव के लोग बाबूधन के मजबूरी सोच-समझ के माफ कर दे। ओकरा अब बुझात रहे कि गाँव के लोग आँख रहते आंहर, बज्र बहिर आ पत्थरदिल होला जवना पर कवनो आँसुआं के असर ना होखे, अइसन उकठल काठ होला जवना पर बरिसत सावनो के असर ना होखे।

पियरिया के बाप निठाह गरीब रहन। ओकर उमिर १८ बरिस के भइल रहे तबे से ओकर बाप ओकरा शादी के जोगाड़ बइठावे में पड़ गइल रहन। ऊ हित, नाता, यार-दोस्त, गाँवघर में हमेशा बात चलावत रहत रहन बाकिर सगरो बात पाँच-दस हजार रुपया के फासला पर रह जात रहे। केहू के चाय-दुकान में जूठ बर्तन साफ करेवाला लइको पाँच-दस हजार माँगत रहे।

ऊ रात दिन एही चिंता में रहन कि एक दिन हिरणपुर हटिया में उनका रतन से भेंट भइल। रतन उनका फुफेरा भाई के गोतिया भाई रहे। रतन के बाजार ना करेके रहे। ऊ पियरिया के बाप के साथे दिन भर रहल। सांझ खा रतन अपना खर्चा से खइलस-खिअवलस आ पियरिया के बाप से बोलल, "आज हमहू तोहरे घरे चलब।"

सुन के ओकर बाप चिंता में पड़ गइले। घर में हीत के खिआवे लायक कुछ ना रहे। गरीब-दुखिया के गाँव रात में कुछ उधारो-पांइच मिलल मुश्किल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"का सोचे लगल ? हमनी के त खाइये लेले बानी बा। जाके सुतही के नू बा।" कहत रतन पिथरिया के घरे आइल रहे।

रतन पहिले पियरिया के बाबू के फिर माई के समझवले रहे। "ना नव मन तेल होई ना राधा नचिहें। जवान लड़की कतों ऊँच-नींच लात पड़ जाई तब नाक कट जाई। लोग का कही ? दूर शादि करे में का हरज बा ? रोज-रोज आवे जाये से कुछ मिल जाई का ? दूर सही ओकरा तकलीफ ना नू होई। .. लड़का ऊ तरफ लड़की कम बाड़िस, एही से धनी लड़का मुफ्त में मिल रहल बा। मंगनी के बैल के दांत ना देखल जाय।

पियरिया बाप-माई के ना चाहियो के शादि देवे खातिर तइयार होत देख सुन के मने मन बहुत रोवल रहे, बाकिर कुछ बोल ना सकल रहे।

हिरणपुर शिवमंदिर में शादि भइल रहे। पियरिया माँ-बाप, भाई-बहन के साथ बस घरे खातिर बस-स्टैंड गइल रहे कि कुछ आदमी के साथ दरोगा जी फोर्स लेके आइल रहन आ सब केहू के थाना ले गइल रहन।

दरोगा जी पूछ-ताछ के छोड़ देले रहन।

मुखिया जी आइल रहन आ जेकरा से शादी भइल रहे ओकरा गाँवघर के पता लगावे तक पियरिया के रोक राखे के कहले रहन!

बाद में ओकर पता ना चलल रहे आ पियरिया के शादी वास्तविकता में ना बदल सकल रहे।

मुखिया जी पियरिया के घरे आवे-जाये लागल रहन। ऊ कहत रहन, "एकर शादी हम कराइब, तू लोग बेफिकिर रह।" ऊ इहो कहत रहन, "पियरिया के भाग अच्छा रहे ना त ऊ ले जाके कवनो कोठा पर बेंच दीत।"

पियरिया मुखिया जी के अनुशंसा पर पार्टी में घुसल रहे।

असलियत जान के ओहू दिन पियरिया कांपे लागल रहे आजो याद करके देह गणगणा गइल।

पियरिया पार्टी प्रशिक्षण के समय बाबूधन से परिचित भइल रहे। ओकरा आ बाबूधन के जीवन स्तर, ध्येय में एगो जात के छोड़ के कवनो अंतर ना रहे। दूनो गरीब रहनस। दूनो के ध्येय रहल गरीबी मिटावल। बाबूधन के मधुर स्वभाव, साफ बात-विचार, मोहक आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेकपट व्यवहार ओकरा पसंद पड़ल रहे आ ऊ एगो अमूर्त आकर्षण के बस में होके बाबूधन के नजदीक से नजदीक होत चल गइल रहे।

बात छिपल ना रह सकल रहे। पार्टी स्तर पर बात चलल रहे। एकरारनामा लिखवा के दूनो के शादी पार्टी कार्यालय में करा देल गइल रहे।

" कुछ सोचत बाड़ू का। "

"सोचे के का बा ? हम त राउर हालत देख के सोच में पड़ गइल रहीं। "

" हम खुद अपना पर सोचत बानी त हमरा अचरज होत बा बाकिर तू फिकिर मत कर। हम एह गीदड़ भभकी के खुब जानत बानी। " बाबूधन जोर से खंखरलस, उठल, दरवाजा खोललस आ बाहर मुँह करके, गर्दन घुमाके " आक थू " थूक देलस।

बाबूधन बाहर जाके झाड़ी के पास बइठ रहल। लौटत खा सामने के गली से निकलत पार्टी सचिव पर नजर पड़ल। मुँठी बंहल दाहिना हाथ हवा में उठ गइलेस।

" बड़ी भोरे भोर। सांझे आवत खा कुछ ना कहले रहीं। " बाबूधन के सवाल सुन के सचिव मुसकइले।

" पार्टी के निर्णय रहे, तोहरा के ना जाने देवे के। तोहरे पाछा पाछा आइल रहीं। रमेश्वर जी घरे ठहरल रहीं। रात के पंचायतो के खबर बा। "

"आईं। बइठीं। " कहत बाबूधन घर के भीतर घुसे लागल तब सचिव कहले, " ना। बइठे के समय नइखे। साथी के बोल, घर बंद कर के चलस राह में बात होई। "

" ई त भागल कहाई ? " बाबूधन पूछलस।

" के का कही ? सोचे के समय नइखे। पार्टी के इहे आदेश बा। तोहरा आजे पटना जाये के बा आ साथी के अकेले छोड़ल ठीक ना होई। "

दूनो के विश्वास रहे कि पार्टी के निर्णय ओहनी के फायदा के राह प्रकाशित करी। अब तक ओहनी के या दोसरो कवनो साथी के विश्वास कइ एकबार डगमगाइल रहे बाकिर देखल गइल रहे कि पार्टी के निर्णय ना माने वाला घाटा के दलदल में फंस गइल रहे आ ओकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोजों-खबर लेवे वाला केहू ना रह गइल रहे जबकि पार्टी-निर्णय के साथ रहेवाला देरे से सही मंजिले मकसूद तक पहुँचे में कामयाब हो गइल रहे।

"कवनो दोसर उपाय ना रहे?" बाबूधन राह में सचिव से पूछलस।

"रोगी के राय पर डाक्टर ना चले। मौतो के दर्द से भयानक होले कबो कबो ओकरा से बचे के उपाय। तोहरा लोग के शादी गलत ना रहे आ पार्टी बाधक ना बनल रहे बाकिर एह बात के मुद्दा बना के लड़ाई पड़े के राय नइखे। बंजर भूमि पर पड़ल बीज अंकुर ना पावे। अबहीं हमनी के गाँव के लोगन के मानसिकता बदले खातिर समय चाही। जानत बाड़ नू कि समय कइसनो घाव के भर देला। इहंवा रहला पर तोहनी लोग के व्यक्तिगत लड़ाई में पड़ जाये के पड़ित कि ना?

"जी।" बाबूधन के मुँह से सहसा निकल गइल। ऊ सचिव के बात मान के घर से चल देले रहे। सोचले रहे कि रास्ता में ओकरा सवालन के गीध सचिव के नोच के लहू-लुहान कर के गिरा दिहें आ ऊ फिर लौट के आके छोटकू के सामने छाती तान के खड़ा हो जाई बाकिर सचिव के बात से लाजवाब हो गइल।

"समझ गइल नू?" हम भागत नइखीं। तू हमरा के गलत मत समझिह। बाबूधन के नजर पियरिया से कहलसि। पियरिया के चेहरा पर उभरत स्वीकारात्मक चमक के देख के बाबूधन के मन में मीठ जल के सोता फुटल।

"सही मंजिल पर समझदारी के साथ चलला के जिंदगी कहल जाला।" सचिव के कहते तीनो के नजर मिलल आ हंसी के फूल खिल उठल।

अगरम : बक्सर

फरवरी १९९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीख

गर्मी के सुबह। हवा के दूर दूर तक कतो नामो निशान ना रहे। सूरज के लाल चक्का निकलते के साथ आग बरिसावे के शुरु कर देले रहे। रुकल हवा जम के उमस बन गइल रहे। रहे त ओह दिन अउर दिन से जरुरे ज्यादा गर्मी बाकिर लोग ओने ध्यान ना देले रहे। आवेवाली घटना के खबर प्रकृति पहिलहीं जना देले बाकिर आदमी समझेला तब जब कि घटना घट जाले।

रामाधार गाँव-जवार के दोषी, जुल्मी, उत्पीड़क; अत्याचारी लोगन के आँख के किरकिरी बन गइल रहे। थाना, ब्लाक ना एस०डि०ओ० एस० पी०, कलक्टर तक के गैर कानूनी काम के विरोध समय समय पर तन के खड़ा हो गइला के चलते ऊ लोगन के फुटलियो आँखे ना भावत रहे। ओकरा पास बासगीत जमीन के अलावे खाली कट्ठा-दू-कट्ठा खेत रहे बाकिर अपना मरल बाप के कहल मान के ऊ केहू के हरवाही, चरवाही ना करत रहे। ओकरे अस दस-बीस गो अउर नवयुवक रहनस। ऊ ज्यादा तर रोजदारी पर ना ठीका पर लेके काम करत रहनस। एकरो चलते गाँव-जवार के जोतदार लोग ओकरा के गोरखुल के काँट समझत आ काट, सुखा के जरा देवे के फेर में लागल रहत रहे।

स्वास्थ्य उपकेंद्र होखे या स्पताल उहां पर डाक्टर के ना अइला आ दवा के बेंचवा के बंदर बांट कर लेला के ऊ बराबर शिकायत करत रहत रहे। डाक्टर लोगन के साथ साथ ओह लोग के जात के गाँव-जवार के लोग रामाधार से बदला लेवे के मौका के ताक में लागल रहत रहे।

अइसन बात ना रहे कि ऊ अपना चारों तरफ मंड़रात खतरन से अपरिचित रहे। कइ एक बार ओकरा पर वारो हो चुकल रहे। ऊ बाल बाल बच गइल रहे बाकिर ओकरा भीतर घुस के दहशत डेरा डाल देले रहे आ ऊ सुतलो में एकरे सपना देख के चिहुँक चिहुँक के उठ जात रहे। बाकिर अब ओकर आदत हो गइल रहे अनीति, जोर, जुल्म के विरोध में खड़ा भइल। कवनो शराबी भोरे उठके तय करेला कि आज ना पिअब बाकिर होत सांझ ओकर पैर भटठी के तरफ चल देला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरो इहे हाल रहे। ऊ मने मन तय करी, अपना आ अपना परिवार के सामने आइल कठिनाइयन के देख-सुन के कि अब से केहू कुछ करे हम ना बोले जाइब बाकिर जब कवनो दुखी आदमी सामने आके रोवे-कलपे लागेला तब ऊ उठ के चल देला। ओकरा अंदर बइठल पति, बाप आ भाई ओकरा के रोकबो करेला बाकिर ऊ जाके आग में कुदिए जाला। चाहे ओह आग के केहू लगवले होखे, भले बोतावे में ओकर हाथ-गोड़ जल जाय बाकिर ऊ आग बोतावे में जुट-जाला।

गाँव-जवार के जोतदार, स्वार्थी लोग आ पुलिस-प्रशासन द्वारा गरीबन पर होखे वाला तरह तरह के सामाजिक, आर्थिक अत्याचार, ज़ुल्म आ दमन के बिरोध बराबर संघर्ष करेवाली संस्थन के स्वर में स्वर मिला के ऊ बड़ बड़ जोतदार, स्वार्थी लोग आ पुलिस-प्रशासन के मनमानी, जोर-ज़ुल्म, अत्याचार आ शोषन के रास्ता में रुकावट बन के खड़ा हो जात रहे। इहे कारन रहे कि ओकरा के जानेवाला ज्यादातर लोग ओकरा के सनकी समझत रहे। लुटेरन के परन के धुरी लेके माथे चढ़ावे वाला, दुख-पीड़ा के पूर्व जन्म के फल मान के संतोष करेवाला लोग ओकरा के समझावे लागत रहे। तब ऊ ओह लोग के नादानी पर हंस के चल देत रहे।

रतन रामाधार के पड़ोसी रहे। ऊ ट्रेन में पाकिटमारी, थाना-पुलिस के दलाली आ भारत-नेपाल के बीच तस्करी के काम करत रहे। लइकन के चलते एक-दू बार ओहनी के मेहरारून में गाली-गलौज हो गइल रहे आ आइब-जाइब, बायन-पेहानी सब बंद रहे।

मुखिया-चुनाव के चर्चा शुरु हो गइल रहे। गाँव के मुखिया जगपति सिंह रहन। गाँव के जेठरइयत जगपति सिंह के विरोध खड़ा होखे वाला के जमानत तक जप्त हो जात रहे। दुआर पर रहस या बाजार में ऊ बराबर गजेड़ियन से घेराइल रहत रहन। खेत-बधार त सब से ज्यादा रहले रहे दू दू गो लइका जंगल के ठिकेदारी करत रहनस। जमींदारी गइला के बादो मुखिया गिरि के चलते उनका रोबदाब में कवनो कमी ना आइल रहे।

रामाधार एह चुनाव में उनका विरोध मुखिया के उम्मिदवार होई; एह बात के पक्का प्रचार हो गइल रहे। ऊ समझत रहन कि एकर विरोध बड़ी महंगा पड़ी। ऊ कवनो किमत पर एह चुनाव के जीतल चाहत रहन। रातदिन माथापच्ची कइला के बादो उनका कवनो रास्ता ना लउकत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़का लइका घरे आइल रहे। रातदिन चिंतित रहत बाप के देख के ऊ अपना मातरी से पूछलस। जगपति सिंह के चिंता के कारन रामाधार के सुन समझ के ऊ मने मन हंसल आ मौका निकाल के अपना बाप से बात कइलस।

रतन गाँव के बहरी नाला पर पहुँचल रहे कि तीन-चार आदमी ओकरा पर लाठी लेके पड़ गइल। ऊ लोग ओकरा के मार के गिरादेल। दू-चार लाठी अउर लगा के "आगे से खैर चाहत होख तब रामाधार के राह में रोड़ा मत बनिह।" कहत चल गइल।

रतन अबहीं कुछ सोचे आ उठ के बइठे तली से ऊ फिर लौट आइल रहनस। एक आदमी ओकरा छाती पर चढ़ के बइठ गइल रहे। दू आदमी लाठी ओकरा नरेटी के ऊपर नीचे रख के दबावत पूछलस, "का मन वा ? तू रामाधार के साथ देब कि ना ?"

रतन ओहनी के नजदीक से देखला-सुनला के बादो पहचान ना सकल। इहो कम लाल दुफक्कड़ ना रहे। ऊ समय के साथ समझौता करे के खूब जानत रहे। ऊ नरम से नरम आवाज में चिरौरी करत पूछलस, "हम उनकर का बिगड़ले बानी ?"

"ई सब हमनी के नइखीं जा जानत। ऊ हमनी के साथी हवन। हमनी के उनके कहला से आइल बानी जा। तू उनकर विरोध ना करे के बात गच्छ लेब तब त बानी के तोहरा के आज छोड़देब जा नात ....।" फिर लाठी के दबाव नरेटी पर बढ़ गइल रहे।

"हमरा उनका से कवनो विरोध नइखे। ई बात दिगर वा कि हम उनका अस कांट-कुस में ना चल सकीं आ सुविधा के जिंदगी जी रहल बानी। रउवा सभे हमरा के मत मारीं आ उनका से कह देब कि बहरी बहरी हम जेकरा तरफ से बात करीं बाकिर भीतरे भीतर उनके जय मनाइला। का हमरा अतनो नइखे बुझात कि ऊ कुल अपने खातिर नइखन करत। ऊ बदलाव लइहें तब हमरो फायदा होई, ई हम खूब जानत बानी।"

रतन के बात पर ओहनी के विश्वास हो गइल रहे आ सब जेने के तेने अंहरिया में घुस गइल रहनस।

रतन के सपना अस लागल बाकिर साँचो रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदशल, गिरत भहरात रतन जगपति सिंह के दुवार पर पहुँचल तब उहाँ पर गंजेड़ियन के भीड़ लागल रहे। जगपति सिंह के प्रशंसा करे में लोग एक दोसरा के पछाड़ देत रहे। रतन के एह हालत में देख के सब केहू चुप हो गइल। सब केहू के नजर रतन पर जाके जम गइल।

"का हो रतन, ई का?"

"प्रणाम मुखिया जी!" कह के रतन फफक फफक के रोवे लागल आ रोवते-सुसुकत सब बात कह ले गइल।

सब केहू मिल के तय कइल कि देर कइल ठीक नइखे आ ओही घड़ी जगपति सिंह डोली में बइठा के रतन के स्पताल में भेजवा देले। साथ में डाक्टर के नाँवे एगो चिट्ठियो रहे कि गोरखुल के कांट गड़ गइल बा, पक्का आपरेशन कर दे कि पूरा पूरा निकल जाय। हम भोरे आके मिलब। थाना स्पताल के बगले में रहे आ उहां दरोगा के पहुँचत देर ना लागल-डाक्टर के खबर कइला पर।

रतन दरोगा के सामने बेयान देलस, "हम बाजार से आवत रहीं तब गाँव के बहरी नाला पर हमरा के रामाधार तीन-चार आदमी के साथे घेर लेले रहन। ऊ लोग हमरा के लाठी से मारे लागल रहे। हम अचानक भइल हमला से घबड़ा गइल रहीं तबो भागे के चहनी बाकिर भागे के के कहो लाठी के मार के चलते हम खड़ो तक ना रह सकल रहीं आ गिर गइल रहीं। अंहरिया हो गइल रहे। हमरा गिर गइला पर हमरे गाँव के रामाधार हमरा छाती पर बइठ गइल रहन आ उनकर दूनो भाई लोग हमरा नरेटी के नीचे-ऊपर लाठी रख के दबावे लागल रहे।

अंहार रहलो पर हम ओह लोग के पहचान लेले रहीं। हम ओह लोग से कउनो रोवनी-गवनी बाकिर ऊ लोग हमरा के छोड़े खातिर तइयार ना भइल रहे। ऊ लोग कहत रहे, "ढेर दिन से तोहरा ताक में रहीं जा। आज तोहार काम तमाम कर देवे के बा। रही बाँस ना बाजी बांसुरी।" ओही लोग के कहला मुताबिक हमार जूर्म रहे जगपति सिंह के विरोध ओह लोग के कहला के बादो काम ना कइल।

हम अब जिनगी से निराश हो गइल रहीं कि दू-तीन आदमी हल्ला करत दउड़त-आवत बुझाइल तब रामाधार अपना भाई भतिजा के साथे भाग गइलन। पहिले आवेवाला लोगन में हमरे गाँव के रामेश्वर ओझा; रंगुनी ठाकुर आ अजगुत सिंह रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागत भागत रामाधार कहले रहन, "आज त बांच गइल बाकिर थाना-पुलिस भइल तब फिर तू जनी ह। हमार दोष ना।"

रामाधार के चाल-चलन ठीक ना ह। उनका आ उनका भाइन के डर से बड़ बड़ लोग कांपेला। आवेबाला लोग ओह लोग के जरुर पहचान लेले रहे बाकिर हो सकेला ओहनी के डर के मारे गवाही ना दे।"

फिर फुट फुट के रोवत दरोगा के पैर पकड़ के रतन बोलल, "सरकार हम गरीब आदमी ठहरनी। कमाना बा त खाना बा। बाबू-भइया के वर-वेगारी, मर-मजदूरी कर के काम चलाइला। रामाधार पर कुछ मत करब ना त हम लौट के जाइब तब ऊ हमरा के जिंदा ना छोड़ी।"

दरोगा-डाक्टर के आँखे आँख में बात भइल रहे। डाक्टर जगह वेजगह पट्टी बांह देले आ गंभीर से गंभीर घाव के इंज्युरी रिपोट बना देले।

दरोगा भोरे भोर पहुँचलन, जगपति सिंह के दुवार पर चाय नास्ता भइल आ रतन के वेयान पर केहू से बिना गवाही लेले रामाधार के उनका घरे पर पकड़वा के चलान कर देले।

बड़ी कोट-कचहरी, सभा-जुलुस आ हल्ला-गुल्ला कइला के बाद रामाधार छुट्ट के आइल रहे। अबहीं महिनो दिन ना भइल होई कि आज............।

बी० डी० ओ०, सि० ओ० आ सहकारिता प्रसार पदाधिकारी जमादार हवलदार आ चार सिपाही के साथ रामाधार के दुवार पर जीप से उतरले।

आवाज सुन के रामाधार घर के बहरी आइल तब सि० ओ० के इसारा भइल आ ऊ उनका नजदिक गइल। सि० ओ० के दुसरका इसारा पर सहकारिता प्रसार पदाधिकारी अपना वेग में से निकाल के रामाधार पर निकलल कुड़की जप्ती के वारंट के पढ़ के सुना देले।

जगपति सिंह तीन-चार आदमी आ चौकिदार के साथ अइलन। तीनो-चारो आदमी रामा-कुदाल देले रहे।

"मुखिया जी इनका से कहीं कि बकाया मालगुजारी दे देस नात इनकर चउकठ-केवाड़ त निकलबे करी इनका भइंसियो के ले जाइब।" सि० ओ० कड़क के कहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कइसन मालगुजारी ?" रामाधार चिह्राइल पूछलस।

"तू नइख जानत ?"

"ना।"

"तोहरा खेत-बधार नइखे ?"

"एक दू कट्ठा।"

"तब ई वारंट झूठा बा ?"

"ई रउआ जानी।"

"हम पूछत बानी कि रुपया देबे कि ना ?" बी० डी० ओ० पूछलन।

"देखीं। बे-ते मत करीं। कायदा से बात करीं। पढ़ल-लिखल आदमी ठहरनी आ .... ।"

"तू आपन बकाया मालगुजारी दे द। बात छिले से रुखरे होले।" मुखिया रामाधार के समझावत रहन।

"मुखिया जी ! रउवा से का छिपल बा ? बीस बरिस से ऊपर भइल हमरा घरे बंटबारा भइला बाकिर कागज आज तक एके में बा। कतना बार तगादा भइल आ कतना बार हम कहनी कि हमनी के कागज अलग कर दीं। कहाँ केहू सुनत बा ?"

"तब ना देल जाई ?"

"रउवा सब केहू के बोलवाईं। लोग आपन आपन हिस्सा दे देबे। हम पहिलहीं देवे के तइयार बानी।"

"उहे कामवा हमनी के आवे के पहिले कर सकत रह।"

"हमरा से ना नू होई। होखे मान के रहित तब आज तक बाकी ना रहित।"

"जिला भर में नेतागिरी करेलन आ घरहीं पाँच आदमी के नइखन जुटा सकत। बहानाबाजी में गलथेथई में एकरा से के सकी।" चौकीदार के देखत सि० ओ० कहले, "तू लोग आपन काम कर। ई रुपया ना दिहें।"

चौकिदार के आदमियन के साथे बढ़त देख के रामाधार बोलल, "चौकिदार चाचा ! तू जानतू बाड़ कि हमरा के दबावल जा रहल बा। कवनो झूठ बात कहत होखीं तब कह। गैर कानूनी काम हो रहल बा। तू लोग एकर साथ मत द।" फिर सि० ओ० के पास जाके ऊ कहलस,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" देखीं। ई अच्छा नइखे होत। रउआ कायदा-कानून के अपना हाथ में मत लीं। कानूनन जे उचित होखे करीं, हमरा अउर कुछ नइखे कहे के। "

" हम तोहरा से कानून सिखे नइखीं आइल। जमांदार साहब का देखत बानी। धर के जीप में दइठा दीं। जानत बानी नू कि कतना बदमाश आदमी ह ? "

जमादार के इसारा पर सिपाही लोग रामाधार के पकड़ल चहलस तब ऊ पाछे हट के भागल चहलस बाकिर भाग ना सकल। पकड़इलो पर छोड़ावे के कोशिश कइलस तब सिपाही लोग बंदूक के बट से ओकरा के थुरे लागल।

जगपति सिंह बी० डी० ओ०, सि० ओ० के तरफ मुँहकर के कहलन, " रउवा सभे इहां मार-पीट करे खातिर आइल बानी तब हम जात बानी। रउवा सभे के जे मन करे से करीं। रउवा सभे आज आइल बानी फिर चल जाइब। हमनी के त रात-दिन साथे रहे के बा। " ईहे ना ऊ जाके रामाधार के छोड़वा देले।

रामाधार जगपति सिंह के बढ़िया से पहचानत रहे। ऊ आज तक उनका क्रोध के कवनो परवाह ना कइले रहे बाकिर उनकर दया देख के ऊ कांप उठल आ पलखत पाके चरन पर चढ़ के छप्पर पर चढ़ गइल।

रामाधार छप्पर पर खड़ा होके बी० डी० ओ०, सि० ओ० के एह तरह के नजायज जोर जुल्म कहला के विरोध में उहां जुट्ट आइल गाँव के लोगन के सुना सुना के बुरा भला कहे लागल।

सि० ओ० बटोराइल लोगन के आँख में गते गते उतरत लाली के देख भीतरे भीतर डर से आ बहरी बहरी क्रोध से कांपत जमादार के आदेश देलन, "फायर ! " फिर का सोचे के रहे ? सिपाही लोग अंधाधुंध गोली चलावन आ दिन दहाड़े रामाधार के मार के छप्पर पर गिरा देल। रामाधार कोहंड़ा अस ढ़िमिलात छप्पर पर से चापाकल के ऊपर गिरल। कवनो बर्बर आततायी के अपना प्रतिरोध के पूरा हिंसा से कुचल देला पर निकल सकेले ओइसने दहशत; नफरत आ प्रतिकार के साथ-साथ अपना असमर्थता, असहायता के प्रकट करत आ एगो तेज, भयानक, धारदार आ चमचमात चीख सुनाई पड़ल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के लोग जेने के तेने चल देल। बी० डी० ओ० के बुझाइल कि लोग अपना अपना घरे हथियार खातिर गइल बा। ऊ जमादार के कान में कुछ कहले आ सब केहू के इसारा करत जीप में बइठ रहले। जमादार सिपाही, चौकिदार के मदद करत से लाश उठा के जीप में धइले।

गाँव के लोग दुबारा आइल तब देखल कि जीप गाँव से बहरी निकल गइल। लोग एक-दोसरा के देखल आ जीप के पाछा लाग गइल।

लहार : बक्सर
१९६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.